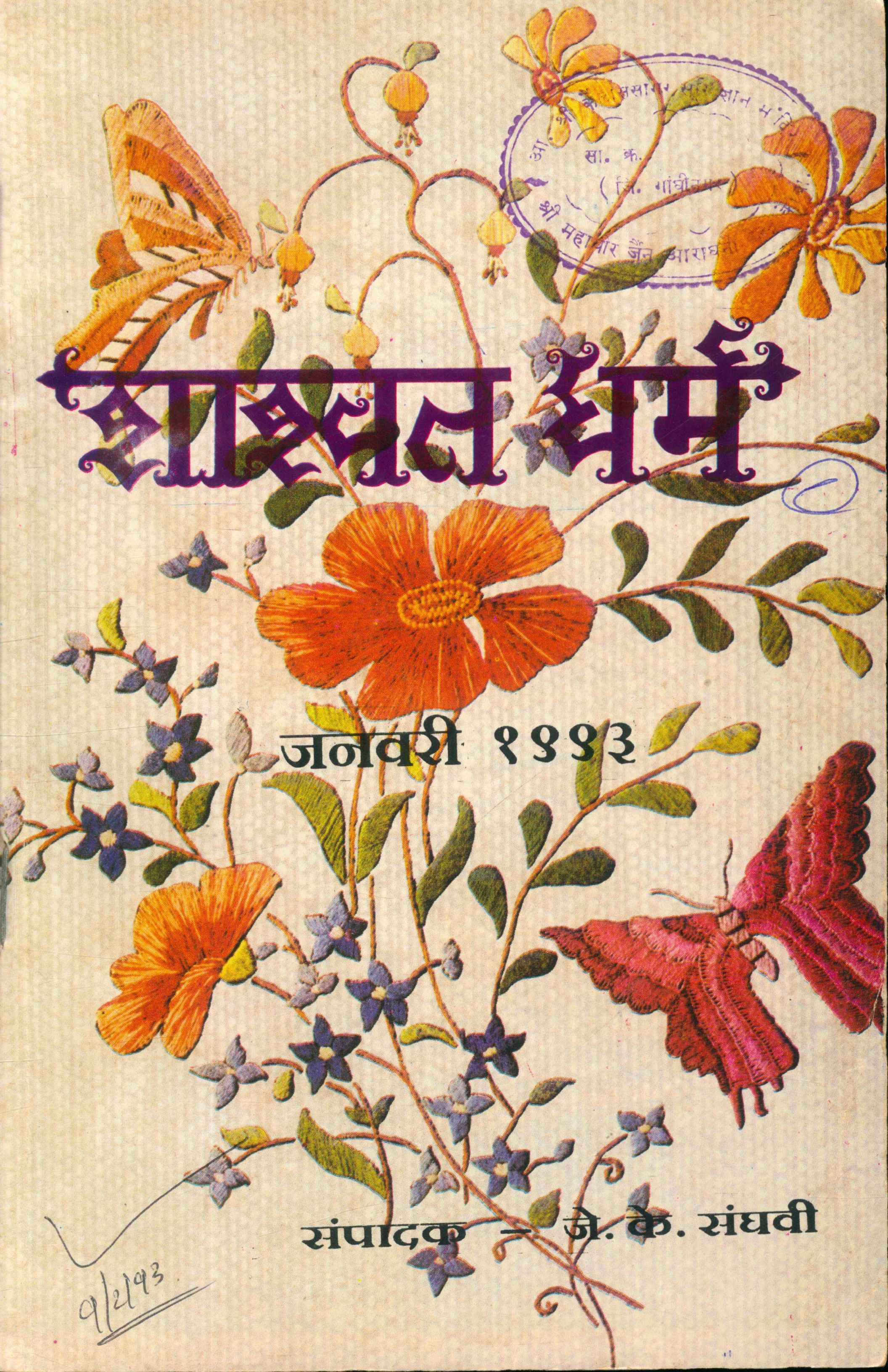

शाश्वत धर्म

जनवरी १९९३

संपादक - जे. के. संघवी

श्री महावीर जैन आराधना

- शाश्वत धर्म के संरक्षक -

* शा. ओटमल वेलाजी कांकरिया - सुरा निवासी , * शा. ताराचंद फुटरमल फौजमल, भानाजी वेदमुथा-आहोर निवासी, * कटारिया संघवी भंवरलाल, उगम-चंद, विरेन्द्रकुमार राजेन्द्रकुमार बेटा पोता तोलाजी धाणसा निवासी, * शा. तिलोकचंद, नरसींगमल, पुखराज, परखचंद, सांवलचंद, बेटा पोता प्रतापचंदजी - सरत निवासी, * संघवी मिश्रीमल, हस्तीमल, समरथमल, हिरालाल शांतिलाल जिनेशकुमार, बेटा पोता कन्नाजी कटारिया-जाखल निवासी. * नैनावा श्री जैन श्वेतांबर सकल संघ, गुरूभक्तगण-नैनावा, * श्री समकित गच्छीय जैन श्वेतांबर संघ-धानेरा, स्व. मयाचंद धुलाजी की स्मृति में धर्मपत्नी धापुबाई, सुपूत्र कुशलराज, भ्राता निहालचंद एवं श्रीमती जडावबेन कातरेला वोहरा आहोर निवासी, * मेहता तेजराज, जयंतीलाल, राजेन्द्रकुमार, अरविंदकुमार; बेटा पोता रायचंदजी जसराजजी भूती निवासी, * मोरखीया चंदुलाल, बाबुलाल, रसिकलाल मेहशकुमार, परेशकुमार, अल्पेशकुमार, रुपेशकुमार, पुत्रपौत्र स्व. मोरखीया नान-चंद मूलचंद भाई-थराद निवासी, * स्व. मुणोत रिखबचंदजी की स्मृति में धर्मपत्नी ठेलीबाई सुपुत्र बाबुलाल, सुमेरमल, अशोककुमार - रमणिया निवासी,

* श्री राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट - मद्रास, * स्व. रामाणी शेषमलजी की स्मृति में मांगीलाल, फुटरमल, शांतीलाल, किशोरकुमार, बेटा पोता खुशालजी रामाणी-गुडा बालोतान (फर्म. शांतिलाल ज्वेलर्स, नेल्लोर) * शा. मोहनलाल, पारसमल, सुरेशकुमार, किशोरकुमार, कमलेशकुमार, अरविंदकुमार, बेटा पोता सांकलचंद जेरूपजी - भेंसवाड़ा निवासी (गोल्डन ज्वेलरी, नेल्लोर), * स्व. सुगीबाई धर्मपत्नी अचलजी की स्मृर्ति में पुत्र कांतिलाल प्रपौत्र रमेशकुमार बागरा निवासी, * श्री श्वेताम्बर जैन संघ - सियाणा, * श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ - थराद * श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ - चौराऊ, * दोशी सोमतमल, गुमानमल, सुखराज सांवलजी ह. गुमानमल सावलचंदजी चेरिटेबल ट्रस्ट, बम्बई , सुशीला बहन की स्मृति में भीमराज, हिमांशकुमार, श्रेणिककुमार बेटापोता बेचरदासजी छाजेड़ - नैनावा निवासी हाल मु. सांचोर (राज), * श्री गोड़ी पार्श्वनाथ जैन देरासर पेढी - सोनारी सेरी - थराद, प्रतिष्ठा प्रसंगे गुरूभक्तों द्वारा. * स्व. जेठमलजी खुमाजी की स्मृति में चंदनमल, कैलाशचन्द, हंसराज, शीतलकुमार, अश्विनकुमार परि-वार बागरा निवासी, फर्म : राजस्थान फायनेन्स कार्पोरेशन - काकीनाडा, *

* श्री विमलनाथ जैन डोसी देहरासर - थराद * श्री सौधर्म वृहत्पोगच्छ जैन संघ - आणंद (गुजरात)
* श्री जैन श्वे. त्रिस्तुतिक श्री संघ - थलवाड़ (राज.) * श्री वृहत्पोगच्छीय जैन संघ - जावरा (म. प्र.)

1302

शाश्वत धर्म

धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रवर्तक हिन्दी मासिक

संस्थापक व्या. वा. आचार्यदेवश्री यतीन्द्रसूरीश्वरजी

सम्पादक : जे. के. संघवी

सहसम्पादक : शांतिलाल सुराना

सदस्यता शुल्क
बीस वर्षीय-पांचसौ रुपये
दस वर्षीय-तीन सौ रुपये
तीन वर्षीय- एक सौ रुपये

विज्ञापन शुल्क (एक बार)
पूरा पृष्ठ - पांच सौ रुपये
आधा पृष्ठ - तीन सौ रुपये
पाव पृष्ठ - दो सौ रुपये
अंतिम कवर पृष्ठ - एक हजार रुपये
कवर पृष्ठ २ या ३ - सात सौ रुपये

सम्पर्क सूत्र
कार्यालय © ५३४ ०७ २४ निवास © ५३४ ८० ७३
शाश्वत धर्म कार्यालय
डेवलेपमेन्ट बैंक के पास, जामली नाका-थाने-४०० ६०१ (महाराष्ट्र)

वर्ष : ४० ★ अंक ८ ★ जनवरी १९९३

अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद द्वारा संचालित

अवैतनिक सम्पादन : अव्यवसायिक प्रकाशन

शाश्वत धर्म – जनवरी १९९३

झरोखा

- सम्पादकीय .... जे. के. संघवी ३
- अनेकान्त..............आचार्य श्रीमद् विजयजयंतसेनसूरिजी म. सा. ५
- संयम में पुरूषार्थ ....आचार्य श्री विजयवल्लभसूरि म. सा. ९
- श्री नमिनाथ जिनस्तवन (२१) ...... मुनि श्री जयानंदविजयजी म.सा. १५
- पावन चरणों में शत् शत् वन्दन .... कु. रेखा जैन १८
- मेरे मधुकर .... श्री पुखराज जैन 'अशान्त' १८
- आचार्यपद की ९ वीं वर्षगांठ के अवसर पर विशेष . श्री नरेन्द्र धारीवाल ३४
- युवा संदेश .... मुनि श्री रत्नसेन विजयजी म.सा. ३७
- समाचार दर्शन .... संकलित ३९
- परिषद के प्रांगण से.............................. श्री सुरेन्द्र लोढा ४९
- चित्रावली ५५

स्थाई स्तम्भ

- ज्ञान कसौटी (२१) .... श्री महेन्द्र जे. संघवी १७
- क्या आप जानते हैं ? .... धर्ममित्र १९
- सरे राह चलते चलते.. प्रवासी २१
- रूकिये ! पढ़िये !! सोचिये !!! .... मुसाफिर २३
- स्वास्थ्य चर्चा – सावधान........................ श्री निरंकार सिंह २५
- सत्यकथा – भामती की निष्काम सेवा . मुनि श्री मोहनलालजी 'शार्दुल' २८
- शब्दसागर ईनामी स्पर्धा (१५) .... श्री प्रदीप एम. जैन २९

गुजराती विभाग

- वर्षना अगियार कर्तव्यो .... पन्यास श्री प्रभाकर विजयजी म.सा ५८
- स्वास्थ्य अने आध्यात्मिक दृष्टिए रात्री भोजन .... श्री रोहित शाह ६१
- जाते ज वनस्पति युक्त सौन्दर्य-प्रसाधनो बनावो .... संकलित ६३

लेखक के विचारों से सम्पादक अथवा परिषद की सहमति आवश्यक नहीं है।

Typesetting By :

Chaitanya Typesetting,

B-2, Sagar Apartments, Brahmin Society, Naupada Thane.

सम्पादकीय

एक विरल आध्यात्मिक घटना : महाविदेह तीर्थधाम

तीस नवम्बर उन्नीससौ बयानवे को भारत के इतिहास में एक विरल आध्यात्मिक घटना घटित हुई। राष्ट्रीय महामार्ग नं. ८ पर सुरत से १६ कि. मी. दूर कामरेज चार रास्ता के पास नवागाम के भूतल पर अतिभव्य-त्रि-मंदिर संकुल महाविदेह तीर्थधाम की प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। मध्य में विशाल, भव्य एवं नयनरम्य 'श्री सीमंधरस्वामी का जिनालय, दाहिनी ओर श्री कृष्ण का मंदिर एवं बायीं ओर श्री शिव मंदिर। तीनों मंदिर अलग होने के बावजूद एक दूसरे से जुडे हुए। ज्योतिष्क देवों के विमान आकार का समायोजित एवं करोड़ों की लागत से बने त्रि-मंदिर आदि की यह भी विशेषता है कि अनामी उपासकों ने इसमें अर्थ-सहयोग दिया। हजार, लाख या करोड़ लगाकर भी किसी प्रकार के नाम या तकती की लालसा नहीं।

आज श्वेताम्बर, दिगम्बर तोरापंथ या स्थानकवासी परम्पराओं में भिन्नता के कारण कई बार (एक बात को पकड़कर उलझ जाते हैं। या विविध गच्छों की क्रिया प्रणाली को लेकर वाद का विषय बनाते हैं। जो आगे चलकर मनभेद में बदल जाता है। मैं कहूँ वही सच्चा, इस बात को बनवाने के लिये व्यक्ति नाना प्रकार की उलझनों में पड़ता है और आराधना का मार्ग पिछे छूट जाता है। भगवान महावीर ने हमें अनेकान्तवाद की राह बताई। किसी भी वस्तु या घटना को एक दृष्टिकोण से न देखकर अलग-अलग पहलूओं से देखने पर ही सत्य को पाया जा सकता है।

आज से एक वर्ष पूर्व आचार्य श्री जयन्तसेनसूरिजी जावरा में विराजमान थे। मैं प्रातः उठकर दर्शनार्थ गया, तभी आचार्यश्री ने कहा कि आज मैंने स्वप्न में देखा कि एक विशाल मंदिर के चारों ओर लोगों का जमघट लगा है और जय-जयकार के नारों से वातावरण गुंज रहा है। मंदिर में अनुपम विशाल जिनबिम्ब की मैंने अंजनशलाका व प्रतिष्ठा करवायी। इतने में मेरी आंख खुल गई। विचार कर रहा हूँ कि निकट भविष्य में ऐसे विशाल मंदिर निर्माण का कोई कार्यक्रम मेरे ध्यान में नहीं है, नही स्वप्न में आये उस नगर या मंदिर का नाम मुझे याद है। पूज्य श्री को मैंने अपनी अल्पबुद्धि से कहा कि इसमें दो मत नहीं कि स्वप्न शुभ सूचक है। एवं अंतिम प्रहर में देखा गया यह स्वप्न जल्दी ही फलदायक होगा।

स्वप्न साकार हुआ। पूज्य श्री चातुर्मासार्थ सूरत नगर की ओर विहार कर रहे थे। रास्ते में त्रिशिखरी विशाल मंदिर देखकर पूज्य श्री रूके ही थे कि दूर से पुजारी दौड़कर आया एवं आचार्य श्री को वहाँ पधारने एवं ठहरने के लिये विनंती करने लगा।

अगले मुकाम पर रूकने का कार्यक्रम होने के बावजूद आचार्यश्री वहाँ ठहरे। उसी दिन श्री प्रकाशभाई शाह आदि वहाँ के ट्रस्टियों से पूज्यश्री के साथ आध्यात्मिक चर्चायें हुयी। सारी चर्चाओं के बाद वहाँ उपस्थित ट्रस्टियों ने दूसरे ट्रस्टियों से फोन द्वारा विचार-विमर्श कर पूज्य श्री से यहाँ प्रतिष्ठोत्सव में निश्रा प्रदान करने हेतु विनंती की। किन्तु चातुर्मास के तुरंत बाद विहार का कार्यक्रम होने से प्रतिष्ठा की संभावना से पूज्यश्री ने इंकार कर दिया। इस बीच सुरत चातुर्मास दरम्यान ५-७ बार सारा ट्रस्ट मंडल विनंती करने आया जैसे-जैसे पूज्यश्री से उनका सम्पर्क बढ़ा, वैसे-वैसे उनके प्रति श्रद्धा भाव बढ़ते गये। आखिर स्वप्न फल सिद्ध हुआ। योगानुयोग अनेकांत वाद के साक्षात् स्वरूप इस महाविदेह तीर्थधाम की प्रतिष्ठा पूज्यश्री की निश्रा में सम्पन्न हुयी। पूज्य राष्ट्रसंत जैनाचार्य की निश्रा में यह सर्वधर्म समभाव स्वरूप आध्यात्मिक विरल घटना घटित हुई।

J. K. Sanghvi

(जे. के. संघवी)

"तब तुम क्या करोगे?"

हे मांसाहारियों!
अब तक तो खाया
तुमने भरपेट,
पशुओं का मांस
मछली और अण्डा
जब कुछ काल पश्चात
नहीं मिलेगा,
पशुओं का मांस
मछली और अण्डा।
तब तुम
मनुष्यों का माँस भी
छोड़ोगे या नहीं!!

- मंगल जैन 'कुन्दन'

"क्यों खाते हो?"

क्यों खाते हो,
गाय का मांस प्रतिदिन।
क्यों कटवाते हो,
हजारों गायें प्रतिदिन॥
क्या अनाज की यहाँ,
इतनी कमी हो गई।
जो धर्म-परायण जनता,
माँस खाने लग गई॥
अरे! गाय तो माता हैं।
माँ का माँस,
कैसे तुम्हें भाता है।
गौ माँ के दूध का,
कर्ज उतारो
शाकाहारी बनकर अपना,
फर्ज निभाओ!!

- मंगल जैन 'कुन्दन'

हमारे नये संरक्षक → • श्री सौधर्म बृहत्पागच्छ जैन संघ - वासणा (गुजरात)
• श्री महाविदेह तीर्थ धाम - नवागाम (सुरत)

➧ गतांक से आगे

अनेकान्त

आचार्य श्री जयंतसेनसूरीश्वरजी

इस अनेकान्त वादी मेंढक की बात अन्य एकान्तवादी मेंढक सहन नहीं कर सके । उन्हें उस पर गुस्सा आ गया और उन चारों ने मिल कर उस पाँचवें मेंढक को धक्के मार कर पानी में गिरा दिया । एकान्त वादियों के स्वमत मोह का, दुराग्रह का और कट्टरपन का दुष्परिणाम उस बेचारे समझदार सत्यवादी को भोगना पड़ा ।

अज्ञानियों के कारण अनेकान्तवादी ज्ञानी को बहुत दुःख सहन करना पड़ता है; फिर भी अनेकान्तवादी लोग अपने प्राणों की परवाह नहीं करते । वे सत्य को प्रकाशित करते ही रहते हैं । जिनके पास तर्क नहीं होता, वे ही तलवार उठाते हैं । एक आदमी ने अपने तर्क के बल पर एक बादशाह को भी उलझन में डाल दिया था । घटना इस प्रकार हैं –

एक बादशाह था । वह सत्यप्रेमी था । असत्य से उसे घृणा थी । अपने राज्य में उसने यह घोषणा करवा दी थी कि जो भी असत्य बोलेगा, उसे तत्काल सूली पर चढा दिया जायेगा ।

राजधानी में एक चतुर मनुष्य रहता था । बादशाह की घोषणा को अपने लिए चुनौती मानकर वह राज दरबार में गया । उसने बादशाह से कहा – "हजूर ! मैं कल आकर आपके सामने ही असत्य बोलूँगा; फिर भी आप मुझे सूली पर नहीं चढा सकेंगे ।"

दूसरे दिन वह बादशाह से मिलने के लिए पहुँचा । द्वारपाल ने उसे टोका; तब कहा – "बादशाह ने मुझे सूली पर चढाने के लिए बुलवाया है; इसलिए मैं उनसे मिलना चाहता हूँ ।"

द्वारपाल ने उसका सन्देश बादशाह के पास पहुँचा दिया । सन्देश सुनकर बादशाह ने उसे अपने पास बुलवा तो लिया; पर वे उसे सूली पर नहीं चढ़वा सके । कारण क्या था ?

द्वारपाल से उसने कहा था कि मुझे सूली पर चढ़ाने के लिए बुलवाया गया हैं – यह बात असत्य थी; इसलिए घोषणा के अनुसार उसे सूली पर चढ़ाया जा सकता था; पर कल उसने कहा था कि मैं असत्य बोलूँगा । इसलिए उसका कथन सत्य था । तब सत्यवादी को सूली पर कैसे चढ़ाया जाय ? यह उलझन खड़ी हो गयी । इस प्रकार असमंजस में पड़े बादशाह को आखिर हार माननी पड़ी । चतुर मनुष्य अपनी तार्किकता के कारण विजयी हुआ ।

मुल्ला नसरुद्दीन के दो पत्नियाँ थी । प्रत्येक से एकान्त में वे कहा करते थे – "तुम उससे अधिक सुन्दर लगती हो ।"

औरतों के पेट में बात कहाँ टिकती है । एक ने दूसरी से कह दिया कि मुल्लाजी मुझे तुम से अधिक सुन्दर बताते हैं । यह सुनकर दूसरी ने कहा कि यही बात वे मुझसे भी कहते रहते हैं । तब पहली ने कहा – "इसका मतलब यह है कि वे हम दोनों को बेवकूफ बनाते हैं । आज खबर लेती हैं हम, आने दो घर पर उन्हें ।"

शाम को जब मुल्लाजी घर पर लौटे, तो दोनों बीवियाँ उन्हें पकड़ कर बैठ गयीं और पूछने लगी – "अब सच-सच बताइये, हम दोनों में से कौन है, जो आपको अधिक सुन्दर लगती है ?"

मुस्कराते हुए मुल्लाजी बोले – "बस, इतनी सी बात ! अच्छा, सुनना ही चाहती हो तो सुनो । मुझे तुम दोनों एक दूसरी से अधिक सुन्दर लगती हो ।"

इस अनेकान्तवादी उत्तर से दोनों बीबियाँ पूरी तरह सन्तुष्ट हो गयीं ।

बादशाह अकबर आचार्य श्री हीरविजयसूरिजी महाराज से बहुत प्रभावित था । वह उन्हें बहुत मानता था । एक बार उसने सूरिजी से पूछा – "महाराज ! आप लोग माला गिनते समय मनके अपनी ओर घुमाते हैं और हम लोग बाहर की ओर । माला फेरने की कौन-सी पद्धति ठीक है ?

सूरिजी बोले – अकबर ! माला फेरने की दोनों पद्धतियाँ ठीक हैं । माला का मनका अपनी ओर घुमाने का मतलब है – बाहर से एक-एक गुण को क्रमशः भीतर लाने का संकल्प और बाहर की तरफ मनका घुमाने का मतलब है – एक-एक दोष को भीतर से बाहर निकालने का संकल्प । ये दोनों ही संकल्प अच्छे हैं, उपादेय हैं ।

यह अनेकान्तवादी समन्वयात्मक उत्तर सुनकर अकबर सूरिजी के प्रति श्रद्धावान हो गया ।

उपाध्यायजी समयसुंदरजी महाराज बड़े विद्वान थे । एक बार राजसभा में उन्होंने निवेदन किया कि एक शब्द के अनेक अर्थ होते है; इसलिए संदर्भ के अनुसार शब्द का अर्थ लगाना चाहिये । किसी एक ही अर्थ का आग्रह एकान्तवाद है और एकान्तवाद संघर्ष का जनक है । यदि हम निष्पक्ष दृष्टि से विचार करें तो दूसरों के द्वारा किये गये अर्थ भी हमें ठीक लगने लगते हैं । उस समय संघर्ष की जड़ ही उखड़ जाती है ।

यह सुनकर किसी द्वेषी पंडित ने इसका प्रतिवाद करते हुए संस्कृत का एक वाक्य सुनाया और उपाध्यायजी महाराज से कहा कि आप इसके अनेक अर्थ कर दिखाइये । वाक्य था – 'राजानो ददते सौख्यम् ।'

उपाध्यायजी ने उसकी चुनौती स्वीकार की और अपनी प्रतिभा शक्ति से उस वाक्य के सवा लाख अर्थ कर दिखाये । उपाध्यायजी की प्रतिभा ने सब श्रोताओं को चकित और मंत्र-मुग्ध कर दिया । अनेकार्थ रत्न मंजुषा नामक ग्रन्थ में वे सवा लाख भिन्न-भिन्न अर्थ आज भी उपलब्ध हैं ।

ऐसे प्रतिभाशाली विद्वान ही अनेकान्तरूपी रत्न के प्रकाश से मतभेदों का अंधकार मिटा सकते हैं । अन्य प्रभावित सब दर्शन अनेकान्त रूपी बाड़े के पशु हैं । आचार्य श्री हेमचन्द्रसूरिजी महाराज के जीवन की एक चिरस्मरणीय घटना से यह बात सिद्ध हो जाती है । घटना इस प्रकार है –

गुजरात के महाराज सिद्धराज की सभा में एक बार आचार्यश्री का आगमन हुआ । उनके हाथ में दंड था और कान्धे पर कंबल ।

दूर से उन्हें आते देख कर एक अजैन पंडित ने उनकी हँसी उड़ाते हुए कहा –

आगतो हेम गोपालो, दण्ड कम्बल मुद्वहन ।

इसका अर्थ है– दंड और कंबल धारण करनेवाला हेम नामक गोपाल (ग्वाला) आ गया है ।

यह सुनते ही आचार्यश्री ने तुरन्त इस श्लोक की अगली पंक्ति अपनी ओर से बना कर इस प्रकार स्तुति की –

षड्दर्शन पशुप्रायांश्चारयन् जैन वाटके ।।

इसका अर्थ है – छह दर्शनरूपी पशुओं को जैन सिद्धान्त रूपी बाडे में चराता हुआ (दण्ड और कंबल धारण करनेवाला यह हेम गोपाल आ गया है) ।

इस उत्तर से विपक्षी पंडित निरुत्तर हो गया ।

एक द्वेषी पंडित अपने एक मित्र के साथ कहीं जा रहा था । सामने से एक जैन मुनि आ रहे थे । मुनि के नजदिक आते ही उस पंडित ने अपने मित्र से कहा – "जो इन साधुओं के दर्शन करता है वह सीधा नरक में जाता है ।"

मुनि ने यह सुना पर वे जरा भी विचलित नहीं हुए । उन्होंने उस पंडित से पूछा - "आपकी बात तो सही है; पर जो आपके दर्शन करता है, वह कहाँ जाता है ?"

"सीधा स्वर्ग में" पंडित ने उत्तर दिया ?

इस पर मुनि ने कहा – "आपकी बात बिल्कुल सही है । इस समय मैं आपके दर्शन कर रहा हूँ; इसलिए मुझे स्वर्ग मिलना चाहिए और मेरे दर्शन से आपको क्या मिलेगा ? आप स्वयं सोच ले और यदि आपने गलत कहा हो, तो अपनी मान्यता सुधार ले ।"

इस उत्तर से लज्जित होकर उसने अपने शब्द वापस ले लिये ।

एक बार एक द्वेषी पंडित ने अपने शिष्यों से कहा – "ये जैन मुनि कितने गन्दे रहते हैं । कभी नहाते नहीं । इनसे तो सदा दूर ही रहना चाहिये ।

किसी जैन मुनि ने यह सुना । वे उसके पास पहुँचे और बोले – "महानुभाव ! गाय कभी नहाती नहीं है और भैंस सदा पानी में ही पड़ी रहती है । बताइये, इन दोनों में पवित्र कौन है ? आप किसे पूज्य मानते हैं ? वास्तव में संगति करने योग्य वे होते हैं; जिनका मन और जीवन पवित्र होता है । तन की पवित्रता से संगति का कोई संबन्ध नहीं है । मन चंगा तो कठौती में गंगा ।"

बेचारा वह पंडित अब क्या जवाब दे !

जैसे एक शब्द के अनेक अर्थ होते हैं, वैसे ही अनेक शब्दों का भी एक अर्थ हो सकता है और जब तक उस अर्थ का ज्ञान न हो जाये, तब तक मतभेद बना रहता है ।

एक बार रेल के एक डिब्बे में चार यात्री पास-पास बैठे थे । वे एक साथ सफर कर रहे थे । उनमें से एक अरबी था, दूसरा तुर्की था, तीसरा अंग्रेज और चौथा भारतीय था । चर्चा चली कि कौनसा फल सबसे बढ़िया होता है ?

अरबी बोला "एनब सबसे बढिया है । वह बड़ा स्वादिष्ट होता है ।"

तुर्की बोला – "नहीं, नहीं, उत्तम जैसा कोई फल नहीं है । उसका मुकाबला कोई नहीं कर सकता ।"

अंग्रेज बोला - "एनब और उजम तो मैंने देखे नहीं; पर ग्रेप्स जरूर देखे हैं । वे सबसे बढ़िया और स्वादिष्ट होते हैं ।"

अन्त में भारतीय बोला – "पता नहीं आप लोग किन-किन फलों का नाम ले रहे हैं । सच

तो यह है कि अंगूर सा कोई फल नहीं है। अंगूर सर्वोत्तम होते हैं।''

इतने में स्टेशन आ गया। गाड़ी रुकी और एक खोमचेवाले से सबने एक जैसे ही फल खरीद कर खाये और तब पता एनब, उजम, ग्रेप्स और अंगूर एक ही फल के अलग-अलग नाम हैं। और हम सब एक ही फल के विषय में अलग-अलग शब्दों से बोल रहे थे।

आधी रात का समय था। अचानक कुत्ते भौंकने लगे। एक भाई की नींद खुल गयी। कुत्ते भौंकते रहे। उसकी नींद हराम हो गयी। बड़ा दुखी हुआ वह। प्रातः उसीने जब यह सुना कि कुत्तों के भौंकने से चोर भाग गये थे; तब वह सुख का अनुभव करने लगा।

स्वार्थ की कसौटी पर ही हम किसी को अच्छा या बुरा कहते हैं। यही एकान्तवाद है। द्रष्टि बदलने पर अच्छी चीज भी बुरी और बुरी चीज भी अच्छी लगने लगती है। अप्रिय निर्दोष सदोष होता है और प्रिय सदोष निर्दोष।

लंबे अरसे के बाद दो मित्र आपस में मिले। आपस में चर्चा चली –

''आओ, आओ मित्र ! बहुत दिनों बाद मिले। कहो, कुशल मंगल तो है ?''

''हमारे यहाँ तो सब आनन्द और स्वस्थ हैं। तुम अपने हाल चाल बताओ।''

''अपने हाल क्या बताऊँ भाई ! तुम्हारे चले जाने के बाद इधर मेरी शादी हो गयी।''

''यह तो अच्छा ही हुआ। तुम्हारा घर बस गया।''

''अच्छा क्या हुआ ? पत्नी कर्कशा निकली। बात-बात पर वह गुस्सा करती और झगड़ती रहती। और कुछ न सूझता तो वह मुँह फुलाये बैठी रहती।''

''अरे रे। यह तो बुरा हुआ।''

''बुरा क्या हुआ ? दहेज में वह अपने साथ बहुत-सा धन ले कर आई।''

''हाँ, यह तो ठीक ही हुआ।''

''ठीक क्या हुआ ? वह इतनी कंजूस निकली कि अपने स्त्री धन में से एक पैसा भी खर्च करने को तैयार नहीं होती थी।''

यह जरूर बुरा हुआ।''

बुरा क्या हुआ ? उसे समझा बुझा कर उसका सब धन मैंने सुन्दर भवन के निर्माण में लगवा दिया।''

''चलो, अच्छा ही हुआ। रहने के लिए घर का मकान तो हो गया ''

''अरे ! अच्छा क्या हुआ ? आग लगने से वह सारा भवन जल कर खाक हो गया।''

''हे भगवान ! यह तो बहुत बुरा हुआ।''

''बुरा क्या हुआ ? मैंने घर का बीमा करवा रखा था। इसलिए बीमा कंपनी से सारा धन वसूल कर लिया।''

''यह अच्छा हुआ । अपना धन वापस मिल गया .''

''अरे क्या खाक अच्छा हुआ ? मेरी पत्नी उसी में बैठी थी, सो भवन के साथ ही जल कर भस्म हो गयी।''

❑ **शेष अगले अंक में**

संयम में पुरुषार्थ

आचार्य श्री विजयवल्लभ सूरि

भगवान महावीर के द्वारा बताई गई चौथी दुर्लभ वस्तु पर कुछ कहना है। वह दुर्लभ वस्तु है-संयम में पुरुषार्थ। उन्होंने अपने अनुभव रस से परिपूर्ण वाणी में कहा-

सुई व लद्धं सद्धं च वीरियं पुण दुल्लहं।
बहवे रोयमाणा वि णो य णं पडिवज्जइ।।

-उत्तराध्ययन अ.३गा. १०

"कदाचित धर्म श्रवण प्राप्त करके व्यक्ति श्रद्धा भी करले , लेकिन सयंम में शक्ति लगाना तो बड़ा दुर्लभ है। क्योंकि बहुत से व्यक्ति किसी श्रेयस्कर सवस्तु पर रुचि कर लेते है, लेकिन उसे जीवन में उतारना स्वीकार नहीं करते।"

सयंम में पराक्रम दुर्लभ क्यों ?

प्रश्न होता है, जब व्यक्ति किसी चीज को सुनकर, जानकर, महत्व समझ कर उस पर श्रद्धा कर लेता है, तब भी उसका आचरण उसके लिए दुर्लभ क्यों हो जाता है? श्रद्धा और आचरण के बीच खाई क्यों पड़ जाती है? जहां तक हमारा व्यवहारिक अनुभव है, इस तीनों में धर्म श्रवण करने वाले सबसे ज्यादा मिलेंगे, उससे कम दृढ़ श्रद्धा वाले मिलेंगे तथा उससे कम मिलेंगे धर्माचरण करनेवाले । कहा भी है—

परोपदेश पाडित्यं, सर्वेषा सुकरं नृणाम्।
धर्मे स्वीयमनुष्ठानं कस्यचित् महात्मनः ।।

"दूसरों को उपदेश देने में पाण्डित्य दिखाना सबके लिए सुलभ है। लेकिन धर्म में अपनी सर्वस्व शक्ति लगा देने वाले विरले ही महान् आत्मा होते है।"

संयम में पुरुषार्थ की दुर्लभता के कारण :

जिन कारणों को लेकर मनुष्य संयम में पुरुषार्थ नहीं कर पाता, उनमें मुख्य कारण ये प्रतीत होते हैं— (१) भोग का बोलबाला, (२)धन की अधिकता, (३) सत्ता की प्राप्ति, (४)इन्द्रिय विषयों की रमणीयता, (५) कषायों और वासनाओं में शीघ्र प्रवृत्ति, (६)पुनर्जन्म, परलोक आदि पर अविश्वास, (७)सुसंस्कारों का अभाव, (८) सतत, दीर्घकाल तक टिके रहने में अधीरता।

आज संसार के सभी राष्ट्रों में अधिकांश लोगों की रुचि सांसारिक पदार्थों के अधिकाधिक उपभोग की ओर है। जहां देखो वहीं भोग विलास के आकर्षक साधन बढ़ रहे हैं। ऐसी दशा में अपने मन और इन्द्रियों पर संयम रखना कितना कठिन है! प्रत्येक इन्द्रिय की तृप्ति के लिए विलासिता के साधन दिनोंदिन बढ़ते जा रहे हैं। आखों की तृप्ति के लिए अश्लील और विकारवर्द्धक सिनेमा और नाटकों के दृश्य, नग्न नृत्य, सुन्दरियों के अर्धनग्न चित्र, कमोत्तेजक वातावरण का दर्शन असंयम को ही बढ़ावा देता है। कानों की तृप्ति के लिए सुरीले मादक गीत, रेडियो, ग्रामोफोन एवं सिनेमा घरों के अश्लील गाने सारे वातावरण को विलासमय एवं असंयमी बना देते है। नाक की तृप्ति के लिए मोहक सुगन्धित पदार्थ वातावरण को मादक बनाने के लिए काफी है। जीभ को संतुष्ट करने के लिए एक

से एक बढ़कर स्वादिष्ट, चटपटी, मीठी और मसालेदार वस्तुएं सामने हों तो जीभ पर संयम कैसे रखा जा सकता है? और स्पर्शेन्द्रिय की तृप्ति के लिए कोमल गुद्‌गुदाने वाली शय्या, चमकीले - भड़किले मुलायम वस्त्र, स्नो, पाउडर, लवेंडर एवं त्वचा को कोमल सुन्दर, व लचीली बनाने के लिए प्रसाधन की सामग्री आदि धड़ल्ले के साथ बढ़ती जा रही है। मन को कामोत्तेजना से भर देने के लिए अश्लील साहित्य तथा दृश्य आदि का प्रचुर मात्रा में स्वागत किया जा रहा है और ऐसी दशा में जहां भोगविलास का ही बोलबाला हो वहां त्याग और सयंम की ओर झुकना कितना कठिन है, यह हम अंदाजा लगा सकते है। यही कारण है कि सयंम में पुरुषार्थ की दुर्लभता का प्रथम कारण भोगविलास के साधनों का प्रचुर मात्रा में बढ़ना है।

संयम में पुरुषार्थ की दुर्लभता का दूसरा कारण है-धन की अधिकता। जहां धन अधिक होने लगता है, वहां विलासिता और रागरंग ही सूझता है। सयंम के तंग ढ़ीले पड़ने लगते है। धन का नशा ही ऐसा है कि मनुष्य उसके नशे में पागल होकर अपने हिताहित, संयम-असंयम, हानि-लाभ के बारे में नहीं सोच पाता। संयम की बात उसे चुभती है। वह चाहता है कि कोई भी मुझे अपने मन और इन्द्रियों पर अंकुश रखने की बात न कहे। वास्तव में धन के साथ यदि विवेक बुद्धि न हो तो वह अर्थ अनर्थकर बंन जाता है। इसलिए धर्मराज युधि ष्ठिर भगवान् से यही प्रार्थना करते है।

धन में धर्मबुद्धिः स्यात्।

हे भगवान! धन प्राप्ति के साथ मेरी धर्मबुद्धि बनी रहे।

परन्तु आजकल प्रायः यही देखा जाता है कि जो व्यक्ति, परिवार, समाज या राष्ट्र अधिक धनिक हो जाता है, वह प्रायः विलासी अय्याश और शराबी-मांसाहारी बनने में देर नहीं लगाता। इसलिए नीतिकार कहते है—

यौवनं धनसम्पतिः पअभुत्वमविवेकिता।
एकैकमप्यनर्थाय किमु यत्र चतुष्टयम्।।

अर्थात् जवानी, धन की प्राप्ति, प्रभुता और अविवेक इन चारों में से हर एक अनर्थ करने वाली चीज है। यदि ये चारों इकट्ठी मिल जाय तो फिर कहना ही क्या है?

खासतौर से जवानी में संयम तभी रह सकता है जब तक धन प्रचुर मात्रा में न मिले। धन और सत्ता का जोड़ा है प्रायः सत्ता भी धन वाले के हाथ में जाती है और इन तीनों के साथ प्रायः अविवेक जुड़ ही जाता है जो सारे जीवन को असंयम में ले जाकर बर्बाद कर देता है। इसी कारण धन की अधिक मात्रा प्रायः मनुष्य को सयंम के पास फटकने नहीं देती।

सयंम में पुरुषार्थ की दुर्लभता का तीसरा कारण सत्ता की प्राप्ति है। मनुष्य जब सत्ता पा जाता है, तो प्रायः वह अपने मन, इन्द्रियों, वासना, क्रोध-अभिमान आदि कषायों पर सयंम नही रख पाता। वह या तो उच्छृखंल होकर दुराचार के मार्ग में प्रवृत्त हो जाता है या फिर वह सत्ता में मद मे आकर दुसरों पर अत्याचार व अन्याय करने लगता है, वह अपने होथों-पैरों, मन व इन्द्रियों पर संयम नहीं रख पाता। वह यही सोचने लगता है कि मैं जो कुछ करता हूँ, वह बिल्कुल उचित है-

प्रभुता पाय काहि मद नांही

इन्द्रिय विषयों की रमणीयता भी संयम में पराक्रम करने में दुर्लभता का चौथा कारण है पांचों इन्द्रियों के विषय जब अपना लुभावना रुप बनाकर मनुष्य के सामने आते हैं तो उनका मोहक रुप देखकर मनुष्य उनमें आसक्त हो जाता है, विषयों में बुरी तरह फंस जाता है। उन पर संयम रखना उसके लिए बड़ा कठिन हो जाता है।

संयम में पुरुषार्थ के दुर्लभ होने का पाचंवा कारण कषायों और वासनाओं में शीघ्र प्रवृत्त हो जाना भी है। प्राणियों का ऐसा स्वभाव बन जाता है या बन गया है कि वे कषायों और वासनाओं में तुरंत प्रवृत्त हो जाते है। एक तो बचपन से ही घर और समाज का वातावरण ही प्रायः असंयम का मिलता है फिर मनुष्य के सामने रात-दिन कषायों और वासनाओं की भट्टी में धधकने वाले व्यक्तियों की ही घटनाएं घटित होती हो, वहां जिन्दगी के प्रारंभ से आज तक असंयम से अभ्यस्त व्यक्ति एकाएक संयम के कठोर व कष्टप्रद मार्ग को कैसे स्वीकार कर सकता है? ऐसे असयंम के वातावरण में भी संयम के पुनीत मार्ग पर विरले ही टिके रह सकते है।

सयंम में पुरुषार्थ की दुर्लभता में छठा कारण पुनर्जन्म या परलोक में विश्वास न होना है। बहुत से लोग इस भौतिकवाद के जमाने में यह सोचने लगे हैं कि खाओ, पीओ और मज़ा उड़ाओ। न मालूम परलोक है या नहीं? किसने स्वर्ग नरक को देखा है? जो कुछ विषयों का उपभोग करना हो सो कर लो।

संयम में पुरुषार्थ की दुर्लभता में सातवां कारण संस्कारों का अभाव है। इसी कारण अच्छे कुल या उत्तम खानदान का बड़ा महत्व समझा जाता है और संबंध जोड़ते समय उत्तम खानदान और पवित्र कुल का विचार किया जाता है। क्योंकि उत्तम खानदान में सुन्दर संस्कार कूट-कूट कर भरे होते है। कितने ही भयों या प्रलोभनों के आने पर भी सुसंस्कार प्रेरित व्यक्ति कभी असंयम के रास्ते पर नहीं जाता परन्तु सुसंस्कार भी विरले लोगों को ही मिलते हैं।

संयम में पुरुषार्थ की दुर्लभता में आठवां कारण संयम मार्ग की मर्यादा पर सतत दीर्घकाल तक दृढ न रहना है। मनुष्य का सामान्यतया यह स्वभाव होता है कि वह एक ही चीज पर बहुत लम्बे समय तक टिका नहीं रहता उससे ऊब जाता है, या थक जाता है अथवा हताश हो जाता है जैसे भोजन में भी एक ही चीज आए तो आप उससे अरुचि करने लगते है, वैसे ही मनुष्य साधना में भी नये स्वाद को अपनाने के लिए लालायित रहता है। संयममार्ग वैसे तो नीरस नहीं है, परन्तु भौतिकता की चकाचौंध से मनुष्य उसे नीरस और रूखा समझने लगता है और यहां तक कहने लगता है कि अब कहां तक इस संयम की रट लगाते रहेंगे -इस कारण कई वर्ष तक मनुष्य संयममार्ग की मर्यादा पर चल कर फिर उसे छोड़ बैठता है। इसी कारण को लेकर सयंम में पुरुषार्थ पर टिके रहना बड़ा दुर्लभ बताया है। कोई भी साधना तब तक आनन्ददायक या सफल नहीं होती जब तक कि दिर्घकाल तक आदर और श्रद्धापूर्वक निरंतर उसका सेवन न किया जाय। योगदर्शन में महर्षि पतन्जलि ने कहा है—

स तु दीर्घतर-नैरन्तर्य-सत्कारासेवितो दृढभूमिः।

"चितवृतिनिरोधरुप योग तभी सुदृढ़ होता है, जबकि दीर्घकाल तक निरन्तर सत्कारपूर्वक उसका सेवन किया जाय।"

भाग्यशालियों! संयम में पुरुषार्थ की दुर्लभता के इन कारणों पर गहराई से विचार करें। संयम का जीवन में तो अनिवार्य स्थान और महत्व है, उसे समझकर आदरपूर्वक यदि उसे जीवन का अंग बना लेंगे तो आपके लिये संयम नीरस नहीं सरस बन जायगा, दुर्लभ नहीं सुलभ हो जायगा। सयंम जीवन के लिए अमृत है। असंयम नैतिक मृत्यु है। जिसकी आत्मा सहज संयम में स्थिर हो जाता है, उसके लिए संयम में पुरुषार्थ सरल हो जाता है। बल्कि सयंम में पुरुषार्थ को वह स्वाभाविक और असंयम में रमण को अस्वाभाविक समझने लगता है।

संयम में पुरुषार्थ का रहस्य

संयम में पुरुषार्थ का मतलब कोई यह न समझ ले कि सबको घर-बार धन- संपत्ति छोड़कर साधु बन जाना है। साधु जीवन की साधना तो उच्च संयम की साधना है ही, लेकिन गृहस्थ जीवन में भी संयम की आवश्यकता होती है।

संयम का अर्थ केवल ब्रह्मचर्य पालन कर लेना भी नहीं है। ब्रम्हचर्य, चाहे वह मर्यादित हो चाहे पूर्ण, संयम का प्रधान अंग जरूर है लेकिन इतने में ही संयम की इति , समाप्ति नहीं हो जाती। अतः चाहे वह ब्रह्मचारी हो गृहस्थ हों, वानप्रस्थ हो या सन्यासी , साधु हो, प्रत्येक अवस्था में संयम में पुरुषार्थ की जरूरत रहती है, फिर वह चाहे अपनी-अपनी भूमिका के अनुसार ही क्यों न हो। और सयंम का वास्तविक अर्थ यहां पांचों इन्द्रियों, मन वचन, काया, चार कषाय, हाथ-पैर तथा सांसारिक पदार्थों, यहां तक कि षट्र काया (सृष्टि के सभी प्राणियों) के प्रति संयम से है। स्वेच्छा से भली-भांति इन्द्रिय, मन आदि पर अंकुश रखना,नियंत्रण रखना संयम है।

श्रोतेन्द्रिय संयम का अर्थ यह नहीं है कि कानों से आप सुनें ही नहीं या कान की श्रवणशक्ति को खत्म कर दें। अपितु कानों के द्वारा गंदी, निन्दात्मक या अश्लील बात या गायन न सुनें ।अगर कभी कानों में पड़ भी जाय तो उस पर से आसक्ति या राग-द्वेष न लावें। फिल्मी गीत सुनने हों तो आपके कान सदैव तैयार रहें और आध्यात्मिक संगीत सुनने में अरूचि दिखाएं तो समझना चाहिए कि श्रोतेन्द्रिय संयम नहीं है।दूसरे की निन्दा की बातें या अपनी प्रशंसा की बाते सुनने के लिए आपके कान सदा तैयार रहें और अपनी निन्दा और दूसरों की तारीफ हो रही हो, वहां मन में द्वेषभाव भड़क उठे तो समझना चाहिए श्रोतेन्द्रिय संयम नहीं है।

चक्षुरन्द्रिय संयम का अर्थ है— आँखों से किसी वस्तु या व्यक्ति को देख कर राग या द्वेष की भावना न लावे। आखों पर संयम कैसे होता है, इसके लिए रामायण का एक भव्य उदाहरण लीजिये—

रामचन्द्रजी जब १४ वर्ष के लिए अयोध्या छोड़कर वनवास को गए तब सीताजी तो साथ में थी ही, लक्ष्मण भी साथ में थे। एक बार जब रावण मर्यादा का उल्लंघन करके पतिव्रता सती सीता को बलात् अपहरण करके ले जाने लगा तो सती सीता ने अत्याचारी

रावण के पंजे से छुटने का बहुतेरा उपाय किया। लेकिन जब वह इसमें सफल न हुई तो वह जिस रास्ते से विमान द्वारा ले जाई जा रही थी, उस रास्ते में एक-एक करके अपने गहने उतार कर डालती गई, ताकि भगवान राम उस पथ को जान सके। इधर जब राम और लक्ष्मण पंचवटी को लौटे और कुटिया को सूनी देखा तो सीता के विरह में राम व्याकुल हो उठे। अपने भाई लक्ष्मण को साथ लेकर वे सीता की खोज में चल पड़े। रास्ते में जब वे बिखरे हुए गहने मिले तो राम ने लक्ष्मण से कहा— "भाई मेरा मन इस समय सीता के वियोग में व्याकुल हो रहा है, दृष्टि पर अंधेरा छाया हुआ है, अत: मैं देखकर भी निर्णय नहीं कर पा रहा हूं कि आभूषण किसके हैं? अब तू ही भली भांति जांच-परख कर बता कि ये आभूषण तेरी भाभी के ही हैं या अन्य किसी के?" यह सुनकर लक्ष्मण ने जो कुछ कहा वह आंखो पर संयम का ज्वलन्त उदाहरण है—

केयूरे नैव जानामि, नैव जानामि कुण्डले।
नूपुरे त्वभिजानामि, नित्य पादाभिवन्दनात्॥

"हे भाई! मैं बाजूबन्दों को भी नहीं पहिचान सकता और न इन दोनों कुण्डलों को पहिचान सकता हूं। लेकिन मैं इन दोनों नूपुरों का तो जानता हूं, क्योंकि मैं भाभी के चरणों में प्रतिदिन वन्दन करने जाता था तो मेरी दृष्टि नूपुर पर तो सहज ही पड़ जाती थी।"

यह है नेत्र संयम का पाठ। आज लोगों का आंखों पर सयंम बहुत ही दुर्लभ हो रहा है। उसकी नजर चलते-चलते सिनेमा की सुन्दरियों के चित्रो पर दौड़ेगी। इतना ही नहीं सिनेमा की तारिकाओं को देखने के लिए भीड़ उमड़ेगी। पर सन्तों के दर्शन के लिए या भगवान के दर्शन के लिए? वहां तो समय के अभाव का बहाना बनाया जाएगा। भक्त तुकाराम ने आखों पर संयम के लिए भगवान से प्रार्थना की है—

पापाची वासना न को दाउ डोला।
त्यांहून आंधला बरा च मीं॥

अर्थात—"हे प्रभो! मुझ पर तेरी ऐसी कृपा हो कि मेरी आखों में पाप की वासना न आए। अगर इंतना न कर सका तो मेरा अन्धा बन जाना अच्छा है।"

रसनेन्द्रिय संयम का अर्थ है, अपनी जिह्वा पर नियंत्रण रखना। जीभ से दो काम होते है, बोलने का और चखने का। इन दोनों कामों में सावधानी बरती जाय। बोलने के समय ध्यान रखें कि "मैं जीभ से असत्य, कर्कश, कठोर हिंसाकारी, छेदभेदकारी, फूट डालने वाला मर्मस्पर्शी, पापवर्द्धक, कामोत्तेजक, अनर्गल वचन तो नहीं कह रहा हूं।" कई लोग वचन से दूसरों को गाली देकर निन्दा करके चुगली खा कर असंयम में प्रवृत्त होते है। वचन ही आपस में कलह और युद्ध करवाता है। अत: वचन पर काबू रखना बड़ा कठिन है। सम्प्रदायों, जातियों, समाजों, राष्ट्रों में अगर वचन का विवेक आ जाय तो आपस में लड़ना-भिड़ना बंद होकर राग-द्वेष शान्त हो जाय। परन्तु वचन पर असंयम तो आज धड़ल्ले से बढ़ता जा रहा है।

जीभ से दूसरा काम होता है चखने का, खाने का काम मुंह और दातों का है। जबान का काम केवल उसे चखना है कि वह खाना ठीक और पथ्य है या नहीं? लेकिन जबान इतनी चटोरी बन जाती है कि चखने का काम छोडकर चटपटी, मसालेदार, स्वादिष्ट, मीठी

चीजों के खाने के चक्कर में पड़ जाती है, मन को आर्डर देने लगती है कि फलां चीज बड़ी स्वादिष्ट है, वह चीज लाओ। यह चीज तो कड़वी, कसायली या फिकी है, नहीं चाहिए! इस प्रकार जीभ जब अपनी मर्यादा का उल्लंघन करके अपने उत्तरदायित्व को छोड़ बैठती है, तब असंयम में ले जाक़र मनुष्य का सर्वनाश करा बैठती है।

इसी प्रकार घ्राणेन्द्रिय (नाक) पर संयम रखना भी जरुरी है। नाक पर संयम न रखने के कारण ही मनुष्य आज हजारों फूलों को कुचल कर निचोड़ कर बनाए गए सुगन्धित इत्र का उपयोग करता है। इसी प्रकार स्पर्शेन्द्रिय संयम का अर्थ है कोमल, कामोत्तेजक, गुदगुदाने वाली वस्तुओं का स्पर्श न किया जाय, ऐसी चीजों का उपभोग न किया जाय।

मन पर संयम का रहस्य यही है कि पांचों इन्द्रियां कदाचित् असंयम की ओर ले जाने लगे, लेकिन मन उस समय जागृत रहे और उन पर अंकुश लगा दे तो मनुष्य जगत् को जीत सकता है। गणधर गौतम स्वामी इसी रहस्य को प्रगट कर रहे हैं :-

एगे जिए जिया पंच, पंच जिए जिया दस।
दसहा उ जिणित्ताण सव्वसत्तु जिणामहं।।

उत्तराध्ययन अ.२३ गाथा ३६

एक मन को जीत लेने पर पाँचों इन्द्रियाँ जीती जा सकती है। और पाँचों इन्द्रियों पर विजय पा लेने के बाद पाँचों प्रमाद और पांचो अव्रतों पर विजय पाई जा सकती है। इंस प्रकार इन्द्रियों और मनको शिक्षित बना लेने पर इन दसों पर विजेता होकर मैं सब शत्रुओं को जीत लेता हूं।"

अन्य बातों पर भी संयम आवश्यक :

पांचों इन्दियों और मन के अलावा हाथों, पैरों और शरीर पर भी संयम आवश्यक है। हाथों से किसी के थप्पड़, घूंसा आदि न मारना, चोरी व छीना -झपटी न करना ,किसी को धक्का न देना, किसी का बुरा न करना हाथों का संयम हैं। पैरों से किसी को ठोकर लगाना, किसी को कुचलना, रोंदना, दबाना और लात मारना पैरों का असंयम है। उसे रोकना संयम है। इसी प्रकार अपने शरीर से गलत चेष्टाएं करना , दुसरे पर बोझ रुप होना, शरीर को गलत प्रवृत्तियों में लगाना शरीर का असंथम है। उस पर काबू रखना शरीर संयम है। इसी प्रकार - पृथ्वीकायादि पर संयम भी जीवन में जरुरी है। जरुरत से अधिक मिट्टी का उपयोग न करना, अग्नि के इस्तेमाल पर कन्ट्रोल करना, हवा का उपयोग भी जरुरत से ज्यादा न करना और वनस्पतिजन्य चीजों का इस्तेमाल भी केवल जीवन-निर्वाह के अतिरिक्त न करना पृथ्वीकाय आदि का संयम है।

इसके अलावा कषायों और वासनाओं पर भी संयम रखना बहुत जरुरी है। यह संयम मन से संबंध रखता है। अगर मनुष्य अपने मन और इन्दियों पर स्वेच्छा से संयम कर ले तो काफी चीजों पर संयम हो जाता है।

भाग्यशालियों! काफी विस्तार से मैं आपको संयम में पुरुषार्थ के बारे में कह चुका हूं। आप अपने जीवन में संयम को स्थान देंगे तो उससे भौतिक और अध्यात्मिक दोनों प्रकार के लाभ होंगे, इसमें कोई सन्देह नहीं। संयमी जीवन स्वयं ही अमृतमय, सुखमय और संतोषमय होता है। अत: मन में दृढ़ निश्चय कर लें— असंजम परियाणामि संजमं उवसंपवज्जामि—असंयम के परिणामों को भलीभांति जानकर मैं संयम को स्वीकार करता हूँ

श्री नमिनाथ जिन स्तवन (२१)

(आचारज पद पूजीये-मन....... ए राह)

विवेचन : श्री जयानंदविजयजी म.

नमुं श्री नमि जिन नाथ ने, मन मोहन जी ।
विप्रासुत विख्यात रे, जग सोहन जी ॥
अनुभव रूपे अनुभवी म., मत राचो मिथ्यात रे । जग. ॥ १ ॥

गुरुदेवश्री कहते हैं कि मैं श्री नमि जिन नाथ को नमस्कार करता हूँ । मेरे मन का हरण करन वाले नाथ है एवं जगत में उनके जैसा शोभायमान सर्वश्रेष्ठ पदासीन भी अन्य कोई नहीं है ऐसे ये विश्व विख्यात विप्रा माता के पुत्र श्री नमिनाथ भगवंत हैं ।

गुरुदेवश्री भगवंत के श्रद्धालु भक्तों से कहते है कि श्री नमिनाथ भगवंत अनुभव के रूप में जान कर अर्थात् सम्यग्दर्शन की प्राप्ति से आत्मा में परमात्म पद का जो अनुभव होता है उस अनुभव से भगवंत को जानने के बाद मिथ्यात/मिथ्या भाव में मिथ्यात्व युक्त आचरणा में आनंद मानना बंद कर दो ।

घन घाती जिणे अघ हर्या म., शैलेशी करणे सिद्ध रे । जग. ।
चार अनंते अचल छे, म., राजे आतम ऋद्ध रे । जग. । २ ।

जिन्होंने घन घाती रूप पाप को दूर कर दिया है और अघाती कर्मों के क्षय से, एवं शैलेशी करण करके सिद्ध पद प्राप्त किया है ।

अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत सुख एवं अनंत वीर्य इन चार प्रकार के अनंत से युक्त होकर अचल है । अपने स्थान से अंश मात्र भी आगे पीछे नहीं होता है । आत्मा की अनंत ऋद्धि में आनंदित है ।

दोय उपयोगे दीपतां म. समयान्तर विशिष्ट रे । जग. ।
रूपातीत त्रीजे रह्या म. अम मन तेहि ज इष्ट रे । जग. ॥ ३ ॥

सैद्धांतिक मत से केवलज्ञानी एवं सिद्धात्माओं को प्रथम समय में केवलज्ञान होता है । द्वितीय समय में केवल दर्शन होता है । एक समय के अन्तर से दोनों उपयोगों से प्रकाशमान है ।

ध्यान की तीन अवस्था है । (१) पींडस्थ (२) पदस्थ (३) रूपातीत

श्री सिद्ध परमात्मा का ध्यान करना अर्थात् रूपातीत अवस्था का ध्यान करना ।

सिद्ध भगवंत तीसरे रूपातीत अवस्था में बिराजमान है। आपकी वहां कोई आकृति नहीं, कोई रूप नहीं, कोई वर्ण नहीं, गंध नहीं, रस नहीं, स्पर्श नहीं।

गुरुदेवश्री कहते हैं कि मेरे मन में ऐसे प्रभुजी बसे हुए हैं। वे ही मुझे प्रिय है।

आतम चारे आदरी मन., भाव दोष भगवंत रे। जग.।
सम्यग् द्रष्टि शोभतां मन., आपे ते भव अंत रे। जग. ॥ ४ ॥

आत्मा जब तक सद्भाव में दोष रूप निम्न चार प्रकार को आदर देता है, उसका आचरण करता है तब तक मिथ्यात्वी कहा जाता है।

(१) लोकोत्तर देवगत मिथ्यात्व = सुदेव को भौतिक सुख प्राप्त करने हेतु मानना पूजना।
(२) लोकोत्तर गुरू गत मिथ्यात्व-सद्गुरु भगवंतो को भौतिक सुख प्राप्त करने हेतु मानना पूजना।
(३) लौकिक देवगत मिथ्यात्व = रागी द्वेषी देव देवियाँ को मानना पूजना।
(४) लौकिक गुरुगत मिथ्यात्व = असद्गुरू को मानना पूजना।

इन चार प्रकार के मिथ्यात्व में सभी मिथ्यात्व के प्रकारों का सद्भाव हो जाता है।

इन चार दोष से युक्त आत्मा सज्ञन पुरूषों में ज्ञानी पुरूषों में शोभायमान नहीं होता।

जब मिथ्यात्व दूर हो जाता है। सम्यग्दर्शन प्राप्त हो जाता है तब वह आत्मा शोभायमान होता है और सम्यग्दर्शन भव का अंत करवाने वाला बनता है। सम्यग्दर्शन के द्वारा ही भव का अंत होता है।

विजय राजाना वंश मां म., जिन इकवीश मे जेह रे। जग.।
सूरि राजेन्द्र ने स्नेह लो म., आपे संपत्ति एह रे। जग. ॥ ५ ॥

विजय राजा के सुपुत्र श्री राजेन्द्रसूरीश्वरजी को अति प्रिय है। एकवीशमें श्री नमिनाथ भगवंत सभी आत्मिक संपत्ति देते हैं।

श्री नमिनाथ भगवंत की स्तवना करनेवाले को आत्मिक संपत्ति प्राप्त हो जाती है। गुरूदेवश्री ने इस स्तवन में मिथ्यात्व भाव के त्याग का संदेश देकर सिद्धावस्था की प्राप्ति एवं सिद्धावस्था का संक्षेप में वर्णन किया है।

सभी प्राणियों की रक्षा करो। किसी प्राणी की हिंसा में, मन, वचन और काया से भागीदार न बनो।

कहाँ पहुँचना है, लक्ष्य निश्चित करो। पूरी तरह सोच विचार कर निर्णय करो। फिर उस लक्ष्य तक पहुँचने का पुरुषार्थ आरंभ करो।
हिम्मत से आगे बढते रहो।

ज्ञानकसौटी (२१)

- महेन्द्र जे. संघवी - थाने

(स्वाध्यायी पाठक निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर पहले क्रमशः एक कागज पर लिखे फिर इसी अंक में पृष्ठ ३७ पर दिये गए उत्तरों से तुलना करें। - **सम्पादक**)

नोट- सभी प्रश्नों के उत्तर 'व' की वर्णमाला से प्रारंभ होते हैं।

५०१) इस तीर्थ का नाम 'सकलतीर्थ' सूत्र में आता है।
५०२) कल्पसूत्र सर्वप्रथम वार यहाँ लिखा गया था।
५०३) वीरप्रभु के शासन में जीवों का स्वभाव
५०४) वारहवाँ संघ ले जाते समय राह में जिनका देहावसान हो गया था।
५०५) ... से प्रभु की आंगी करना हिंसायुक्त एवं घृणित है।
५०६) तीन गुप्तियों में से एक।
५०७) छः काय में से एक।
५०८) तीन दण्ड में से एक।
५०९) एक योग का नाम।
५१०) दस त्रिकों में से एक।
५११) चार अतिशयों में से एक।
५१२) बीस विहरमान में से एक।
५१३) ज्ञान पंचमी की आराधना से ... का कुष्ठरोग दूर हुआ।
५१४) वज्रस्वामी के पट्टधर का नाम।
५१५) सामायिक के बत्तीस दोषों में से दस दोष इसके होते हैं।
५१६) पिस्तालीस आगम में से ग्यारह अंगों में से एक।
५१७) पिस्तालीस आगम में से बारह उपांगों में से एक।
५१८) सत्ताइस नक्षत्रों में से एक।
५१९) राग द्वेष से दूर कौन रहता है।
५२०) बाईस अभक्ष्य में से एक।
५२१) तालध्वज तीर्थ का एक अन्य नाम।
५२२) श्रावक के इक्कीस लक्षणों में से तीन लक्षण।
५२३) वेदनीय कर्म के ग्यारह परिषहों में से एक।
५२४) दस पयन्ना में से एक।
५२५) सा ... यां विमुक्तये।

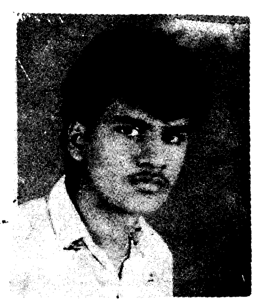

परम श्रद्धेय आचार्य श्री जयन्तसेनसूरीश्वरजी के

पावन चरणों में शत् शत् वन्दन

तुम अभिनव युग के नव विधान रूढ़ बन्धनों के मुक्ति गान।
है – युग पुरूष, है युगाधार अभिनन्दन है, शत् शत् वन्दन॥

ज्ञान ज्योति की ज्वलित ज्वाला, हो तुम–आत्म साधना का उजाला।
है, मिथ्या तिमिर अभिनाशक, अभिनन्दन है, शत् शत् वन्दन॥

पुत्र नव्य नभ के नव बिहान, नई चेतना के अभियान।
जैन संस्कृति के अमर गायक, अभिनन्दन है शत् शत् वन्दन॥

अतित युग के मधुर गायक, अभिनव युग के हो अधिनायक।
नूतन पुरातन युग श्रृंखला, अभिनन्दन है, शत् शत् वन्दन॥

तूम पद दलितों का क्रान्ति घोष, अबल साधकों के शक्ति कोष।
है क्रान्ति पथ के महापथिक अभिनन्दन है, शत् शत् वन्दन॥

रेखा जैन (राठौड़) – पिपलौदा

मेरे मधुकर

एक ही मधुकर की खुशबू से महका हिन्दुस्तान
घर आंगन को हर्षित कर दे जयन्तसेन का नाम॥

डग डग पग भरते हुवे पहुंचे शहर हर गांव
परिषह को ले साथ दिये समाज को नये आयाम॥

ऊच्च नीच का भेद मिटाया हर एक को गले लगाया
जिनकी वाणी से रस अमृत बरसे नित्य सुबह शाम॥

दिशा हिनो दिशा बताई बान्ध एक ही बन्धन में
समाज धर्म की सेवा करो सोप दिया जिन काम॥

आप भये बलिहारी गुरूवर किया समाज उत्थान
अशान्त शरणे आपकी करे कोटि कोटि प्रणाम॥

लेखक – पुखराज जैन 'अशान्त'

क्या आप जानते हैं?

- लगभग एक करोड़ की जनसंख्या वाले बम्वई शहर में वायुमंडल में प्रतिदिन २९७१ टन वायु प्रदुषक तत्व मिलते हैं। इसमें वाहनों का योगदान ४६ प्रतिशत व घरेलु ईंधन का योगदान दो प्रतिशत है। शेष ५२ प्रतिशत प्रदुषक तत्व शहर के इर्दगिर्द कुकुरमुत्ते की तरह उग आए उद्योगों से निकलते हैं।
- एक रूपया जव टकसाल से छपकर आता है तो उसका २४ फीसदी विदेशी ऋण और उसका व्याज चुकाने में खर्च हो जाता है। वाकी ७६ पैसे में हम अपना देश चलाते हैं।
- सन १९८३ में श्रीमती इंदिरा गांधी ने मुद्राकोष से ४.४ अरव डालर ऋण के रूप में लिये उस समय भारत पर केवल २८.७ अरव डालर का ही ऋण था। मॉ-बेटे (श्रीमती इंदिरा गांधी - श्री राजीव गांधी) ने मिलकर यह ऋण सन् १९८९ तक ७० अरव डालर से भी उपर पहुंचा दिया।
- जव हम एक डालर का निर्यात करते हैं तो उस पर पहले ही ४० फीसदी आयात व्यय हो चुका होता है। अर्थात हमे केवल ६० फीसदी ही मिलता है। इस हिसाब से अगर हमारी निर्यात आमदनी ६० फीसदी वढ़ जाए तो हम आयात खर्च की भरपाई कर सकते हैं। जव कि १९९२ के अप्रेल-जुलाई में निर्यात आमदनी केवल दो फीसदी बढ़ी।
- विदेशी कर्ज के वढ़ते वोझ से जहॉ देश की आर्थिक स्थिती विगड़ रही है वहीं तेजी से वढ़ते औद्योगिकरण का असर पर्यावरण पर भी पड़ रहा है।
- हिमाचल प्रदेश में सीमेन्ट प्लांट के लिये दाड़लाघाट वन्य जीव प्रणाली उद्यान वर्वाद हो रहा है, पर सरकार को इसकी चिन्ता नहीं है।
- कर्नाटक में हरिहर पाली फाइवर के औद्योगिक कचरे से तुंगभंद्रा नदी का पानी प्रदूषित हो चुका है। कानपुर में औद्योगिक कचरे के चलतें गंगा का पानी वुरी तरह प्रदुषित हो चुका है लेकिन फिर भी संरकार कोई पहल नहीं कर रही है।
- विश्व में मलेरिया से प्रतिवर्ष करीव दस लाख व्यक्तियों की मृत्यु हो जाती है तथा दस करोड़ से ज्यादा लोग बीमार होते हैं।
- एक वर्ग सेन्टीमीटर रेशम वस्त्र के उत्पादन में सात कीटों की जान जाती है। रेशम की एक साड़ी में लगभग ५.३८ वर्गमीटर वस्त्र लगता है, जिसमें ३,४६२ रेशम-कीटों की मासुम जाने बुन दी जाती है।
- सौ ग्राम रेशम का वस्त्र तैयार करने के लिये लगभग १५०० कीड़े मौत के घाट उतार दिये जाते हैं।
- दिल्ली में मुंह केंसर विषय पर आयोजित सम्मेलन में चेतावनी दी गई कि यदि इस ओर ध्यान नहीं दिया गया तो सन् २००० तक आज से दोगुने रोगी होंगे।
- खान-पान की दिशा में हमारे अन्धानुकरण ने भी काफी क्षति पहुँचायी है। खान-पान का सीधा असर हमारी वुद्धि, विवेक और चरित्र पर पड़ता है।

\- **धर्ममित्र**

श्रद्धांजली

स्व. श्री जुगराजजी (किशोरलालजी) सरेमलजी फोलामुथा

(सायलावाला) आहोर (राजस्थान)

स्वर्गवास : २२/१०/१९९२

- शोकाकुल -

माता - श्रीमती सांकलीबाई
पत्नि - श्रीमती उगमबाई
भाई - भागचंदजी
पुत्र - महावीर
भतीज - गौतम, श्रीपाल
बहन - बहनोई - लीलाबाई - भंवरलालजी, कमलाबाई - अमीचंदजी
ससुराल पक्ष - वागौड़ा (जि. जालोर)

एवं समस्त फोलामुथा परिवार

फर्म - सरस्वती स्टील ट्रेडर्स
कासारवाड़ी, पुणे - ४११ ००१
☎ **(O)** ८६१०३, ८३४०५
(R) ६५१३३९

सरेराह चलते-चलते

❋ **गोरक्षा और गांधीजी** - २४ दिसम्बर १९२४ को बेलगांव में गोरक्षा परिषद के अपने अध्यक्षीय भाषण में गांधीजी ने कहा था "कई बातों में मैं गोरक्षा के प्रश्न को स्वराज्य के प्रश्न से भी बड़ा मानता हूँ। जब तक हम यह न मान लें कि गोरक्षा किस तरह करनी चाहिये तब तक स्वराज्य की कोई स्थिति नहीं है।" क्या गांधीजी के नाम की दुहाई देने वाली सरकार इस बात पर गौर कर गोहत्या बन्द करने के लिये कोई कदम उठायेगी?

❋ **बढता हुआ विदेशी कर्ज** - विदेशी कर्ज तेजी से बढ रहा है और जल्दी ही सौ अरब डॉलर हो जायेगा। मोटे गणित के अनुसार ८० करोड भारतीयों में प्रति भारतीय यह ऋण पौने चार हजार रूपए बैठता है जबकि प्रति भारतीय आमदनी इतनी कम है कि प्रत्येक भारतीय अपने छह महीने की कमाई भी दे देतो भी यह कर्ज पूरी तरह से नहीं उतरेगा।

❋ **आर्थिक प्रगति या अवनति?** - सन् १९९२ के पहले चार महिनों में ही व्यापार घाटा दो अरब डालर हो गया। सन् १९९१ के पूरे साल में इतना व्यापार घाटा हुआ था। हमारी सरकार की नीतियाँ आर्थिक प्रगति की ओर है या अवनति की ओर!

❋ **नयी औद्योगिक नीति** - सन् १९५२ में हमारे नीति निर्धारकों ने तय किया था कि देश में कम से कम ३३ फीसदी इलाके पर जंगल बने रहेंगे, लेकिन आज सिर्फ १२ फीसदी इलाके में जंगल बचे हैं। यह सब हुआ वनस्पति आधारित उद्योगों को अंधाधुंध बढ़ावा देने से और अब उन उद्योगों को बेलगाम छूट दी जा रही हैं तो नतीजे की कल्पना आसानी से की जा सकती है।

❋ **पर्यटन को बढ़ावा और बिगड़ता पर्यावरण संतुलन** - तटीय इलाकों में सरकार ने पर्याटन को बढावा देने के नाम पर बहुराष्ट्रीय कम्पनियों को न्यौता दे दिया है। जो अपने मुनाफे के चलते न तो पर्यावरण संतुलन की चिन्ता करती हैं न लोगों की संस्कृति की। गोवा एक महत्वपूर्ण उदाहरण है। जहाँ के पर्यावरण संस्कृति पर हमला तेज हो रहा है। गोवा में दो वर्ष के भीतर ३५ बीच रिसॉर्ट परियोजनाओं को हरी झंडी दी जा चुकी है, जो गोवा के ७५ किलोमीटर लंबे समुद्री तट पर पसरती जा रही है। इनमें हयात रिजेंसी, हॉलीडे इन और रामडा जैसे मशहूर हॉटेल समूह शामिल हैं। इन हॉटेलों में एक हॉटेल के स्वीमिंग पुल के लिये ३० हजार लीटर पानी की जरूरत होती है। इन होटलों में पानी सप्लाई होने से उस इलाके के आसपास के कुएं तक सुख चुके हैं लेकिन सरकार फिर भी उनके ५१ फीसदी इक्विटी के साथ आमंत्रित कर रही है।

❋ **हिंसा को गति दे रही है सरकार** - हमारी सरकार लगातार ऐसी घोषणाऐं कर रही है, जो हिंसा की गति को बढ़ाती है, उसे कम करने का तो शायद कोई प्रश्न ही नहीं है। खान-पान, रहन-सहन, उद्योग-धंधों, कृषि-वाणिज्य आदि सभी क्षेत्रों को सरकार ने ख

से नहला दिया है। कृषि को उद्योग का दर्जा देने की घोषणा ने कृषि के पवित्र/अहिंसक क्षेत्र को भी दूषित कर दिया है।

❋ **सामाजिक सांस्कृतिक प्रदूषण** - ऊल-जलूल फिल्में टी. वी. व वीडियो आदि भी बहुत तेजी से सामाजिक सांस्कृतिक प्रदूषण पैदा कर रहे है। आज विरले ही कोई ऐसी फिल्म होगी जो उद्देश्यपूर्ण और अच्छे विचारों की वाहक हो, अन्यथा अधिकांश फिल्में अनावश्यक मार-धाड़, चोरी-डकैती व वलात्कार आदि के दृश्यों से भरी रहती है। लगभग यही स्थिति टी. वी. की है। आज टी. वी. लगभग हर घर में घुस चुका है और मनोरंजन का सर्वाधिक सस्ता व सुलभ साधन वन चुका है। लेकिन टी. वी. के अधिकांश कार्यक्रम इतने घटिया और उद्देश्यहीन होते है कि उन्हें देखकर अपना सर पीट लेना पड़ता है। ये माध्यम (टी. वी. और सिनेमा) कम उम्र के वच्चों और किशोरों के अपरिपक्व दिमाग पर वहुत गलत प्रभाव डाल रहे है।

❋ **अव खेती भी उद्योगों पर आश्रित** - पारंपारिक खाद और कीटनाशकों को खेती की किताव से ही खारिज कर दिया गया है। हरित क्रांति के पहले तक उद्योग जहाँ खेती पर आश्रित रहते थे। वहीं अव यह आलम है कि पूरी खेती उद्योगों पर आश्रित होकर रह गयी है। अव यदि उर्वरकों और कीटनाशकों के कारखाने कुछ दिन वंद हो जायेंगे तो खेती पर संकट आ जायेगा।

- प्रवासी

विचारमंथन

आज स्थिति अति भयावही है, सर्वत्र अशांति है कोई भी सुरक्षित नहीं है। जैन धर्म ही एक मात्र विश्व शांति बनाने में सक्षम हैं। वर्तमान स्थिति को देखते हुए जैन धर्म विश्व धर्म के रूप में उभर सकता है, परन्तु हमारे में भारी तनाव है। जैन धर्म के पांच मूलतत्वों को ध्यान में न रखकर अनावश्यक सिद्धान्तों के नाम पर परस्पर एक दूसरे की निन्दा कर वैर भाव की वृद्धि करते हैं। इससे हमारी अवर्चनीय शक्ति का ऱ्हास होता है। संगठन टूटता जा रहा है। समाज में एक ओर धर्म क्रिया के नाम पर करोड़ों रूपये खर्च होते हैं। वाह्य तपादि क्रिया पूर जोर पर है जिन्हें देख प्रतित होता है कि धर्माराधना - प्रभावना चरम सीमा पर है, पर रात्री भोजन की वात तो दूर रही अभक्ष्य अनन्तकाय अपेय पदार्थों का सेवन निरन्तर वढ़ता ही जा रहा है। समाज में अनेक कुप्रथाऐं जड़ जमाती जा रही है जो धर्म, समाज के लिये घातक है। ऐसी अनेक वातें हैं जिनपर ध्यान देना मुझे अत्यावश्यक लगता है। धर्म रक्षा और प्रभावना के लिये दुनिया के जैनों को संगठित करना और घातक तथ्यों के उन्मूलन के लिये नई-चेतना लाने के लिये अचूक प्रयास करना अनिवार्य है। पत्रिका एक अचूक साधन है यदि जैन पत्रिकाओं के सम्पादक निर्भिक होकर पंथ और संप्रदाय से उँचा उठाकर इस कार्य को करने के लिये संकल्प लें तो इस कठिन कार्य को अल्पावधि में कर दिखा सकते हैं।

- मंगलचंद्र सिंघी - कराड़ (महाराष्ट्र)

रूकिये! पढ़िये!! सोचिये!!!

- तीस हजार करोड़ रूपये लागतवाली नर्मदा परियोजना में राजनेताओं अफसरों, इंजीनियरों और सौराष्ट्र के ताकतवर किसानों के स्वार्थ हैं। इसलिए तमाम स्थानीय विरोध, जंगल गंवाकर, आदिवासियों को उजाड़कर, वनस्पतियाँ और जड़ी बुटियाँ डुवाकर भीमकाय वांध विदेशी मदद् से वन रहा है।

- टिहरी वांध बनाये जाने का विरोध है, फिर भी उसे बनाया जा रहा है। इसे बनाकर हम अपने प्राकृतिक संसाधन जंगल, पानी, उपजाऊ जमीन खत्म कर रहे हैं। इसे गंवाकर हमें कारखाने और बिजली भले ही मिल जाए पर यह विकास का रास्ता नहीं है।

- शाकाहार का तात्पर्य सिर्फ शुद्ध एवं सात्विक आहार से ही नहीं होना चाहिये, शाकाहार को वस्तुतः जीवन जीने-की-कला होना चाहिये। हमारे आचार-विचार, रहन-सहन, खान-पान, व्यवहार-आचरण में शुद्धता, अहिंसा, सात्त्विकता आदि का समावेश ही हमें एक परिपूर्ण शाकाहारी बना सकता है।

- तम्बाकू में करीब २००० जहरीले तत्व पाये जाते हैं, जिनमें दो अत्यंत ही घातक तत्व है - निकोटिन व वेंजोपायरिन। निकोटिन व्यक्ति को नशेड़ी बनाता है।

- आज देश में १० वर्ष की अवस्था से ही तम्बाकू का सेवन करनेवालों में पुरूषों की संख्या ८० प्रतिशत एवं स्त्रियों की संख्या ४० प्रतिशत है।

- अगर भारत को नशेडियों, चरित्रहीनों और संस्कारहीनों का देश होने से वचाना है तो यह अति आवश्यक है कि चरित्र निर्माण का एक आन्दोलन चलाया जाय।

- वच्चे का पहला विद्यालय घर होता है, और पहली शिक्षिका माँ होती है। यदि माँ सुसंस्कृत और चरित्रवान होगी तो निश्चित ही अपने बच्चे को भी अच्छा चरित्र व संस्कार देगी। लेकिन आज की युवा पीढ़ी को देखने से कल के भारत की जो तस्वीर दिमाग में बनती है वह बहुत आशाजनक नहीं है।

- विश्व-विद्यालय परिसर व छात्रावास नशाखोरी के अड्डे वन चुके हैं। वीडी-सिगरेट गाँजा, भाँग, अफीम, चरस व हेरोइन आदि नशीले पदार्थों का सेवन आज की युवा पीढ़ी के लिए एक फैशन की चीज वन चुकी है। सर्वाधिक चिन्ताजनक वात तो यह है कि भारत के महानगरों में युवतियाँ भी नशाखोरी में युवकों से पीछे नहीं है। एक अनुमान के अनुसार विश्वविद्यालयों में २० प्रतिशत छात्राएँ नशा करती है।

- बम्वई हाइ से निकला तेल कौन पी गया? अनिवासी भारतीयों द्वारा भेजी गयी विदेशी मुद्रा कहाँ खप गई? अंतरराष्ट्रीय सहायता देने वाली एजंसियों के नरम कर्ज और निर्यात से हुई आमदनी कौन खा गया? इंदिरा गांधी से नरसिंहराव तक चल रहे अवाध उदारीकरण और २० अरब डालर से ज्यादा की हाथियारों की खरीद के गड्ढे में यह सारी कमाई समा गई और यह गड्ढा अभी भी खाली का खाली है।

- अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आई एम एफ) ने कर्ज के नाम पर जो शर्तें थोपी हैं उन्हें पर्यावरण की कीमत पर ही लागू किया जा सकता है इसीलिए देश के प्राकृतिक संसाधनों का दोहन तेजी से किया जा रहा है, जंगल उजाड़े जा रहे हैं और जमीन की उर्वरा शक्ति घटायी जा रही है। औद्योगिक कचरा नदियों को प्रदुषित कर लोगों के जीवन के लिये खतरा बन चुका है।-

- नई उद्योग नीति में कपड़ा, पेपर, प्लाईवुड, रवर, चीनी और फुड प्रोसेसिंग उद्योग को और वढावा दिया जा रहा है जिसके लिये कच्चा माल प्राकृतिक संसाधनों को उजाड़कर ही प्राप्त होगा। मत्स्य पालन, सीमेन्ट और स्टील जैसे उद्योंगों को पूरी तरह लायसेंस मुक्त किया जा चुका है, जिसका असर देश के तटीय इलाके से लेकर पहाड़ी इलाकों तक पड़ेगा।

- तटीय इलाके में वीच रिसॉर्ट वनाने के लिये नारियल के पेड़ तेजी से काटे जा रहे हैं जिसका खतरा तुफान के समय स्थानीय लोगों को उठाना पड़ेगा क्योंकि नारियल के जंगलों की वजह से तूफान का दवाव कम हो जाता था और ज्यादा वर्वादी नहीं होती थी लेकिन अव यह ढाल न रहने से लोगों को जीवन का खतरा पैदा हो गया है।

- औद्योगीकरण की प्रक्रिया यदि इसी तेजी से और वगैर नियंत्रण के चली तो देश को इसकी वड़ी कीमत चुकाना पड़ेगी। जिसका उदाहरण हमें व्राजील और कोस्टारिका जैसे देशों से मिल सकता है।

- यह अजीव वात है कि इस देश में किसी भी शहर में सड़क विछनी हो या सीवर या पानी की पाइप लाइन डालनी हो, हर जगह विश्व बैंक दाता बनकर सहायता देने को तैयार हो जाता है। अव यही मदद् नासूर वन गयी है।

- नोवल पुरस्कार विजेता मशहूर स्वीडिश अर्थशास्त्री गुन्नार मिर्डल ने अपनी चर्चित पुस्तक 'एशियन ड्रामा' में यह सावित कर दिया है कि विकास की जड़ स्थानीय संसाधनों में है, न कि वाहर की आयातित सामग्री या मशीनों में।

- हमारे पास प्रचुर प्राकृतिक संसाधन है, पर पश्चिम की नकल में हम कृत्रिमजीवी होते जा रहे हैं।

- खेती की कई नई किस्में अधिक सिंचाई, अधिक उर्वरक ज्यादा कीटनाशक और मशीनों की मांग करती हैं। ये सारी चीजें किसी भी देश को वगैर विदेशी सहायता के जुटाना कठिन है। विदेशी वीज, विदेशी फसल और विदेशी उर्वरक, कीटनाशकों के उपयोग क चलते देशी खेती पर विदेशी अधिपत्य का खतरा मंडराने लगा है।

- अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अब बीज उद्योग में वड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनिया रूचि ले रही है ये कंपनिया एक साथ दो मोर्चों पर डटी हुई हैं। बीज उद्योग के साथ ही उर्वरक और कीटनाशकों का भी ये उत्पादन कर रही हैं। किसान कीटनाशक का उपयोग कम करें इसमें इनकी तनिक रूचि नहीं है। इसलिए ये कंपनियां ऐसे वीज विकसित कर रही हैं जो ज्यादा मात्रा में उर्वरक-कीटनाशक की मांग करें।

- मुसाफिर

स्वास्थ्य चर्चा

सावधान, इनमें जहर हो सकता है

निरंकार सिंह

आज मनुष्य जिन रोगों का शिकार हो रहा है, उनमें ८० फीसदी पर्यावरण प्रदूषण की उपज है। इस प्रदूषण के कई कारण हैं। तरह-तरह के प्राकृतिक और मानव निर्मित रसायनों की बढ़ती संख्या से खाद्य पदार्थों में भी विषैले तत्वों की मात्रा बढ़ रही है। औद्योगिक कल-कारखानों के कचरे और गंदे पानी ने धरती के जल के साथ-साथ कृषि उत्पादनों को भी प्रभावित किया। उर्वरको और कीटनाशकों ने कृषि की पैदावार तो बढ़ाई है, लेकिन उन्हें प्रदूषित भी किया है। इसके अलावा खाद्य पदार्थों को तैयार और संसाधित करने के लिए आज जो रसायन मिलाए जा रहे हैं, उनसे भी मनुष्य के स्वास्थ्य को खतरा बढ़ा है।

हाल में हुएं अध्ययनों और अनुसंधानों से पता चला है कि भारतीय भोजन में डी. डी. टी., बी. एच. सी. (गेमेक्सीन) और मेलाथियोन की मात्रा सीमा से अधिक पाई गई है। माँस. दूध, अंडों और मछलियों में डी. डी. टी. तथा बी. एच. सी. जैसे कीटनाशकों की मात्रा अनाजों की अपेक्षा अधिक पाई गई है। कई किसान और बड़े विक्रेता अनाजों को कीड़े-मकोड़ों से बचाने के लिए डी. डी. टी. डालकर रखते हैं। गेहूँ और चावल में कम मात्रा में भी इन कीटनाशकों के रह जाने पर वे खतरनाक हो सकते हैं। सब्जियों और फलों को तोड़ने से पूर्व मेलाथियोन जैसे फास्फेटी कीटनाशकों से उपचारित किया जाता है। इन कीटनाशकों के अवशेष भी सब्जियों और फलों में पाए गए हैं। वैसे कानूनन इन कीटनाशकों के प्रयोग की मनाही है।

जिन खाद्य पदार्थों में डी. डी. टी., बी. एच. सी., मेथाक्सोक्लोर मेलाथियोन की मात्रा ३ पी. पी. एम. से अधिक हो, उन्हें खाने से विषाक्तता का खतरा पैदा हो जाता है। यह खतरा दो प्रकार का होता है। एक तो तत्काल और तीव्र असर वाला होता है, दूसरा मंद, जो धीरे-धीरे असर करता है। फसल की सुरक्षा के लिए किसान इस प्रकार के कीटनाशकों का धड़ल्ले से उपयोग कर रहे हैं। इस बात के पर्याप्त प्रमाण हैं कि ऐसे किटनाशकों वाले खाद्य पदार्थों से कई प्रकार की बीमारियाँ हो सकती है। इनमें गुर्दे की खराबी से लेकर रक्त संबंधी कई रोग शामिल हैं।

कृषि पैदावार बढ़ाने के लिए बड़े पैमाने पर उर्वरकों का इस्तेमाल हो रहा है। इससे हमारे कई खाद्य पदार्थों में नाइट्रेट की मात्रा बढ़ गई है। नाइट्रेट स्वयं तो विषाक्त नहीं होता है, किन्तु उसे अंत मे बेक्टीरिया द्वारा विषाक्त बनाया जा सकता है। इससे रक्त में होमोग्लोबिन कम हो जाता है और व्यक्ति 'रक्त अल्पता' का शिकार हो जाता है।

कई रासायनिक उद्योगों से निकला कूड़ा-कचरा और गंदा पानी खेतों में पहुँच जाने के कारण कहीं-कहीं पारा, कैडमियम, सीसा जैसे अत्यन्त विषैले तत्व भी हमारे खाद्य पदार्थों में आ गए हैं।

आजकल खाद्य पदार्थों में ऊपर से मिलाए जाने वाले रसायनों और संसाधन में सहायकों के रूप में कई रसायनों का प्रयोग हो रहा है। इनका उपयोग दिनोंदिन बढ़ता जा रहा है। खाद्य

तत्वों और रसायनों पर सरकारी नियंत्रण है। किन्तु अज्ञानी तथा मुनाफाखोर व्यापारी खाद्य उद्योग में कई प्रकार के रसायनों का खुलकर उपयोग कर रहे हैं। इससे डिब्बा बंद और संरक्षित खाद्य पदार्थों के सदैव निरापद होने की संभावना खत्म हो गई है। इनके विषैले होने की आशंका है। आजकल तकनीकी प्रयोजनों से खाद्य पदार्थों में जानबूझ कर जो रसायन मिलाए जाते हैं, उनकी संख्या लगभग २८०० है।

खाद्य पदार्थों के संसाधन में मिलाए जाने वाले रसायनों के खतरे भी हैं। यह खतरा इस बात पर निर्भर है कि उस रसायन में कितनी विषाक्तता है और उसकी कितनी मात्रा हमारे पेट में जाती है। इस बारे में भारत में कोई अध्ययन नहीं किया गया है, इसलिए कोई आँकड़ा भी उपलब्ध नहीं है।

देश मे खाद्य पदार्थों में मिलावट के प्रति वर्ष ३०,००० से अधिक मामले दर्ज किए जाते हैं। इनमें रंगों की मिलावट के मामले सबसे अधिक होते हैं। लखनऊ के केन्द्रीय विष विज्ञान अनुसंधान केन्द्र ने उत्तर प्रदेश में १२५७५ नमूनों के विश्लेषण में ७० फीसदी मामले रंग की मिलावट के पाए हैं।

कुछ विशेष प्रकार के खाद्य पदार्थों में कोलतार से बनने वाले रंगों के प्रयोग की अनुमति दी गई है जैसे आइसक्रीम, दूध, अंडा उत्पादन, बिस्कुट, मिठाइयाँ, फलों से बने कुछ पदार्थ, संसाधित अथवा परिरक्षित सब्जियाँ, जैली, कस्टर्ड पाउडर, सूप पाउडर, स्वाद बढ़ाने वाले एजेंट, आइसकैंडी, चाय और कोको छोड़कर अन्य अमादक पेय, माल्ट युक्त खाद्य पदार्थ तथा काफी। किन्तु आजकल कोलतार से बनने वाले जितने भी रंग हैं उनमें से लगभग सभी के कैंसरजनक तथा अन्य विषैले प्रभावों के बारे में काफी अनिश्चितता है। कोलतार के एमरेंट को सर्वाधिक निरापद और उपयोगी रंग माना जाता था। किन्तु खाद्य, औषधि तथा प्रसाधन सामग्री में बहुत अधिक इस्तेमाल होने वाला यह रंग अब शंका की दृष्टि से देखा जाता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इस रंग को स्वीकृत रंगों की सूची से निकाल दिया है। नए अध्ययनों से पता चला है कि यह कैंसरजनक है और प्रजनन शक्ति को भी प्रभावित करता है। उससे गर्भस्थ शिशु की मौत हो सकती है और जन्मजात विकृतियाँ भी हो सकती हैं।

भारत में खाद्य पदार्थों में जो रंग काम में लाए जाते हैं, उनके दीर्घकालिक प्रभाव से कब्ज, रक्त की कमी, दिमाग, गुर्दे, तिल्ली और जिगर जैसे प्रमुख अंगों में घाव, गाँठें, कैंसर, लकवा और गर्भस्थ शिशुओं को कई प्रकार के रोग हो सकते हैं इसके अलावा माता-पिता के जीन्स में स्थायी परिवर्तन हो सकते हैं जिसके कारण विकलांग और मानसिक रूप से अवरुद्ध बच्चे पैदा हो सकते हैं। बर्फी, आइस्क्रीम, कुल्फी, सॉस, कैंडी, कन्फेक्शनरी, डेयरी उत्पाद, डेसर्ट पाउडर, नमकीन में प्रयोग किया जाने वाला नारंगी रंग 'सनसेट यलो' और पीला रंग 'एरोथ्रोसीन' भी हानिकारक है। म्यूनिख के जर्मन अनुसंधान संस्थान के अनुसार इन रंगो से प्रजनन तत्वों में विकृति हो सकती है अथवा जीन में परिवर्तन आ सकता है।

कई खाध पदार्थों की चमक बढ़ाने के लिए व्यापारी रंग का इस्तेमाल करते हैं। नकली सजावट के बिना ग्राहक भी उनकी ओर देखता नहीं। बाजार में पीले रंग की अच्छी दिखने वाली दालें, पीले-पीले लड्डू, जलेबी, हलवा, हल्दी (साबुत और पिसी), हींग, केसर, खाने की तम्बाकू और सुपारी में कोलतार से बनने वाला पीला रंग 'मेटेलिक यलो' मिलाया जाता है। इस रंग के खाने से

प्रजनन से सम्बध रोग और पेट में फोड़े होने का खतरा रहता है। इसके अलावा खाद्य पदार्थों में कई प्रकार की मिलावट एक अलग गंभीर समस्या है।

खाद्य पदार्थों की पैकिंग के लिए जो टिन, प्लास्टिक, कागज और गत्ते प्रयोग में लाए जाते हैं, उनका कुछ अंश भी उसमें आ जाता है, जो मनुष्य के लिए हानिकारक हैं। धातु अथवा चीनी मिट्टी के बर्तनों में रखे या पकाए गए खाद्य पदार्थों में सीसे, टिन, निकल, एल्युमीनियम और कैडमियम के अवशेष पाए गए हैं।

प्लास्टिक में पोली विनाइल क्लोराइड (पी. बी. सी.) और एक्रिलिक प्लास्टिक का हाल के वर्षों में खूब प्रचार हुआ है। १९७३ में पता चला कि पी. वी. सी. का सम्पर्क खाद्य पदार्थों से हो जाए तो पी. वी. सी. में मौजूद विनाइल क्लोराइड खाद्य पदार्थं में प्रवेश कर सकता है। इससे जिगर का कैंसर हो सकता है। अमेरिका में मादक पदार्थों के लिए पी. वी. सी. के पात्रों पर प्रतिबंध है। एक्रिलिक प्लास्टिक में भी पैक किए खाद्य पदार्थों में 'एक्रिलोनाइट्राइल' नामक विषैला तत्व प्रवेश कर जाता है। यह भी स्वास्थ्य के लिए खतरनाक है।

पैकिंग के लिए गत्ता (दफ्ती) भी कई बार काम में लाए जा चुके कागज से बनाया जाता है। इसमें पॉलिक्लोरिनेंटल बाइफेनिल्स होता है, जो खाद्य पदार्थों को प्रदूषित कर देता है। कागज की पैकिंग में फॉर्मेल्डिहाइड, छपाई की स्याही अथवा वार्निश से भी प्रदूषण हो सकता है। ऐसा प्रदूषण खाद्य पदार्थों में दुर्गन्ध पैदा कर सकता है। अखबार और पत्रिका के कागज के संपर्क में तो खाद्य वस्तुएँ आनी ही नहीं चाहिए।

प्राकृतिक रूप से खाद्य पदार्थ हानिकारक नहीं होते हैं। उनमें परिरक्षक तत्वों की भरमार नहीं होती, अतः वे खराब हो जाते हैं। यदि स्वास्थ्यप्रद खाद्य पदार्थ देख और समझकर खरीदे जाएँ तो उन्हें उचित रूप से रखने, संसाधित करने और पकाने में प्रायः खतरे की आशंका नहीं रहती। किसी भी दिशा में खराब खाद्य पदार्थों को नहीं खाना चाहिए।

कुंडली

नर श्रेष्ठ है शील से, नारी श्रेष्ठ शीलवान
सन्मानित शीलवान हो, श्वानवत शीलहीन
संत की शोभा शील से, करे स्वाध्याय व ध्यान
शील से ही गति शील हो, शील शोभा विद्वान
शील शोभा विद्वान की, शील धर्म आधार
शील से मिले आरोग्यता, शील चरित्र आगार
कहें सौभाग्य कविराय, शील गुणों की खान
नर श्रेष्ठ है शील से, नारी श्रेष्ठ शीलवान.

● सौभाग्यमल जैन वकील, रतलाम

सत्यकथा

भामती की निष्काम सेवा

—मुनि मोहनलाल 'शार्दूल'

वाचस्पति मिश्र एक महान वैदिक पण्डित हो गए हैं। उन्होंने शंकर-भाष्य पर भामती नामक महान् टीका लिखी है। यौवन वय में पण्डित जी से उनके पिता ने कहा—बेटा! अब विवाह कर लो। तब पुत्र ने उत्तर दिया कि पिताजी विवाह करने की मेरी इच्छा नहीं है, मेरी अभिलाषा तो शास्त्र, रचना करने की है। विवाहित जीवन उसमें बाधक व बन्धन बन जायेगा।

परन्तु, पिता के अति आग्रह से विवश होकर अन्त में उन्हें शादी करनी पड़ी। चंवरी में फेरे लेने के साथ ही वाचस्पति पुन: अपने टीका निर्माण के कार्य में तल्लीनता से जुट गए। नव परिणीता पत्नी के साथ बात करने की भी उन्हें फुरसत नहीं थी। ग्रन्थ रचने की अजब धुन में उन्हें वासना कभी आक्रांत नहीं कर पाई थी।

पंडितजी को ग्रन्थ निर्माण की धुन थी, पर उनकी पत्नी को तो ऐसी कोई धुन थी नहीं। फिर भी आर्य देश की यह संस्कारिता पत्नि हमेशा पति की इच्छा के अनुकूल बन कर चलती रही। भामती ने अच्छी तरह जान लिया पति को शास्त्र सृजन की धुन है, मेरी कोई जरुरत नहीं। वे दिन-रात लिखते रहते हैं, तो मुझे भी अपना कर्त्तव्य समझ लेना चाहिये। समय पर खाना, पानी की गागर भर देना तथा सन्ध्या होने पर दिपक में तेल डालकर उसे जला देना वह बिना बोले यह सब नियमित रुप से सब करती रहती थी।

तीस वर्ष तक यह क्रम सतत चलता रहा। तीस वर्ष के अन्त में जब टीका का निर्माण कार्य पूर्ण हूआ, तब उस महान् टीका का नाम देने के विचार से वाचस्पति प्रसन्न चेहरा लिये बैठे थे। उसी समय भामती दिपक में तेल डालने आई। अपने सृजन-कक्ष में एक स्त्री देखकर वाचस्पति ने पूछा—"भद्रे! तुम कौन हो?"

इस अजीब प्रश्न से भामती चकित हुई। उसने निवेदन किया—"आपकी दासी।"

पति ने फिर पूछा—"तुम्हें यहां किसने रखा हैं?"

भामती ने कहा—"पिताजी ने।"

पंडितजी ने पुन: पूछा—"वे तुम्हें क्या वेतन देते हैं?" यह विचित्र प्रश्न सुनकर भामती बहुत विस्मित हुई। उसने कहा—"स्वामिनाथ! मैं वेतन लेने वाली दासी नहीं हूं। आपकी धर्म पत्नी हूं।"

यह उत्तर सुनकर वाचस्पति मिश्र की आखों से आँसुओं की धारा बह चली। उन्होने सोचा, एक दिन या एक रात भी मै पत्नी के साथ नहीं बैठा, इसके साथ बात भी नहीं की। कितनी महान है यह नारी इसने बिना किसी मांग और दैहिक भोगेच्छा के तीस वर्ष तक मूक भाव व निष्काम वृति से मेरी सेवा सरती रही।

उनके मन में विचार उठा, धन्य कौन? मैं या मेरे कार्य में महान् योगदान देने वाली मेरी पत्नी? इस विचार में चढ़े हुए वाचस्पति ने पत्नी का नाम अमर कर देने के लिये टीका का नाम 'भामती' रख लिया। एक नारी के निष्काम सेवाभाव को युगों-युगों तक के लिये अमर आदर्श बना देने वाला यह नाम विश्वविश्रुत हो गया।

शब्दसागर इनामी स्पर्धा (१५)

श्री प्रदीप एम. जैन - बम्बई

प्रस्तुत स्पर्धा १५ का उत्तर अलग से फुलस्केप पेपर पर लिखकर पूर्णनाम पता एवं शाश्वत धर्म की सदस्य संख्या के साथ कार्यालय के पते पर १५ फरवरी १९९३ तक पहुंचाएं। प्रस्तुत स्पर्धा के उत्तर एवं परिणाम मार्च १९९३ के अंक में प्रकाशित किये जाएंगे।

(नोट : एक सदस्य संख्या पर एक ही पृविष्ठी स्वीकृत की जाएगी। सदस्य संख्या के अभाव में प्रतियोगिता में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।)

पुरस्कार सौजन्य : अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद शाखा, जोगेश्वरी (बम्बई) की ओर से २००/- दो सौ रूपये का नगद पुरस्कार उत्तीर्ण प्रतियोगियों में समान भाग में वितरित किया जाएगा।

१	२		■	३		४	५	■	६		७	■	■
८		■	९		■	१०		■		■		११	१२
	■	१३		■	१४	■	१५	१६	■	१७	■	१८	
१९		■	■	२०		२१	■	२२			२३		
■	■	२४					■		■	२५			■
२६			■		■	२७	२८		२९	■		■	३०
	■		■		■	३१			३२	३३		३४	■
	■		■	■	३५				३६		■		■
३७		■	३८	३९		■	■	४०		■	४१	■	४२
	■	४३			■	४४	४५		■	४६			
■	४७			■	४८				■	४९		■	
५०		■	५१				■	५२					

बाएं से दायी ओर -

१) भगवान महावीर ने गौतम स्वामी से कहा था - है गौतम तू एक क्षण का भी --- मत करना। (३)
३) ---- के आंसू सारे पाप धो देते हैं। (४)
७) कच्छ (भुज) की अबडासा पंचतीर्थी का भगवान शांतिनाथजी का तीर्थ। (३)
८) -- की भावना आने पर वस्तुओं पर से ममत्व समाप्त हो जाता है। (२)
९) आचार में अहिंसा एवं विचार में अनेकान्तवाद यही जैन धर्म का -- है। (२)
१०) भ. श्री नेमिनाथजी और राजुल का -- आठ भव पुराना था। (२)
१२) दूध, दही, घी, तेल आदि छह --- में से एक का श्रावक को प्रतिदिन त्याग करना चाहिए। (३)
१३) अधिकांश तीर्थकरों को इस वृक्ष के नीचे केवलज्ञान प्राप्त हुआ था। (२)
१५) गुजरात में भड़ोच के पास सास-बहु निर्मित श्री आदिनाथजी एवं श्री धर्मनाथजी के मन्दिर जहां निर्मित है उस तीर्थ का प्राचीन नाम कंकावती था। (२)
१८) धन, दौलत उस शब्द के समानार्थी अर्थ है (कृपया उल्टा लिखे) और जब वह शब्द सीधा लिखा जाए तो उसका अर्थ मिट्टी रह जाता है। (२)
१९) दसवें तीर्थंकर के प्रथम गणधर। (२)
२०) श्री अभिनन्दन स्वामीजी का लक्षण। (३)
२२) राजा ------ नेमिनाथजी के पिता थे। (६)
२४) श्री -- --- नाथजी पालिताणा की पंचतीर्थी के ताल ध्वजगिरि तीर्थ के तीर्थाधिराज है। (२-३)
२५) जैन दर्शनानुसार इस जगत का कोई भी --- धरता व नियंता नहीं है। (३)
२६) पद उपाधि एक प्रमाण जिससे वस्तु के स्वरूप को जाना जाता है। (३)
२७) अपने देव गुरू और धर्म का जाने या अनजाने में कोई ---- न होवे इसका हमें ध्यान रखना चाहिए। (४)
३०) किसी शब्द को नकारात्मक बनाने में यह एक अक्षर ही काफी है। (१)
३१) धूल, मिट्टी --। (४)
३२) एक गणधर, ---- पुत्र। (४)
३५) इरियावही अं सूत्र में वर्णित एक प्रकार का जीव। (३)
३६) कुन्दन, सोना --। (२)
३७) स्त्री प्राकृत में। (२)
३८) श्रमण इन्द्रियों का वशवर्ती नहीं होता इसलिए उसे --- (स्वाधीन) कहा जाता है। (३)
४०) -- में पकाया -- में खाना चाहिए। (२),(२)
४३) श्री गौतमस्वामीजी के सांसारिक पिता का नाम ---। (३)
४४) यह काल भ. महावीर का --- काल है। ('शा' के स्थान पर 'सा' लिखें)। (३)
४६) तीर्थंकर, जिनेश्वर ----। (४)
४७) भ. श्री वासुपूज्यजी के यक्ष ---। (३)
४८) महाराष्ट्र के नागपुर जिले में भ. मुनिसुव्रतस्वामीजी के समय का भ. शान्तिनाथजी का अति प्राचीन तीर्थ ----। (४)
४९) जयादेवी भ. श्री वासुपूज्यजी की -- थी। (२)
५०) काल करे सो आज कर, आज करे सो अब, -- में प्रलय होई बहुरि करे कब? (२)
५१) संथारा, समाधिमरण। (४)
५२) एक बहिरंगतप ------। (६)

उपर से नीचे की ओर -

१) श्रमण के छः आवश्यक में से एक। (४)
२) भ. श्री अजितनाथजी की जन्म तिथि शुक्ल ८ थी ('घ' के स्थान पर 'ग' लिखें)। (२)
३) भापा समिती के अन्तर्गत मुनि को स्व -- हितकारी निश्चल वाणी का प्रयोग करने का कहा गया है। (२)
४) -- मारना, अर्थात बार-बार दूसरे की कमजोरी की तरफ इशारा करना। (२)
५) ध्वज, झंडा --। (३)
६) क्रोध (प्राकृत में)।
७) बात का बतंगड़ बनाना, -- का पर्वत बनाना। (२)
९) भ. महावीर को -- वृक्ष के नीचे केवलज्ञान प्राप्त हुआ था। (२)
११) जो ---- है वह बरसता नहीं, अर्थात खाली बर्तन ही अधिक आवाज करता है। (४)
१२) राजा --- श्री नमिनाथजी के पिता थे। (३)
१४) सर्व मंगल, मांगल्यं, सर्व कल्याणं करणं, प्रधानं सर्व धर्माणं --- जयति शासनम्। (३)
१६) 'उपार्जन' का विलोम (विरोधार्थी) शब्द। (४)
१७) एक अनंत काय। (३)
१८) त्रिशष्ठिशलाका पुरूषों में से ---- सारे मरकर नर्क में जाते हैं। (४)
२१) अट्ठारह पाप स्थानकों में से एक, घड़ी में हसंना घड़ी में रोना। (२,३)
२३) बामणवाड़ तीर्थ से एक किलोमीटर दूर भगवान श्री महावीर का तीर्थ। (४)
२४) ४८ मिनीट की एक ---- होती है, इसका फल लाखों स्वर्ण मुद्राऐं दान करने से प्राप्त फल से भी अधिक है। (३)
२६) भ. श्री महावीर के गणधरों को यह त्रिपदी थी, ----- विधमेइवा, धूवेइंवा। (५)
२८) --- रानी श्री अजितनाथजी की माता थी। (३)
२९) एक कुलकर। (४)
३३) कान, श्रोतेन्द्रिय। (२)
३४) शराब की -- ने कई घरों को बर्बाद कर दिया है। (२)
३५) जीव को कर्मों के उदय में फल भुगतने से रोकना किसी के -- में नहीं है। (२)
३८) प्रभु की आंखों से छलकने वाला रस ---- (४)
३९) श्री राम के एक पुत्र (उल्टा लिखे)। (२)
४०) भास्कर, रवि, अनिल ----। (४)
४१) भ. श्री संभवनाथजी की यक्षिणी। (४)
४२) जो राग द्वेष से परे है। (४)
४३) भ. श्री सुपार्श्वनाथजी की प्रथम आर्या। (२)
४४) तीर्थकरों ने हर दुःख का निडर होकर --- किया तभी उनके कर्म क्षय हुए एवं उन्होंने मोक्ष प्राप्त किया। (३)
४५) काल परमाणु एक दूसरे से --- होकर भी एक दूसरे से हटे हुए रहते है। (२)
४६) जिसे नापा नहीं जा सकता। (३)
४७) गोत्र कर्म के उदयानुसार जीव को -- मिलता है। (२)
४८) इस तन का अन्तिम रूप। (२)

॥ श्री शांतिनाथाय नमः ॥

राष्ट्रसन्त - तीर्थप्रभावक साहित्य मनीषी जैनाचार्य श्रीमद्

की पावनकारी निश्रा में मानपाडा (

श्री शान्तिनाथजी, श्री सुमतिनाथजी, श्री पार्श्वना जिन वि

प्रातः स्मरणीय गुरुदेव श्रीमद् विजय राजेन्द्रसूरी

श्री राजेन्द्रसूरि जैन ज्ञान मंदिर

विविध तपश्चर्या निमित्त उ

सकल श्री संघ आमंत्र

महोत्सव प्रारंभ **माघ शुक्ल ७ शनिवार** **दि. ३०-१-९३**	**माघ शुक्ल ११** **बुधवार दि. ३-२-९३** **भक्तामर महापूजन**	**म** **गुरु** **ज**
माघ शुक्ल १३/१४ शुक्रवार दि. ५-२-९३ **श्री शांतिनाथादि जिन बिम्ब प्रतिष्ठा विधि,** **ज्ञान मंदिर उद्‌घाटन, बड़ी नवकारसी**		**म** **शनि** **द्वारोद**

महोत्सव स्थल

गुरु राजेन्द्र नगर, ग्रीनवुड काम्प्लेक्स
घोड़बंदर रोड, कापुरबावड़ी के पास,
थाने (वेस्ट),
फोन नं. (०२२) ५३४२१८३-५३४१७९६

प्रतिष्ठा स्थल

श्री शान्तिनाथ जैन मंदिर
घोड़बंदर रोड, चित्तलसर मानपाडा,
थाने - ४०० ००७ (महाराष्ट्र)
फोन नं. (०२२) ५३४ ८१ ९५

लिखि

श्री शांतिनाथ जैन मंदिर
श्री जैन श्वेताम्बर मू.पू.
आहोर निवासी संघवी म
कांतिलाल मोतीलाल,
हितेश, सुरेन्द्र, राजेश,
संदीप, महेन्द्र, अंकुश बे
भुताजी श्रीमाल वर्धम
पूर्वक प्रणाम स्वीकारें।

नोटः- पधारनेवाले मेहमानों की साधर्मिक भक्ति एवं ठहरने की सुंदर व्यवस्था है।

सम्पर्क सूत्रः- जे. के. संघवी * के. के. संघवी - थाने (फोन - ५३४ ०७ २४)

मार्ग विवरण - बोरीवली रेल्वे स्टेशन से थाना आनेवाली बस के मार्ग में मानपाडा व ग्रीनवु
रेल्वे स्टेशन से मानपाडा के लिये बस मिलती है एवं टीकुजी की वाडी, आझाद
ओवला, गायमुख जानेवाली बसें मानपाडा व ग्रीनवुड कॉम्प्लेक्स होकर जाती है।
रिक्षा सुविधा उपलब्ध है। थाना जैन मंदिर टेंभीनाका से महोत्सव स्थल जाने के लि

|| श्रीमद् राजेन्द्रसूरि सद्गुरुभ्यो नमः ||

जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी 'मधुकर'
में मानपाडा (थाने) महाराष्ट्र नगरे

र्श्वनाथजी जिन बिम्ब, अनंतलब्धिनिधान गुरु गौतमस्वामीजी,
विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी गुरु प्रतिमा प्रतिष्ठोत्सव
जैन ज्ञान मंदिर उद्घाटन एवं
र्याओं निमित्त उद्यापन प्रसंगे

संघ आमंत्रण पत्रिका

माघ शुक्ल १२
गुरुवार दि. ४-२-९३
जलयात्रा वरघोड़ा

माघ शुक्ल १५
शनिवार दि. ६-२-९३
द्वारोद्घाटन व शांतिस्नात्र

लिखि

शांतिनाथ जैन मंदिर ट्रस्ट
जैन श्वेताम्बर मू.पू. सकल संघ - मानपाडा,
होर निवासी संघवी मांगीलाल, पारसमल, जुगराज,
तिलाल, मोतीलाल, जयन्तिलाल, महेन्द्र, दिनेश,
शेश, सुरेन्द्र, राजेश, संजीव, विनोद, दिलीप, धीरज,
दीप, मयुर, अंकुश बेटा-पोता छगनराज, कुन्दनमल
ाजी श्रीश्रीमाल वर्धमान गौत्रीय का जय जिनेन्द्र
क प्रणाम स्वीकारें।

ानपाडा व ग्रीनवुड कॉम्प्लेक्स आता है। थाना
ी वाडी, आझादनगर, वाघबिल, कासारवडवली,
होकर जाती है। थाने स्टेशन से हर समय ऑटो
स्थल जाने के लिए सुविधा रखी गयी है।

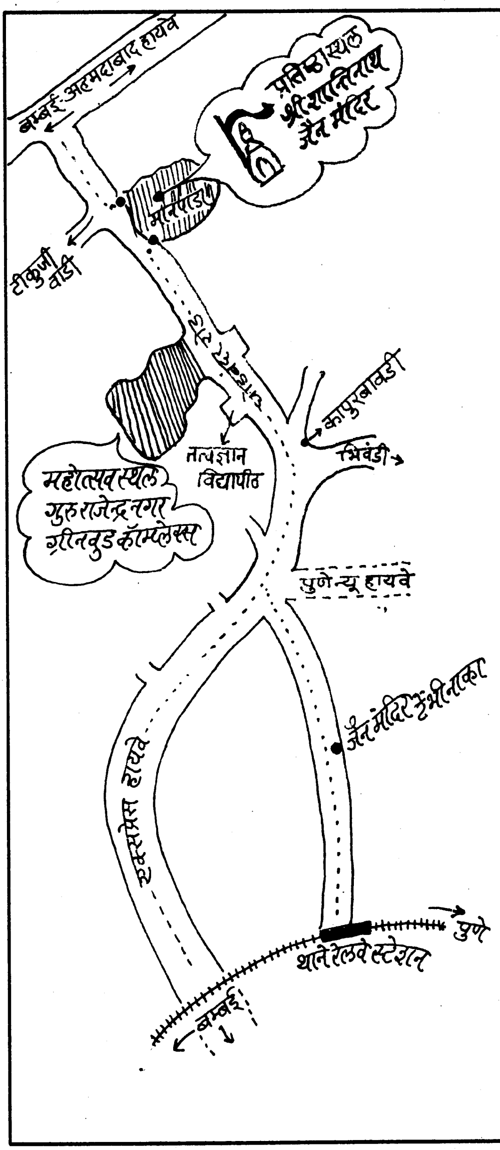

आचार्य पद की ९ वीं वर्षगांठ के अवसर पर विशेष

राष्ट्रसन्त जैनाचार्य श्री जयन्तसेनसूरीश्वरजी

- श्री नरेन्द्रकुमार धाड़ीवाल (महिदपुर)

भारतीय संस्कृति संतो की संस्कृति है महापुरूषों की संस्कृति है। सन्त और महापुरूष किसी एक जाति, वर्ण या राष्ट्र के नहीं वरन् समग्र विश्व की अमूल्य सम्पदा अनुपम धरोहर तथा भविष्य का प्रेरक इतिहास होते हैं। भारतीय संस्कृति में जैन श्रमण परम्परा का विशिष्ट स्थान रहा है इसके अन्तर्गत अनेक साधकों ने तप और त्याग के मार्ग पर अग्रसर होकर अन्धकार में भटकती हुई आत्माओं को दिव्य ज्ञान की ज्योति से आलोकित किया है इस श्रमण परम्परा में त्रिस्तुतिक जैन श्वेताम्वर संघ के आचार्य प्रवर राष्ट्रसंत श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म. सा. हैं।

जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म. सा. राष्ट्रीय मूल्यों के मार्गों पर प्रारम्भ से ही ध्वनि विखेरते रहे हैं। राष्ट्रवादी सुभाषितों की रचना एक महान राष्ट्रीय विचारधारा है, जयन्तसेन सतसई में कवि हृदय के राष्ट्रीय प्रेम की सतत् धारा एक आदर्श के रूप में प्रस्फुटित हुई है।

मातृभूमि अरू धर्म की, रखता है जो शान।
जयन्तसेन जग में वह, पाता पूजा स्थान॥
राष्ट्रहित का ध्येय रखो, छोड़ो पक्ष-विपक्ष।
जयन्तसेन दैवो सुख, आवे धरा समक्ष॥

आपने प्रारम्भ से ही वादी ग्रहण कर रखी है। आपने भारत-पाक युद्ध के गम्भीर संकटपूर्ण समय में राष्ट्रीय रक्षा कोष में अच्छी रकम देने के लिए समाज को प्रेरित किया। स्वयं ने भी रक्तदान कर राष्ट्रीय भावनाओं को सुदृढ़ किया। मानव कल्याण की राष्ट्रीय भावनाओं से ओत-प्रोत होकर आपने नेत्रदान घोषित कर रखा है। आपके प्रयासों से कई स्थानों में चिकित्सालय खोले गए हैं। सार्वजनिकता और धर्मनिरपेक्षता पूज्य आचार्य श्री के आदर्श विचारों की अमूल्य सम्मति की थाती है जो जयन्तसेन सतसई के दोहों में भी उजागर है और कई जगह रस वर्षा करती है -

जैन-हिन्दु या सिक्ख हो, या हो मुसलमान।
देह भेद जयन्तसेन, आतम एक समान॥

राष्ट्र समाज व प्राणीमात्र के कल्याण के बढते हुए कदमों व विचारों से प्रभावित होकर भारत के तत्कालीन उपराष्ट्रपति (वर्तमान राष्ट्रपति) डॉ. शंकरदयाल शर्मा ने ८ दिसम्वर १९९१ को जावरा (म. प्र.) में आपको राष्ट्रसन्त की उपाधि से सम्मानित कर प्रशस्ति-पत्र का समर्पण किया। इस अवसर पर उपराष्ट्रपति डॉ. शर्मा ने अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र

जैन नवयुवक परिषद् द्वारा प्रकाशित 'श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरि अभिनन्दन ग्रन्थ' का विमोचन किया।

आज से ठीक ३२ वर्ष पूर्व संवत् २०१७ की बात है पूज्य गुरूदेव श्रीमद् राजेन्द्र सूरीश्वरजी महाराज सा. के वाद चौथे पाट पर विराजित आचार्य श्रीमद् यतीन्द्रसूरीश्वरजी म. सा. ने कार्तिक पूर्णिमा को मोहनखेड़ा तीर्थ पर ३-४ हजार श्रावक श्राविकाओं के समक्ष चिन्तित होकर कहा कि चार पाट तो वहुत अच्छे निकल गए हैं, पाँचवे पाट का क्या होगा ? उस समय श्री संघ ने कहा कि आप जिसे कहेंगे उसी को पाँचवे पाट पर बिठावेंगे तब गुरूदेव ने मुनि श्री विद्याविजयजी को पाँचवे पाट पर बिठाये जाने को कहा और तुरन्त कहा कि मुनि जयन्तविजय भविष्य का युवाचार्य है। यह सुनकर उपस्थित जनसमुदाय व कुछ वड़ी दीक्षा वाले साधुओं को वड़ा आश्चर्य हुआ उस समय मुनिजयन्त विजय की उम्र मात्र २४ वर्ष की थी व मुनि दीक्षा में मात्र ७ वर्ष के दीक्षित मुनि थे आज गुरूदेव श्रीमद् यतीन्द्रसूरीश्वरजी महाराज सा. के वचनों की सत्यता सवके सामने प्रकट हो चुकी है और वर्तमान में मुनि श्री जयन्तविजयजी म. सा. विगत ९ वर्षों से आचार्य पद पर आसीन होकर श्री संघ व जिन शासन की शोभा वढ़ाते हुए पूज्य गुरुदेव के पाट को सुशोभित करते हुए समाज एवं राष्ट्र का मार्गदर्शन कर रहे हैं।

आपका जन्म संवत् १९९३ मगसर वदी १३ को गुजरात के पेपरॉल ग्राम में हुआ था। आपके पिता श्री सरुपचंदजी व मातुश्री पार्वतीवाई का परिवार धर्म भावना से अनुप्रणित था। परिजनों ने महोत्सव के साथ वालक का नाम पूनमचन्द रखा था। वालक नाम के अनुरुप दूज के चाँद की भाँति वढ़ता गया। वाल्यकाल में योग्य विद्याध्ययन कर यह बालक प्रगति के पथ पर गति कर रहा था। इसी बीच व्याख्यान बाचस्पति श्रीमद् विजययतीन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. का पेपरॉल नगर में पदार्पण हुआ। गुरुदेव के प्रवचन से यह बालक अत्यन्त प्रभावित हुआ और आप श्री की शरण में अपने आपको अर्पण किया। योग्य शिक्षा पाकर विक्रम संवत् २०१० माघ सुदी ४ को सियाणा (राजस्थान) में दीक्षा ग्रहण की। विक्रम संवत २०४० माघ सुदी १३ भाण्डवपुर (राजस्थान) में आपको सूरि पद प्रदान किया गया। यह संयोग ही है कि आपकी जन्म तिथि १३ है व सूरिपद ग्रहण करने की तिथि भी १३ है। एक और विचित्र संयोग है कि आपका जन्म संवत १९९३ है व गुरु गच्छ परम्परा में आपकी आज्ञा से ९३ साधु-साध्वी जिन शासन को बढ़ा रहे हैं।

आपने देश के १४ प्रान्तों में भ्रमण कर लगभग ९० हजार किलोमीटर की पदयात्राएँ की हैं। आपके सानिध्य में ६० साधु-साध्वियों को नई दीक्षा दिलाई गई है। आपकी निश्रा में सुरत (गुजरात) में दि. ६ दिसम्वर १९९२ को ११ भाई-बहनों द्वारा नई दीक्षा ग्रहण की गई हैं।

आपको हिन्दी, गुजराती, संस्कृत, मालवी, मेवाड़ी, अंग्रेजी, तमिल, तेलगु और कन्नड़ आदि भाषाओं पर अधिकारिक ज्ञान है। आपने जैनागमों का गहन अध्ययन किया है, विभिन्न विषयों पर आपके द्वारा लिखित ७० पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

जैन संस्कृति ने देश को श्रेष्ठ साहित्यकारों की परम्परा दी है। भारतीय संत कवियों के अनुरूप आपने ५१ विषयों में ७०७ दोहे वनाकर जयन्तसेन सतसई का निर्माण किया है, जयन्तसेन सतसई आधुनिक हिन्दी साहित्य की अनुपम कृति है, सतसई सतकाव्य का श्रेष्ठ प्रयोजन प्रीति है और अदृष्ट प्रयोजन कीर्ति है, आपने विश्वपूज्य आचार्य भगवन्त श्रीमद् राजेन्द्रसूरीश्वरजी म.सा. द्वारा लिखित विश्व के अनूठे अभिधान राजेन्द्र कोष के ७ भागों के द्वितीय संस्करण का प्रकाशन का भागीरथी कार्य सम्पन्न किया आपकी प्रेरणा से 'राजेन्द्र ज्योति' नामक विशाल ग्रन्थ का प्रकाशन भी किया गया।

आपके सानिध्य व मार्गदर्शन में देशभर में अखिल भारतीय राजेन्द्र नवयुवक परिषद की २५० से अधिक शाखाओं के कार्यकर्ता समाज संगठन, समाज सुधार, शिक्षा प्रसार, आर्थिक उत्थान के कार्य को अनुशासित संगठित व समर्पित होकर कार्य कर रहे हैं। धर्म ध्वजा से सजग प्रहरी के रूप में आचार्य जिनवाणी का उद्घोष करते हुए गाँव-गाँव नगर-नगर में जन-जन के जीवन में कल्याण भावना भर-ज्ञान का प्रकाश फैला रहे हैं बहुजन हिताय-वहुजन सुखाय की मंगल भावना से आप व्यक्ति के जीवन में जनजागरण का सूत्रपात कर रहे हैं। सत्य व अहिंसा की प्रतिमूर्ति आचार्य श्री का महान् व्यक्तित्व जन-जन की प्रेरणा का केन्द्र वना हुआ है। उत्तर-पूर्व व पश्चिम भारत में भ्रमण के पश्चात् निकट भविष्य में दक्षिण भारत की लम्वी यात्रा करके जिनशासन व गुरुगच्छ की शोभा वढ़ाते हुए महावीर के सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं।

भारतीय ज्योतिष शास्त्रियों के अनुसार आपकी जन्म कुण्डली, दीक्षा कुण्डली व आचार्य पद कुण्डली के ग्रह योग देखने के वाद यह प्रकट होता है कि आप महान आध्यात्मिक अवतारी महापुरूष कहलायेंगे।

ऐसे महान राष्ट्रसंत धर्म सार्थवाह अवतारी महापुरूष जैनाचार्य श्रीमद् जयन्तसेन सूरीश्वरजी म.सा. का राष्ट्रसन्त दिवस मनाने का हमें सौभाग्य प्राप्त हुआ है। ऐसे महापुरूष की ५७ वी जन्म जयन्ती मनाने पर भी अपने-आपको गौरवान्वित महसूस करते हैं व मंगल कामना करते हैं कि आप पूर्णिमा के चाँद की तरह राष्ट्र एवं समाज पर अपना ज्ञानरूपी प्रकाश फैलाकर शासन शोभा में अभिवृद्धि के कार्य निरन्तर करते रहे और विजय वैजयन्ति फैलाते रहें। आपका मंगलकारी आशीर्वाद सदैव राष्ट व समाज को मिलता रहे। आपकी मंगल कामनाओं से भरी यह सतसई एक विश्वशान्ति का विश्वकलश है -

'शान्ति के सब दूत बनो, करो जगत कल्याण।
जयन्तसेन धर्म यही, यह है जिनवर वाण।

● मुनिश्री रत्नसेनविजयजी

क्रिया का मूल्य

दूध में
नींबू के रस की
दो बूंदें गिरते ही
दूध फट जाता है और
मूल्यहीन बन जाता है ।
बस !
पवित्र धार्मिक क्रियाओं में
पौद्गलिक-पदार्थों की लालसा का
रस जुड़ जाता है तो वे
धार्मिक-क्रियाएं भी
वास्तविक फलदायी नहीं बनती हैं ।
और उसी दूध में
थोड़ी सी छाछ डालने पर
वही दूध दही बन जाता है,
धार्मिक-पवित्र क्रियाओं के साथ
क्रिया-बहुमान का सद्भाव जुड़ने पर
वे ही क्रियाएँ
आत्मोन्नति कारक बनती हैं ।

विनम्र बनो

कवि ने ठीक ही कहा है
'झुकता वही है, जिसमें कुछ जान है
अकड़पन तो खास मुर्दे की पहचान है ।'
मुर्दे को तुमने देखा होगा
वह कभी झुकता नहीं है ।
फल आने पर आम्र वृक्ष
जैसे झुकता है, उसी प्रकार
मेधावी व्यक्ति ज्यों-ज्यों
ज्ञान, विद्या, शक्ति और सत्ता
प्राप्त करता है, त्यों-त्यों
वह अधिक नम्र बनता जाता है ।
उछलती कूदती हुई नदी
बड़े बड़े वृक्षों को उखाड़ फेंकती है
परन्तु बेंत को उखाड़ने की
उसमें ताकत नहीं है, क्योंकि
बड़े बड़े वृक्ष अकड़े रहते हैं, जबकि
बेंत तुरंत झुक जाती है ।
जो अकड़ के रहता है, उसका अस्तित्व
धूमिल हो जाता है,
जो विनम्र होता है, उसका अस्तित्व
सदैव बना रहता है ।

ज्ञानकसौटी २१ के उत्तर

५०१) वरकाणा ५०२) वल्लभीपुर ५०३) वक्र एवं जड़ ५०४) वस्तुपाल ५०५) वरख ५०६) वचन ५०७) वनस्पतिकाय ५०८) वचन ५०९) वचन ५१०) वर्णादिक त्रिक ५११) वचनातिशय ५१२) वज्रधर ५१३) वरदत्त कुमार ५१४) वज्रसेन ५१५) वचन ५१६) विपाक दशा ५१७) वृष्णिदशा ५१८) विशाखा ५१९) वीतराग ५२०) वटवृक्ष के फल ५२१) विमलाचल ५२२) विशेषज्ञ, वृद्धानुगत एवं विनयवंत ५२३) वध परिषह ५२४) तंदुल वैयालिय ५२५) विद्या

शब्दसागर इनामी स्पर्धा १४ के उत्तर एवं परिणाम

परिणाम - १) श्री सुमेरमल गोलेचा - मदुराई (सी-५४८) २) कु. संगीता पारसमलजी - मदुराई (सी-) ३) कु. मुन्नी जी. - मदुराई (डी-७२७) ४) श्री नितीनकुमार के. शाह - मदुराई (डी-७७१) ५) कु. शर्मिला जैन - मदुराई (जी-२०५) ६) कु. मंजु पारसमलजी - मदुराई (सी-५३७) ७) कु. संगीता जे. संघवी - थाने (वी-८९) ८) कु. सोमी जैन - बाग (डी-८५७) ९) कु. सोनाली जैन - बाग (सी-११०२) १०) श्री राजेशकुमार जैन - बाग (जी-३१०) ११) श्री आशिषकुमार जैन - बाग (सी-९३९) १२) कु. अंजुबाला डूंगरवाल (पारावाला) - रतलाम (सी-८२२) १३) श्री जितेन्द्रकुमार वी. जैन - थेरगांव (पूना) (सी-१०१५) सभी उत्तीर्ण प्रतियोगियों को पुरस्कार स्वरूप प्रत्येक को दो सौ रूपये का समान भाग २००/१३ = १५ (पन्द्रह रू. नगद) म. आ. द्वारा भेज दिये गए हैं।

उत्तर :- बाएं से दाएं - १)अकेला ३) विजयमंगलम् ७) विष्णु ८) आलोयणा १०) निराकार ११) पंचम १२) रंज १३) दिव १४) खनिज १६) प्रसन्न १९) प्रमार्जन २०) तित्थ २२) उसभ २३) काष्ठ २४) ईहा २५) वरक २७) निडर २९) धरा ३०) जर ३१) हस्तिनापुर ३३) डाकु ३५) सेना ३६) गोरी ३८) मालवा ३९) अभ्यांतर ४०) डीसा।

उपर से नीचे की ओर - २) केश लोचन ३) विष्णु ४) यक्षराज ५) गंधार ६) मरूदेव ७) विणा ८) आपं ९) यम १०) निरंजन १३) दिन्न १४) खमा १५) निर्जन्तुक १६) प्रतिष्ठ १७) सत्थ १८) पउम १९) प्रभव २१) आहार २३) कापराड़ा २४) ईडर २६) रत्नपुरी २७) निज २८) नास्ति ३१) हथुंडी ३२) नागोर ३४) कुमार ३७) सभ्य

१ दिसम्बर से ३१ दिसम्बर १९९२ तक शाश्वत धर्म के बनाए गए सदस्यों की सूची

सदस्य बनाने वाले का नाम	वीस वर्षीय	दस वर्षीय	तीन वर्षीय	कुल सदस्य
श्री जे. के. संघवी - थाने	५	५	३	१३
श्री उच्छवलाल जैन - राणापुर	--	३	५	८
श्री मोहनजी एच. ढालावत - जोगेश्वरी	--	--	८	८
श्री सुरेश समीर - राणापुर	--	१	३	४
श्री अरविन्दजी दोषी - नाडोल	--	--	७	७
श्री अशोक श्री श्रीमाल - टाण्डा	१	--	--	१
श्री रमेश वाडीलाल - सुरत	--	--	३	३
श्री नरेन्द्रकुमारजी धाड़ीवाल - महिदपुर	--	--	३	३
कार्यालय - थाने	--	--	१	१
	६	९	३३	४८

समाचार दर्शन

श्री महाविदेह तीर्थधाम प्रतिष्ठोत्सव : निश्रा पूज्य राष्ट्रसंत श्री

गुजरात के महानगर सूरत से सोलह किलोमीटर दूर बम्वई दिल्ली राष्ट्रीय राजमार्ग क्रं. ८ पर कामरेज चौराहे के पास तापी नदी के निकट एक छोटा-सा ग्राम नवाग्राम।

अव एक श्रद्धापूत विशालतीर्थ के रूप में परिणित हो चुका है श्री महाविदेह तीर्थ धाम के नाम से नवीन संरचित इस तीर्थ पर तीन गगनचुम्बी शिखर स्वर्ण कलशों, स्वर्ण दण्डों तथा विभिन्न ध्वजाओं से सुशोभित आस्था के आकाश की ऊंचाई नाप रहे हैं। मध्य में मुख्य जिनालय है विरहमान तीर्थंकर श्री सीमंधरस्वामी का जिसकी ऊंचाई एक सौ पंद्रह फीट है। अंदर भव्य आसन पर ११ फीट १ इंच उंची दिव्य-भव्य प्रतिमा के रूप में श्री सीमंधरस्वामी की छवि अलौकिक है। इसी मंदिर की प्रतिष्ठा का कार्य पूज्य राष्ट्र संत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी महाराज के वरद हस्त से अंजनशलाका सहित पवित्र अनुष्ठानों के साथ सम्पन्न हुआ। सप्त दिवसीय महोत्सवों का सानिध्य पूज्य राष्ट्रसंत श्री ने प्रदान किया। श्री सीमंधर स्वामी के मंदिर के आसपास लगभग इसी ऊंचाई लेकिन कम आकार के महादेव श्री शंकर तथा वासुदेव श्रीकृष्ण के मंदिरों का निर्माण भी हुआ है। इनके प्रतिछोत्सव भी समान मूहुर्त में सम्पन्न हुए।

श्री महाविदेह तीर्थधाम का निर्माण जय सच्चिदानंद संघ की ओर से हुआ है। इस पर कोई छह करोड़ रूपए की लागत आई है। यह संघ दादा भगवान की आराधना करवाता है तथा उनके उपदेशों का अनुगामी है। पूज्य राष्ट्रसंत श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी महाराज सूरत चातुर्मास मुकाम के लिए विहार करते हुए इस त्रिमंदिर क्षेत्र में पधारे उनके यहां एक दिन स्थिरता की जय सच्चिदानंद संघ के पदाधिकारियों ने मंदिर प्रतिष्ठा व अंजनशलाका करवाने हेतु कई जैनाचार्यों से सम्पर्क किया लेकिन जैसा कि समापन समारोह में संचालक आप्तपुत्र ने वताया कि - "सभी की शर्त उनके नाम की तख्ती लगाने की थी। पूज्य राष्ट्रसंत श्री साहव ने हमारे अनुरोध पर कहा मुझे काम से मतलव है नाम से नहीं" जय सच्चिदानंद संघ के पदाधिकारियों ने आग्रहपूर्ण विनंती करते हुए पांच-छह बार निवेदन किया। बार-बार सूरत चातुर्मास में गए। अत्याग्रह व भावों को देखते हुए पूज्य राष्ट्रसंत श्री ने अपना पवित्र सानिध्य प्रदान करने की स्वीकृति दे दी। जय सच्चिदानंद संघ में आपकी सरलता, मधुरता एवं कर्मण्यता के प्रति अपूर्व श्रद्धा वन गई।

यहां निर्मित जिनालय में श्री सीमंधरस्वामी के अलावा श्री ऋषभदेव, श्री अजितनाथ, श्री पार्श्वनाथ, श्री महावीरस्वामी की प्रतिमाएं तथा श्री सीमंधरस्वामी के यक्ष यक्षिणी की प्रतिमाएं भी प्रतिष्ठित की गई है। मंदिर प्रांगण में विशाल धर्मशाला तथा विशाल भोजनशाला का भी स्थायी निर्माण हुआ है। प्रतिष्ठा कार्यक्रम के अंतर्गत २३ से ३० नवम्बर तक विभिन्न आयोजन हुए। भारी भीड़ अंजनशलाका मंडप में एकत्र रहती थी। सजे संवरे मंच पर जिनेश्वर देवों के पंच कल्याण हुए। रात्रि को भक्ति का कार्यक्रम होता था। कार्यक्रमों के लिए विशाल मंडप

की रचना की गई थी। रात्रि में विद्युत छटा देखते ही बनती थी। प्रतिदिन हजारों की संख्या में भीड़ वढ़ती जा रही थी। अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के स्वयंसेवकों का भी आगमन हो रहा था। राष्ट्रीय महामंत्री श्री सुरेन्द्र लोढ़ा स्वयंसेवकों का मार्गदर्शन कर रहे थे।

सारा कार्यक्रम सुनियोज़ित रूप में सम्पन्न हुआ।

प्रतिष्ठा का शुभदिन ३० नवम्बर था। प्रातः से ही चारों ओर हर्ष का वातावरण फैला हुआ था। हजारों श्रद्धालुओं की भावना साकार हो रही थी। चारों ओर जनसमूह फैला हुआ था। ध्वनि प्रसारक यंत्रों से श्लोकों की गूंजन हो रही थी। टीवी क्लोज सर्किट से जुड़े टीवी सेटों पर पूरा दृश्य उतर रहा था। तभी पूज्य राष्ट्रसंत श्री की प्रभावशाली मधुरवाणी से श्लोकों की ध्वनि चारों ओर फैली। जय-जयकार के नारे लगे तथा आकाश में हेलिकॉप्टर ने मंडरा कर लगातार पुष्पवर्षा की। श्री सीमंधरस्वामी के जिनालय में मूलनायक सहित जिन विम्वों की प्रतिष्ठा निर्विघ्न सम्पन्न होने पर हर्षोल्लास की लहर चारों ओर फैल गई। श्री सीमंधरस्वामी के नैत्र से अमीधारा वरसने लगी। यह देखने के लिए श्रद्धालुओं का आगमन हुआ। इसी मूहुर्त में श्री शंकर मंदिर की प्रतिष्ठा काशी से आए वेदांताचार्य श्री नरेशचंद्रजी नटवरलालजी उपाध्याय के नेतृत्व में तथा श्रीकृष्ण मंदिर का प्रतिष्ठा तामिलनाडू के तिरूपति वालाजी से आए श्री वरदाराजन के नेतृत्व में सम्पन्न हुई।

प्रतिष्ठोत्सव के पश्चात जय सच्चिदानंद संघ की ओर से पूज्य राष्ट्रसंत श्रीमद विजय जयंतसेन सूरीश्वरजी महाराज के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन का समारोह विशाल जन मेदिनी के मध्य हुआ। संघ के अग्रणीय श्री जी. एस. शाह : (अहमदावाद) ने भाषण देते हुए कहा कि पूज्य राष्ट्रसंतश्री के रूप में साक्षात् मूर्ति हमें प्राप्त हो गए हैं। आपकी सरलता तथा आपका वात्सल्य अनूठा है। संघ की प्रार्थना को आपने स्वीकार कर हमें उपकृत किया है। समारोह में श्री नरेशचंद्रजी उपाध्याय, श्री बरदराजनजी, अहमदावाद के संघपति-श्री खैतशी भाई, नरेश जी भाई शाह, अमेरिका के सदस्य-श्री वसंतभाई पटेल आदि के भाषण भी हुए। पूज्य राष्ट्रसंत श्री ने फरमाया कि यह प्रतिष्ठोत्सव योगानुयोग है। श्री सीमंधरस्वामी के प्रति सच्ची श्रद्धा रखकर इस तीर्थ पर शास्त्रविहित पूजा उपासना हो किसी प्रकार की विराधना नहीं की जाए। इस तीर्थ की महत्ता यहां होनेवाली धर्म प्रभावना से ही होगी। श्री वसंतभाई पटेल अमेरिका ने घोषित किया कि इस तीर्थ प्रांगण में कंदमूल का उपयोग वर्जित रहेगा। श्री खेतशीभाई ने पूज्य राष्ट्रसंत श्री को काम्वली वहोरा कर सम्मानित किया।

सप्त दिवसीय कार्यक्रमों में दादा भगवान वीतराग ट्रस्ट की ओर से पूज्य राष्ट्रसंतश्री द्वारा लिखित जीवन मंत्र, मधुकर मौक्तिक, प्रवचन सुधा आदि पांच पुस्तकों का विमोचन किया गया। इस अवसर पर पूज्य राष्ट्रसंत के गीतों के कैसेट का विमोचन श्री वसंतभाई पटेल ने किया। कैसेट का नाम 'श्री सीमंधर जिनवंदना' है इन्हें भारी संख्या में श्रद्धालुओं ने क्रय किया।

कार्यक्रम के आगेवान श्री रवेतशीभाई शाह, श्री जी. एस. शाह, श्री वसंतभाई पटेल (अमेरिका), श्री प्रकाशजी जैन, श्री कनुभाई, श्री चंदूभाई शाह, आदि थे। इस कार्यक्रम में आप्तपुत्र गण श्रीकुलदीपकजी, डॉ. शैलेशजी, श्री जयमलजी शाह, श्री महेशभाई शाह, आदि विशिष्ट थे।

उत्सव में क्रियाकारक श्री हेमचंद्रजी यती (सायला), संगीत संयोजन जयंतसेनसूरि आर्केस्ट्रा पार्टी अहमदावाद का था तथा डेकोरेशन श्री मुकुन्दभाई (सुमेरपुर) का था। श्री प्रकाश वैंड रतलाम की ध्वनियां फैलती रही। कार्यक्रम में अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के अध्यक्ष-श्री सेवन्तीभाई एम. मोरखिया भी पधारे।

पूरा कार्यक्रम निर्विघ्न तथा शान से सम्पन्न हुआ।

आचार्य श्री का ५७ वें वर्ष में मंगल प्रवेश

सुरत - राष्ट्रसन्त आचार्य प्रवर श्री जयन्तसेनसूरीश्वरजी म. सा. के कार्तिक वदी १३ रविवार दि. २२.११.९२ को ५७ वें वर्ष में मंगल प्रवेश निमित्त जन्मदिन बधाई कार्यक्रम के अंतर्गत सनातन हॉल में जैनधर्म के विद्वान पंडितों एवं नगर की सभी धार्मिक पाठशालाओं के शिक्षक-शिक्षिकाओं का बहुमान किया गया

शासनप्रभावना के विविध कार्यक्रम

आचार्य श्री गुणरत्नसूरिजी की निश्रा में लुणावा भद्रंकर नगर में नागेश्वर पार्श्वनाथ तीर्थ में पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक अवसर पर अट्ठम व एकासणे की सामूहिक आराधना सम्पन्न हुयी। २५ दिसम्वर से सेवाडी में पंचान्हिका महोत्सव सम्पन्न करवा कर आपकी निश्रा में २९ जनवरी को मेहसाणा में सीमाकुमारी की दीक्षा व १२ फरवरी को सिरोडी में वीणा कुमारी की व २४ फरवरी को पांथावाडा में हिरलकुमारी की दीक्षा होगी।

आलोट (म. प्र.) में प्रतिष्ठा महोत्सव

राष्ट्रसंत पू. आचार्य श्री जयन्तसेनसूरिजी म. सा. द्वारा प्रदत्त मुहुर्तानुसार आप ही के आज्ञानुवर्ती शिष्य पू. मुनिराज श्री पद्मरत्नविजयजी, श्री विद्वदरत्नविजयजी, श्री हर्षित रत्नविजयजी म. सा. आदि ठाणा की निश्रा में ३०-११-९२ को श्री सुमतिनाथ जिनविम्व की प्राणप्रतिष्ठा निमित्त ३ दिवसीय महोत्सव का आयोजन विविध पूजन, अभिषेक आदि कार्यक्रमों का आयोजन दि. २८-११-९२ से ३०-११-९२ तक किया गया।

मुनिराज श्री जयानंदविजयजी के संभवित कार्यक्रम

आचार्य श्री जयन्तसेनसूरीश्वरजी के आज्ञानुवर्ती विद्वान मुनिराज श्री जयानंदविजयजी की निश्रा में गुरू सप्तमी सियाणा में भव्य रूप से मनायी गयी। ९ जनवरी से १८ जनवरी तक वागरा में अट्ठाई महोत्सव में निश्रा प्रदान कर पुनः सियाणा पधारेंगे, जहाँ माघ सुदी ५ दि. २९-१-१९९३ श्री सरेमलजी भागवती प्रवज्या ग्रहण करेंगे। माघ सुदी १३ दि. ५-२-१९९३ को सांथू में आपकी निश्रा में जिन विम्व प्रवेश विधि होगी। पुनः सियाणा से प्रास्थित होनेवाले वस यात्रा, प्रवास निमित्त आयोजित अट्ठाई महोत्सव में निश्रा प्रदान कर आप भीनमाल पधारेंगे। वहॉ से २० फरवरी को आबु तीर्थ छ 'रि' पालित संघ प्रयाण होकर माल ३ मार्च को होगी। थराद, डीसा, होते हुए चैत्री ओली श्री शंखेश्वर महातीर्थ में होगी। वहॉ से वैशाख सुदी ६ बुधवार दि. २८-४-९३ को सांथू में आपकी निश्रा में प्रतिष्ठा सम्पन्न होगी।

"राष्ट्रसंत श्री जयन्तसेनसूरि के जीवन से पुरूषार्थ की प्रेरणा मिलती है"

- मुनि श्री पद्मरत्नविजयजी

"गुरूदेव महापूजन व फोल्डर का विमोचन"

महिदपुर:- "जीवन उनका ही धन्य है जिसने पुरूषार्थ किया। ऐसे पुरूषार्थी राष्ट्रसन्त जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म.सा. का ५७ वां जन्म दिवस हमें पुरूषार्थ की प्रेरणा दे रहा है।"

उक्त विचार तपस्वी मुनि श्री पद्मरत्नविजयजी म. सा. ने त्रिस्तुतिक जैन श्रीसंघ व अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद द्वारा राष्ट्रसन्त के ५७ वें जन्म दिवस पर आयोजित विशाल जनसभा को सम्वोधित करते हुए व्यक्त किये। आपने कहा कि पृथ्वी पटल पर अनेक महापुरूष अवतरित हुए हैं। इसी श्रृंखला में अनेक गुणों की गुण ग्राह्यता के कारण जैनाचार्य श्रीमद् जयन्तसेनसूरीश्वरजी म. सा. क्रमशः मुनि पद, आचार्य पद व राष्ट्रसन्त की उपाधियों से विभूषित होकर विश्व के जन-जन को आत्मवोध का दिव्य सन्देश दे रहे है।

इस अवसर पर मुनि श्री विद्वदरत्नविजयजी म. सा. ने कहा कि राष्ट्रसन्त का जीवन मिश्री के समान मधुर है व सद्व्यवहार की प्रेरणा प्रदान करता है। साध्वी श्री कल्पलताश्रीजी म. सा. एवं वैराग्यगुणाश्रीजी म. सा. ने राष्ट्रसन्त का गुणगान करते हुए उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना की।

इस अवसर पर राष्ट्रसन्त के जीवन चरित्र पर श्री नरेन्द्रकुमार धाड़ीवाल द्वारा लिखित व श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद द्वारा प्रकाशित फोल्डर का विमोचन मुख्य अतिथि श्री बाबुलाल कोठारी पारा वाले ने किया।

धर्मसभा को पूर्व विधायक श्री आनन्दीलाल छजलाजी ने सम्वोधित करते हुए कहा कि राष्ट्रसन्त ने लगभग ९० हजार किलोमीटर की पदयात्रा करके जनमानस को राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यों का बोध कराते हुए भारत के हर कोने में धर्म का प्रचार प्रसार किया है।

श्रीसंघ प्रमुख व परिषद के वरिष्ठ परामर्शदाता श्री सरदारमलजी मोदी ने विश्व प्रसिद्ध अभिधान राजेन्द्र कोष पर माल्यार्पण कर कार्यक्रम के आयोजकों को धंन्यवाद दिया। परिषद अध्यक्ष-श्री माणकलाल छाजेड़ ने कार्यक्रम का संचालन किया तथा अभिभाषक श्री श्यामसुन्दर बांठिया ने आभार व्यक्त किया।

दोपहर में मुनि मण्डल व साध्वी मण्डल के सानिध्य में यहां पर प्रथम वार राजेन्द्र सूरि गुरूदेव की महापूजन पढ़ाई गई। महापूजन के लिये विशाल मण्डलजी की रचना की गई जो सभी के आकर्षण का केन्द्र रहा। श्री सिद्धचक्र संगीत मण्डल ने पूजन पढ़ाई। महापूजन पढ़ाने का लाभ मोतीलाल धाड़ीवाल परिवार ने लिया।

शाश्वत धर्म के ग्राहक बनाकर सम्यग्ज्ञान के प्रचार-प्रसार में सहयोग दीजिये।

त्रिस्तुतिक जैन संघ के इतिहास में प्रथम बार
पू. राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्री मधुकरजी की निश्रा में
सुरत में ऐतिहासिक ९ मुमुक्षुओं ने दीक्षा अंगीकार की

सुरत - आज से ८८ वर्ष पूर्व दादा गुरुदेव श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी ने सुरत नगर में भव्य यशस्वी चातुर्मास किया था। उन्ही की भव्य परम्परा में वर्तमानाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी आदि मुनिमंडल एवं साध्वीमंडल का इस वर्ष सुरत में चातुर्मास सानंद अनेकानेक धर्म आराधनाओं एवं शासन प्रभावनाओं के साथ सम्पन्न हुआ। इसी कड़ी में समस्त त्रिस्तुतिक जैन संघ के इतिहास में यहाँ ९ मुमुक्षु भाई-बहनों ने भगवती दीक्षा अंगीकार की। मगसर सुदी १० (द्वितीय) शनिवार दि. ५-१२-९२ को दयालजी आश्रम, कैलासनगर के विशाल पांडाल में दीक्षार्थियों का वरघोडा प्रातः ९ वजे पहुंचने के वाद पू. आचार्यदेव की निश्रा में नाण समक्ष क्रिया प्रारंभ हुयी। यथा समय सभी को रजोहरण अर्पित किया गया, जिसे पाकर असीम आनंद से मुमुक्षु भाई-वहन झूम उठे। आज भौतिक युग में मानव भौतिक साधनों के लिये उन्हें पाने की इच्छा में आंखे मूंद कर पागल होकर दौड़ रहा है ऐसे समय में ये नवयुवक भाई-वहन सारे भोगों को तृण के समान समझकर उसे खुशी के साथ त्यागकर सन्यास की ओर मंगल प्रस्थान कर रहे थे। उनकी हिम्मत व भावना देखकर जनसमुदाय स्तब्ध होकर नमन कर रहा था। थोड़े ही समय वाद दीक्षार्थी मुमुक्षु भाई-बहन आचार्यश्री द्वारा प्रदत्त रजोहरण के साध साधु परिवेश में मंच पर आते ही दीक्षार्थी के जय-जयकार से सारा वातावरण गुंज उठा। पुनः क्रिया के पश्चात् आचार्य श्री ने नूतन दीक्षार्थीयों की नामकरण विधि की। विविध महानुभावों ने उन्हें संयम उपकरण वोहराने का लाभ लिया।

दूसरे दिन प्रातः ४.३० वजे पूज्य आचार्यश्री ने नव दीक्षितों के साथ धुमधाम से पुनः नगर प्रवेश किया।

इसके पूर्व दि. ४-१२-९२ को दीक्षार्थियों के वर्षीदान का भव्य वरघोड़ा निकाला गया। जो सूरत के मुख्य बाजारों से दान एवं त्याग की महिमा प्रसारित करते हुए निकला।

दीक्षार्थियों का परिचय

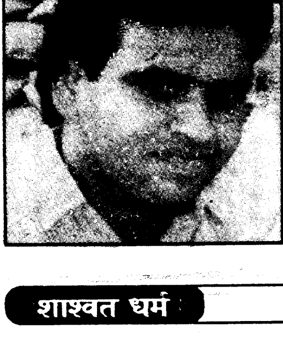

१) श्री विजयकुमार मोदी (मुनिश्री-दर्शनरत्न विजयजी)

उम्र - २० वर्ष, **निवासी** - थराद, **माता** - सवितावहन मोदी, **पिता** - फोजालालजी मोदी **ज्ञानार्जन** - पंच प्रतिक्रमण, चार प्रकरण, सिंदूर प्रकरण, दशवैकालिक सूत्र, नवस्मरण, संस्कृत वुक, जैन विशारद की उपाधि, नवकार आराधना।

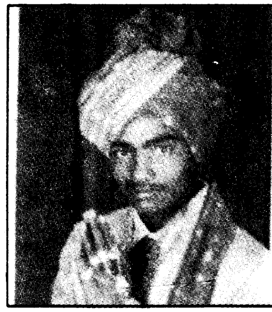

२) श्री नितिनकुमार वोहेरा (मुनिश्री-चारित्ररत्नविजयजी)

उम्र - १८ वर्ष, **निवासी** - नारोली, **माता** - तारावहन वोहेरा, **पिता** - किर्तिलालजी वोहेरा **ज्ञानार्जन** - पंच प्रतिक्रमण, श्रमण क्रिया. जीव विचार. आदि प्रकरण, नवकार आराधना।

३) कुमारी अलकावहन वोरा (साध्वीश्री-अध्यात्मकलाश्रीजी)

उम्र - २० वर्ष, **माता** - शांतावहन वोरा, **पिता** - खुवचंदभाई वोरा, **ज्ञानार्जन** - चार प्रकरण, छः कर्मग्रन्थ, वीतराग स्तोत्र, वैराग्य शतक, सिंदुर प्रकरण, दशवैकालिक. तथा नवकार आराधना

४) कुमारी अलकावहन वोहेरा (साध्वीश्री-अर्पितकलाश्रीजी)

उम्र - २६ वर्ष, **माता** - जीवीवहन वोहेरा, **पिता** - सगथमलजी वोहेरा **ज्ञानार्जन** - चार प्रकरण, छः कर्मग्रन्थ, वैराग्य शतक. सिंदुर प्रकरण, ज्ञानासार, तत्त्वार्थ, वीतराग स्तोत्र, नवकार आराधना।

५) कुमारी नयनावहन वोरा (साध्वीश्री-निरुपमकलाश्रीजी)

उम्र - २५ वर्ष, **माता** - मोधीवहन वोरा, **पिता** - जयंतीलालजी वोरा, **ज्ञानार्जन** - पंच प्रतिक्रमण, नवस्मरण, चार प्रकरण, छः कर्मग्रन्थ, वैराग्य शतक, वीतराग स्तोत्र. तत्त्वार्थ. प्राकृत आदि।

६) कुमारी अलकावहन दोशी (साध्वीश्री-अपूर्वकलाश्रीजी)

उम्र - २४ वर्ष, **माता** - मोधीवहन दोशी, **पिता** - मफतलालजी दोशी, **ज्ञानार्जन** - पंच प्रतिक्रमण, नवस्मरण, छः कर्मग्रन्थ. वैराग्य शतक. ज्ञानासार, चार प्रकरण, तत्त्वार्थ, नवकार आराधना।

७) कुमारी मीनाबहन वोहेरा (साध्वीश्री-मनोहरकलाश्रीजी)

उम्र - २४ वर्ष, **माता** - सविताबहन वोहेरा, **पिता** - रमणलालजी वोहेरा, **ज्ञानार्जन** - पंच प्रतिक्रमण, चार प्रकरण, छः कर्मग्रन्थ, वैराग्य शतक, सिंदुर प्रकरण, ज्ञानासार, वीतराग स्तोत्र, उपदेश माला, तत्त्वार्थ, दशवैकालिक, श्रमण क्रिया, नवकार आराधना।

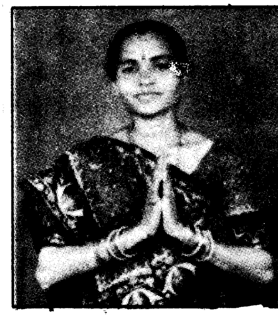

८) कुमारी नयनाबहन वोहेरा (साध्वीश्री-निरंजनकलाश्रीजी)

उम्र - २२ वर्ष, **माता** - सविताबहन वोहेरा, **पिता** - रमणलालजी वोहेरा, **ज्ञानार्जन** - पंच प्रतिक्रमण, चार प्रकरण, छः कर्मग्रन्थ, वैराग्य शतक, सिंदुर प्रकरण, ज्ञानसार, वीतराग स्तोत्र, उपदेश माला, तत्वार्थ, दशवैकालिक, श्रमण क्रिया, नवकार आराधना।

९) कुमारी रेखाबहन सियाल (साध्वीश्री-चिन्तनकलाश्रीजी)

उम्र - १७ वर्ष, **निवासी** - पारा, **माता** - मानकुँवरबाई सियाल, **पिता** - कस्तुरचंदजी सियाल, **ज्ञानार्जन** - पंच प्रतिक्रमण, नव स्मरण, चार प्रकरण, तीन भाग्य कर्मग्रन्थ, दशवैकालिक, श्रमण क्रिया, नवकार आराधना।

सुरत में गुरुसप्तमी का आयोजन

राष्ट्रसंत, वतमानाचार्य श्रीमद् विजयजयन्तसेनसूरीश्वरजी आदि ठाणा की निश्रा में प्रातः स्मरणीय दादा गुरुदेव श्रीमद् विजयराजेन्द्रसूरीश्वरजी की जन्म-स्वर्गारोहण तिथि (पौष सुदी ७ गुरु सप्तमी) ३१ दिसम्बर को सुरत में हर्षोल्लास पूर्वक मनायी गयी। प्रातः आयोजित गुणानुवाद सभा में पूज्य आचार्यश्री, मुनिश्री हेमरत्नविजयजी, सिद्धरत्नविजयजी, प्रशान्तरत्नविजयजी, साध्वीजीश्री दर्शितकलाश्रीजी ने गुरुदेव के जीवन के विविध प्रसंगो पर प्रकाश डाला। श्री मफतलाल संघवी, श्री भूपेन्द्र भणशाली, श्री पोपटभाई धरू, श्री रमेशकुमार दोशी ने भी प्रसंगोचित दो शब्द कहकर श्रद्धांजली अर्पित की।

गुरुदेव की वासक्षेप पूजा का लाभ बलू हालचंद मणीलाल परिवार एवं चित्र पर माल्यार्पण पारेख केशवलाल खेतशीभाई परिवार ने किया। श्री अभिधान राजेन्द्रकोष की वासक्षेप पूजा भी की गयी। गुरू आरती का लाभ जावरा संघ के प्रतिनिधियों ने लिया।

दोपहर गुरुदेव की अष्टप्रकारी पूजा व रात्रि भावना का लाभ पारेख केशवलाल खेतशीभाई परिवार ने लिया। श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद, राजस्थान प्रदेश संगीत मंडल ने पूजा एवं भावना में भक्ति रंग जमाया।

समाचार - सार

श्री मोहनखेड़ा तीर्थ - गुरुदेव राजेन्द्रसूरिजी के जन्म-स्वर्गारोहण दिवस (पौष सुदि ७) को हजारों गुरुभक्तों ने आकर श्रद्धांजली अर्पित की। रात्रि आरती का लाभ शा. पारसमलजी जेठमलजी (मूनलाइट इलेक्ट्रीकल्स - मद्रास) कवराड़ा वालों ने लिया।

मोहने (महाराष्ट्र) - प्रति वर्ष की तरह इस वार भी गुरु जयन्ति का कार्यक्रम साध्वीजी श्री पुष्पाश्रीजी की निश्रा में आयोजित किया गया। प्रातः गुरु गुणानुवाद सभा, अष्ट प्रकारी पूजा, शोभा यात्रा एवं गुरु आरती में कई गुरुमक्तों ने लाभ लिया।

श्री मोहनखेडा तीर्थ - श्री आदिनाथ राजेन्द्र जैन श्वेताम्वर पेढी ट्रस्ट के तत्वावधान में जेठ सुदी ११ को अंजनशलाका प्रतिष्ठोत्सव आयोजित किया गया है।

वाकरा रोड़ - श्री तीर्थेन्द्रसूरि स्मारक संघ ट्रस्ट के तत्वावधान में आचार्य श्री लब्धिचंद्रसूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में श्री सिद्धाचल महातीर्थ छ 'रि' पालक संघ माघ सुदी १३ शुक्रवार दि. ४-२-९३ को प्रस्थान करेगा। तीर्थमाला चैत्र सुदी १ को सम्पन्न होगी।

भरतपुर - गुरुदेव श्री राजेन्द्रसूरिजी की जन्मभूमि भरतपुर में गुरू जयन्ति पूज्य आचार्यदेव श्री जयन्तसेनसूरिजी की प्रेरणा से भव्य रूप से मनायी गयी। गुरूदेव की अष्टप्रकारी पूजा, जाप, गुणानुवाद सभा, विधवाओं व असहायों को सिलाई मशीन व कम्वल वितरण, श्री राजेन्द्रसूरि जैन धार्मिक पाठशाला पुरस्कार वितरण, स्वामी वात्सल्य एवं रात्रि भक्ति आदि कार्यक्रम सानंद सम्पन्न हुए।

गारीयाधार - आचार्य श्री पुण्यानंदसूरीश्वरजी आदि ठाणा की निश्रा में श्री सिद्धाचलजी छ 'रि' पालक संघ १ दिसम्वर को प्रयाण कर ४ दिसम्बर को तीर्थ माला हुयी।

गुम्मीलेरू तीर्थ - आचार्य श्री वारिषेणसूरिजी की निश्रा में पोष कृष्णा १० को पार्श्वनाथ भगवान के जन्मोत्सव निमित्त अट्ठारह अभिषेक का कार्यक्रम संपन्न हुआ।

श्री शत्रुंजय तीर्थ - बाकरा निवासी उकचंदजी जुगराजजी सालेचा परिवार की ओर से आयोजित नवाणुं यात्रा की पुर्णाहुति निमित्त पंचान्हिका महोत्सव ४ जनवरी से ८ जनवरी तक सम्पन्न हुआ।

इन्दौर - तिलकेश्वर जैन युवा संघ की तृतीय वार्षिक साधारण सभा श्री उत्सवलाल जैन की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई जिसमे वर्ष १९९२-९३ हेतु कार्यकारिणी के चुनाव में अध्यक्ष-प्रफुल्लकुमार जैन, सचिव-श्री विनोदचंद्र कोठारी, कोषाध्यक्ष-श्री सुरेन्द्रकुमार मेहता सर्वानुमति से निर्वाचित किये गए।

महिदपुर - राष्ट्रसंत पूज्य आचार्य श्रीमद् जयंतसेनसूरिजी म.सा. की आज्ञानुवर्ती साध्वी श्री कल्पकताश्रीजी म.सा. आदि ठाणा ५ का चार्तुमास सानन्द सम्पन्न हुआ। विहार के अवसर पर स्थानीय क्षीरसागर पर सामूहिक देववन्दन एवं स्वामी वात्सल्य का कार्यक्रम सानन्द सम्पन्न हुआ। पू. साध्वीश्री का विहार नागेश्वर तीर्थ की ओर हुआ।

इन्दौर - पू. आचार्य श्री पुष्पदंतसागरजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में दि. २५-१२-१९९२ से ३१-१२-१९९२ तक ध्यान ज्ञान शिविर एवं श्री सौरभसागरजी म.सा. की भव्य दीक्षा समारोह जैन कालोनी में आयोजित किया गया।

कुन्दकुन्दनगर (तामिलनाडू) - श्री आचार्य कुन्दकुन्द शिक्षा संस्थान द्वारा पू. गुप्तिसागर

संलेखना समाधी का चतुर्थ स्थापना दिवस धरु शांतिलाल एम. भयानी की अध्यक्षता में दि. २८-११-१९९२ को अशोक कॉम्पलेक्स में मनाया गया। इस अवसर पर स्कुल के छात्रों को पुरस्कार एवं प्रमाणपत्र वितरित किये गए।

द्रक्षारम - पू. आचार्य श्री वारिषेणसूरिजी म. सा. आदि ठाणा की निश्रा में ऋषभदेवादि जिन बिम्ब, ध्वजादंड, कलश रोपण, प्रतिष्ठा महोत्सवादि निमित्ते नव्हान्हिका महोत्सव का आयोजन विविध धार्मिक कार्यक्रमों के साथ मनाया जाकर दि. ३०-११-९२ को प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई। एवं दि. १-१२-१९९२ को द्वारोद्घाटन किया गया।

विशाखापट्टनम - पू.आ. श्री वारिषेणसूरिजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में वैशाख सुदी ६ को अंजनशलाका एवं प्रतिष्ठोत्सव मनाया जाएगा।

अमलापुर - पू.आचार्य श्री वारिषेणसूरिजी म. सा. की प्रेरणा से मौन एकादशी उपासना तप पूजन भक्तिभाव के साथ मनाई गई।

श्री शंखेश्वरतीर्थ - पू.आचार्य श्री प्रेमसूरिजी म. सा. आदि ठाणा की निश्रा में पन्यास, गणीं एवं दीक्षा महोत्सव, वरसीदान का वरघोड़ा स्वामीवात्सल्य एवं अन्य विविध धार्मिक कार्यक्रम सह नव्हान्हिका महोत्सव सानन्द सम्पन्न हुआ।

विजयवाड़ा - स्थानीय श्री राजेन्द्रसूरि जैन महिला मंडल द्वारा श्री मुक्ति बालमंडल की स्थापना पू. साध्वी श्री मुक्तिश्रीजी म. सा. की निश्रा में की गई।

वम्बई (मझगांव) - पू.आचार्य श्री नित्योदय सागरसूरिजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में स्थानीय श्री वासुपूज्यस्वामी जिन-मन्दिर की २३ वीं सालगिरह निमित्ते जिन भक्ति स्वरूप श्री शांतिस्नात्र पूजा सह पंचान्हिका महोत्सव (२५-११-९२ से ३०-११-९२ तक) सानन्द सम्पन्न हुआ।

सांचोर - पू. गणिवर्य श्री मणिप्रभसागरजी म. सा. आदि ठाणा की निश्रा एवं श्री गुमानमलजी लोढ़ा (सांसद) की अध्यक्षता में पू.आचार्य श्री कांतिसागरसूरिजी म. सा. की सातवीं पुण्य तिथी मनाई गई। दीक्षार्थी बहन श्री मधु गांधी का श्री संघ की ओर से वर्षीदान का वरघोड़ा निकाला गया एवं दीक्षार्थी बहन तथा उनके माता-पिता एवं श्री लोढाजी एवं अन्य अतिथिगण का अभिनन्दन स्थानीय खरतरगच्छ की ओर से किया गया।

राजमहेन्द्री - आचार्य श्री वारिषेणसूरिजी म.सा. की ९१ वीं ठाम चौविहार ओली के पारणे निमित्त २ जनवरी को सामूहिक आयंबिल एवं ३ जनवरी को भक्तामर पूजन पढाया गया।

हुवली - श्री जैन समाज एवं राजस्थान युथ फेडरेशन द्वारा १३ दिसम्बर को दंगा पीड़ितों को चाँवल एवं दाल निःशुल्क वितरीत की गयी।

चितलवाना - गणिवर्य श्री मणिप्रभसागरजी म. सा. की निश्रा में ४ दिसम्बर को कुमारी मधु गांधी की दीक्षा सम्पन्न हुयी। नूतन साध्वीजी का नाम साध्वी श्री मित्रांजनाश्रीजी घोषित किया गया।

उदयपुर - श्रमण संघ के तृतीय पट्टधर के रूप में आचार्य श्री देवेन्द्रमुनि का चादर समारोह २८ मार्च को सम्पन्न होगा।

सुमेरपुर - आचार्य श्री गुणरत्नसूरिजी म. के शिष्य मुनिश्री मुनिशरत्नविजयजी की निश्रा में ३० नवम्बर को भगवान महावीर अस्पताल में महावीर स्वामी जिनालय का शिलान्यास सम्पन्न हुआ।

जंडिवालागुरू - पंजाब राज्य के नगर में १२ वर्षों बाद श्री कमलमुनि 'कमलेश' की निश्रा में जैन दिवाकर श्री चौथमलजी म.सा.

की ५२ वीं पुण्यतिथि निमित्त धार्मिक कार्यक्रम का आयोजन हुआ। पंच दिवसीय कार्यक्रम के अंतर्गत स्तवन प्रतियोगिता, आयंबिल, सामायिक एवं अहिंसा सम्मेलन आयोजित किये गये। तरन-तारन, पट्टी, बटाला, गुरुदासपूर, पठान कोट, आदि क्षेत्रों में मुनिश्री विहार कर निडरता व निर्भिकता का परिचय देते हुए लोगों में सद्भाव, शांति जगाने का अनुकरणीय प्रयास कर रहे हैं।

मारवाड जंक्शन - शा.मिश्रीमलजी वक्षीरामजी ढेलरिया वोरा द्वारा श्री पद्मसूरीश्वरजी की निश्रा में आयोजित जिनेन्द्र विहार में उपधान तप की मालारोपण का कार्यक्रम १ जनवरी को सानंद सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर अष्टान्हिका महोत्सव के साथ २४ छोड़ का उद्यापन भी रखा गया था।

गोवा - वाटर ऑफ लाइफ फाउन्डेशन (इंडिया) गोवा विभाग द्वारा ३० व ३१ जनवरी को प्रथम अखिल भारतीय स्वमूत्र चिकित्सा (शिवाम्बु कल्प) सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है। जिसमें कई एलोपेथी, होमिओपेथी डिग्रीधारी डाक्टर इस पद्धति से संबंधित अपने अनुसंधानपूर्ण निवंध प्रस्तुत करेंगे।

हुवली - श्री राजेन्द्रसूरीश्वरजी जैन श्वेताम्वर ट्रस्ट के तत्वावधान में गुरूदेव राजेन्द्रसूरिजी की जन्म स्वर्गारोहण जयंति पौष सुदी ७ (गुरू सप्तमी) को निकटवर्ती ग्राम बुडरसिंगी में मेला सम्पन्न हुआ। समारोह में मानव-मानव में प्रेम व शांति बनाये रखने के लिये गोष्ठी का आयोजन किया जाता है। इस अवसर पर सर्वधर्म के अध्यक्ष, डाक्टर, अध्यापक, समाज के कार्यकर्ताओं आदि का सन्मान किया जाता है।

आहोर - कोठारी अनोपचंदजी हंजारीमलजी एवं उनकी धर्मपत्नी प्यारीवाई के आत्मश्रेयार्थ मुनिराज श्री नरेन्द्रविजयजी ने २१ दिसम्वर को पद्मावती सुनायी।

इसके पूर्व दि. १९-१२-९२ को पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक निमित्ते भव्य शोभा यात्रा निकाली गयी व गोड़ी पार्श्वनाथ जिनालय में पूजा पढायी गयी।

कराड - गुरू सप्तमी निमित्त श्री महावीर स्वामी जैन मंदिर में श्री राजेन्द्रसूरि अष्ट प्रकारी पूजा श्री सोहनराजजी पारसमलजी गादिया आहोरवालों की ओर से पढ़ायी गयी। सुंदर आंगी रचाई गयी।

नागदा - नवनिर्मित श्री शांतिनाथ जैन मंदिर एवं गुरूमन्दिर मे गुरूसप्तमी के अवसरपर सामूहिक पूजन एवं दोपहर को गुरूदेव पूजन तथा रात्री को गुरूधुन एवं भक्ति का आयोजन श्री राजेन्द्रसूरि जैन ज्ञान मंदिर न्यास के तत्वावधान में स्थानीय महावीर मंडल द्वारा किया गया।

मद्रास - पू. साध्वीश्री महेन्द्रश्रीजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में स्थानीय श्री राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट की ओर से श्री अट्ठारह अभिषेक, श्री शांतिस्नात्र महापूजन एवं गुरूसप्तमी निमित्त अष्टान्हिका महोत्सव सानन्द मनाया गया।

मुद्देविहाल - स्थानीय जैन श्री संघ द्वारा गुरुसप्तमी के अवसर पर पंच कल्याणक पूजन एवं गुरुभक्ति का आयोजन किया गया।

बड़ीसादड़ी - श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ द्वारा नवनिर्मित श्री प्रतापमुनि ज्ञानालय का उदघाटन समारोह पू. श्री रमेशमुनि आदि ठाणा एवं पू. साध्वी श्री सज्जन कुंवरजी म.सा. आदिठाणा की निश्रा में १० जनवरी ९३ को सानन्द सम्पन्न हुआ।

गुन्टुर - पू. मुनिराज श्री नंदविजयजी म.सा. की निश्रा में गुरुसप्तमी के अवसर पर विशाल चल समारोह एवं विकलांग को तिपहिया वाहन एवं निर्धन छात्रों को छात्रवृत्ति प्रदान की गई तथा गुरुदेव की पूजा एवं अंगरचना का आयोजन किया गया।

परिषद के प्रांगण से

आदरणीय परिषद वंधुओं! सादर जयजिनेन्द्र!

आज के युग में धार्मिक शिक्षा के महत्व को वार-वार दुहराया गया है। इसके विना नई पीढ़ी को संस्कार प्राप्त नहीं हो सकते। जीवन की सार्थकता उसे मूल्यों के अनुसार ढालकर जीना है। मूल्यों का ज्ञान तथा उनके प्रति प्रतिवद्धता संस्कारों से ही आती है। आज मानव अविवेकी वनकर जिस तरह हिंसक वन वैठा है तथा अपने आपको भूला वैठा है, उसका कारण धर्म के प्रति श्रद्धा का अभाव एवं उसे जीवन में उतारने की अन्तप्रेरणा की कमी है। धर्म से हमारे जीवन का रूपांतर हो जाना चाहिए। धार्मिक शिक्षा की अनुपस्थिति में हम जीवन का महत्व ही नहीं समझ पा रहे हैं। आवश्यक है कि धार्मिक शिक्षा को अधिकाधिक फैलाया जाए।

अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद पूज्य राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेन सूरीश्वरजी महाराज की प्रेरणा से धार्मिक शिक्षा के प्रचार को अभियान के रूप में संचालित कर रही है। इसके लिए परिषद् द्वारा वार्षिक ज्ञान शिविरों का आयोजन किया जाता है जिसमें पवित्र वातावरण तथा अध्यात्मिक दिनचर्या के मध्य दस से वारह दिनों तक धार्मिक ज्ञान दिया जाता है। आगामी शिविर संभवतः मई या जून १९९३ में होगी। परिषद शाखाओं का कर्तव्य है कि वह अपने यहां से अधिक से अधिक शिविरार्थी शिविर में भिजवाए। परिषद साथियों से भी आग्रह है कि वे अपने परिवार के वच्चों को धार्मिक ज्ञान प्राप्ति में सवसे आगे करें।

परिषद की शाखाएं स्थान-स्थान पर पाठशालाओं का संचालन कर रही है। पाठशालाओं में पढ़ाए जाने वाले पाठ्यक्रम को अंतिम रूप दिया जा चुका है तथा उसके अनुसार परिषद पाठ्य-पुस्तकें मुद्रित हो चुकी हैं। परिषद पाठ्यक्रम भाग-१ तथा भाग-२ का प्रकाशन हो चुका है इन पुस्तकों का मूल्य पंद्रह रूपए प्रत्येक प्रति है लेकिन जो परिषद पाठशालाएं एक साथ पंद्रह प्रतियों से अधिक क्रय करेंगी, उनको पूज्य राष्ट्रसंत श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी महाराज की आज्ञानुसार आधे मूल्य याने साढ़े सात रूपए में प्रत्येक प्रति दी जा रही है। इन्हीं पाठ्यपुस्तकों के आधार पर श्रीमद् यतीन्द्र जयंत ज्ञानपीठ द्वारा परीक्षाएं ली जाएंगी। २८ फरवरी १९९३ तक ज्ञानपीठ की परीक्षा के लिए आवेदन पत्र भरे जाएंगे। ये आवेदन पत्र परिषद शाखाओं को भेजे जाएंगे एवं सीधे श्री सुरेन्द्र लोढ़ा, राष्ट्रीय महामंत्री, अ.भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद, धानमंडी, मन्दसौर (म.प्र.) से भी प्राप्त हो सकेंगे।

आशा है कि सभी परिषद साथी तथा शाखाएं अधिकाधिक छात्रों को जिनपीठ की परीक्षा में विठाने के लिए अभी से प्रयत्न करेंगे।

जय जिनेन्द्र!

सेवन्तीभाई एम. मोरखिया
अध्यक्ष
अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद

नैत्र परिक्षण शिविर व पोलियो केन्द्र का उद्घाटन

इंदौर - विश्व में जैन धर्म ने अहिंसा, सद्भाव तथा मानव सेवा का जो बीड़ा उठाया है वह पूरी दुनिया में अदभूत मिसाल वन गया है। मानव सेवा के कार्यों में हमें इस बात का ध्यान रखना है कि जैन धर्म जन-जन के काम आए।

उक्त विचार युवा उद्योगपति श्री चैतन्य काश्यप ने अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद द्वारा आयोजित नेत्र परिक्षण शिविर एवं पोलियो केन्द्र के उद्घाटन अवसर पर चिकित्सा कार्य हेतु रू.११,०००/- इंदौर परिषद को देने की घोषणा की। समारोह की अध्यक्षता प्रदेश शासन के राज्यमंत्री श्री थावरचंद गेहलोत ने की।

अपने अध्यक्षीय संवोधन में श्री गेह्लोत ने कहा कि भगवान महावीर द्वारा बताए मार्ग पर जैन समाज द्वारा किए जा रहें कार्यो से विकलांग व्यक्ति में आत्म निर्भरता पैदा होगी।

समारोह के विशेष अतिथि विधायक श्री ललित जैन ने कहा कि भाईचारे, प्रेम और सद्भाव के माध्यम से हमें सेवा कार्य करते रहना चाहिए ताकि अहिंसा परमोधर्म का नारा कमजोर नही पड़े।

प्रारंभ में अ. भा. त्रिस्तुतिक संघ के उपाध्यक्ष श्री चैतन्य काश्यप ने दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया तथा श्री अशोकजी पीपाड़ा ने स्व. कन्हैयालालजी पारेख का जीवन परिचय दिया।

इस अवसर पर डा. राजीव चौधरी, डा. एच. एल. जैन तथा श्रीमती संपतबाई पारेख का स्वागत एवं सम्मान किया गया। श्रीमती कुशल जैन धर्मपत्नी श्री पारसकुमारजी बया ने पोलियो केन्द्र के बोर्ड का अनावरण किया।

श्री अशोककुमार पीपाडा सोहनलालजी पारेख, शांतिलालजी एवं राजेन्द्र पारेख ने अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन पारसकुमारजी बया ने किया। आभार एस. एम. संघवी, (सी. ए.) ने परिषद की ओर से व्यक्त किया।

आज के इस नेत्र शिविर में ८५ व्यक्तियों का नेत्र परिक्षण किया गया तथा दवाई एवं चश्में निःशुल्क वितरीत किये गये। इंदौर शाखा परिषद के अध्यक्ष - श्री यशवंतजी बोड़ाना एवं केन्द्रिय प्रतिनिधि श्री राजेन्द्रकुमार जैन बागवाला एवं श्री सुरेश जैन बागवाला प्रचारमंत्री ने नेत्र परिक्षण शिविर का संपूर्ण कार्य व्यवस्थित रूप से संचालित किया। प्रसिद्ध नेत्र चिकित्सक डा. राजीव चौधरी ने नेत्र परिक्षण में निःशुल्क सेवा दी। - **नीरज सुराना**

---- भेंट मंगवाए ----

मुनिराज श्री जयानंदविजयजी म. द्वारा लिखित/सम्पादित गुजराती भाषा में **१) तपाराधना २) भक्तांवर स्तोत्र** पोस्टेज स्टेम्प हेतु प्रति पुस्तक एक रूपये का डाक टिकट शाश्वत धर्म कार्यालय, जामली नाका, थाने - ४०० ६०१ के पते पर भेजने से भेट भेजी जाएगी। - **सम्पादक**

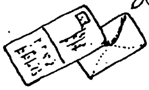

आपका पत्र मिला

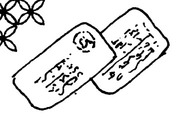

❀ शाश्वत-धर्म प्राप्त हुआ। बहुत ही उपयोगी एवं ज्ञान-वर्धक लगा। आपके मार्गदर्शन व कुशल सम्पादन से पत्रिका दिन दुनी रात चौगुनी तरक्की करे। यही हमारी कामना है।

- राजेन्द्रकुमार भटेवरा - ढ़ोढ़र (म. प्र.)

❀ आपके द्वारा प्रकाशित शाश्वत-धर्म मासिक प्रतिमाह सुंदर एवं अति प्रशंसनीय होता जा रहा है। पत्रिका के अंतर्गत लेख, विचार एवं समस्त जानकारियाँ समय-समय पर मार्गदर्शन प्रदान करती है। पत्रिका निरंतर दिन दौगुनी रात चौगुनी उन्नित करे। ऐसी शुभकामना।

- भावेश जैन - नागदा. जं. (म. प्र.)

❀ शाश्वत-धर्म का नवम्वर अंक मिला। मुनि श्री भुनवसुन्दरविजयजी द्वारा लिखित "अहिंसक दिवाली मनाये लेख अत्यन्त, सुन्दर व रोचक रहा।- **रोहित भण्डारी - ताड़पत्री (आ. प्र.)**

❀ शाश्वत-धर्म आपके पुरूषार्थ सेवा, लगन, चिन्तन, मनन के माध्यम से काफी प्रगति पथ पर लोकप्रिय है। शिक्षाप्रद अध्यात्मिक चेतना, सामजिक एवं परिषद के कार्यों की जानकारी प्राप्त होती है। अतः साधुवाद। **- मानवमुनि - इन्दौर**

❀ शाश्वत धर्म का अक्टूवर अंक मिला। पढ़कर मन व उरमियां नृत्य करने लगी। क्योंकि इसमें मुख्यतः 'अहिंसक दिवाली मनाऐं' व 'ऐसे थे, गुरू गौतम स्वामी' मुख्य लेख हैं, इन लेखों में जन जीवन को समझानेवाले शब्द प्रयुक्त हुए हैं।

- पृथ्वीराज जे. जैन - सांचोर (राजस्थान)

❀ आप द्वारा सम्पादित शाश्वत धर्म पत्रिका अंक देखने को मिला निश्चित रूप से प्रकाशित विषय सामग्री आंत्मज्ञान की ज्योति जगमगाने के लिये अत्युत्तम साधन है।

- मंगलचंद्र सिंघी - कराड़ (महाराष्ट्र)

❀ मुनि श्री जयानंदविजयजी द्वारा लिखित धारावाहिक स्तवन विवेचन एवं मुनि मदनकुमारजी का लेख सराहनीय लगा। **- छगनलाल वी. जैन - कडप्पा (आ. प्र.)**

❀ शाश्वत धर्म माह अक्टूवर अंक पढ़ा वैसे तो इसके सभी अंक शिक्षा प्रद होते हैं किन्तु इस माह के अंक में एक विशेषता है मुखपृष्ठ पर लब्धि दातार श्री गौतमस्वामीजी का आकर्षक फोटो। **- श्रीमति मीनादेवी जैन - कुक्षी (म. प्र.)**

❀ शाश्वत-धर्म का प्रकाशन वहुत सुन्दर ढंग से हो रहा है। सामग्री की विशेषता है सभी सम्प्रदायों की प्रसन्नता, लेख आदि सव वहुत ज्ञान-वर्धक उपयोगी व पठनीय है।

- एम. वादरचंद भंडारी - मद्रास

❀ नव.+दिस. अंक पढ़ा आपकी पत्रिका दिन प्रतिदिन हर स्वाध्याय प्रेमी के दिलों दिमाग में वस रही है। आपकी पत्रिका ज्ञानवर्धक सिद्ध हो। यही शुभ कामना।

- हीराचन्द एस. वोरा - वाकरा

कैलेंडर - १९९३					जन. अक्टू.	मई	अग.	फर. मार्च नव.	जून	सित. दिस.	अप्रैल जुलाई
१	८	१५	२२	२९	शुक्र	शनि	रवि	सोम	मंगल	वुध	गुरू
२	९	१६	२३	३०	शनि	रवि	सोम	मंगल	वुध	गुरू	शुक्र
३	१०	१७	२४	३१	रवि	सोम	मंगल	वुध	गुरू	शुक्र	शनि
४	११	१८	२५		सोम	मंगल	वुध	गुरू	शुक्र	शनि	रवि
५	१२	१९	२६		मंगल	वुध	गुरू	शुक्र	शनि	रवि	सोम
६	१३	२०	२७		वुध	गुरू	शुक्र	शनि	रवि	सोम	मंगल
७	१४	२१	२८		गुरू	शुक्र	शनि	रवि	सोम	मंगल	वुध

संकलन - प्रितेश जैन - इन्दौर (म. प्र.)

शाश्वत धर्म को भेंट

५०१/- पू. साध्वीजी श्री दमयंतीश्रीजी म. सा. आदि ठाणा के पालीतणा में चातुर्मासान्तर्गत आराधक वहनों की ओर से पू. साध्वीश्रीजी के प्रेरणा से।

२०१/- महिदपुर निवासी श्रीमति मधुवेन वॉठिया के ४१ उपवास निमित्त साध्वीजी श्री कल्पलताश्रीजी के सद्उपदेश से।

१५७/- महिदपुर निवासी श्री मोतीलालजी धारीवाल परिवार की ओर से पू. आचार्य श्री जयंतसेनसूरिजी म. सा. के ५७ वे जन्म दिवस पर मुनि श्री पद्मरत्न विजयजी की प्रेरणा से।

१०१/- महिदपुर निवासी श्री माणकलालजी छाजेड़ (शिक्षा मंत्री म. प्र. ईकाई एवं शाखा परिषद अध्यक्ष) की ओर से मुनि श्री पद्मरत्नविजयजी की प्रेरणा से।

१०१/- शा. मांगीलालजी चंदनमलजी जैन (फर्म - राजेन्द्र ग्लास स्टोर्स) पूना की ओर से पौत्र प्राप्ति के उपलक्ष में।

१०१/- थराद निवासी वोहेरा खुवचंदभाई भाणजीभाई परिवार की ओर से सुरत में आचार्य श्री जयंतसेनसूरिजी की निश्रा में सम्पन्न अलका वहन की भागवती दीक्षा निमित्ते।

५१/- थरादनिवासी बोहेरा अगथमल मनजीभाई परिवार की ओर से सुरत में आचार्य श्री जयंतसेनसूरिजी म. सा. की निश्रा में सम्पन्न अलका वहन की भागवती दीक्षा निमित्ते।

साहित्य स्वीकार

जैन दर्शन और कबीर - लेखक - जैन साध्वी डॉ. मंजुश्री; प्रकाशक - आदित्य प्रकाशन, एफ-१४/६५, माडल टाऊन II, दिल्ली-११०००९; पृष्ठ ४५५; मूल्य - चार सौ पचास रूपये।

प्रस्तुत विशालकाय ग्रंथ में पूज्य साध्वीजी द्वारा पी. एच. डी. उपाधि के लिये स्वीकृत शोध प्रबंध का प्रकाशन हुआ है। इस महानिबंध को छह अध्यायों में वर्गीकृत किया है। प्रथम अध्याय में जैन परम्परा की प्राचीनता एवं कबीर युग में जैन धर्म की स्थिति पर विचार किया गया है। द्वितीय अध्याय में जैन दर्शन मान्य तत्व-व्यवस्था पर प्रकाश डाला गया है। तृतीय अध्याय में जैन दर्शन एवं कबीर वाङमय में प्राप्त भक्ति, योग-साधना पद्धति तथा रहस्यवाद का तुलनात्मक विवेचन किया गया है। चतुर्थ एवं पंचम अध्यायों में जैन-दर्शन-सम्मत आचार के दो रूपों श्रावकाचार व श्रमणाचार तथा तत्संबंधी क्रिया काण्डों की चर्चा की गयी है। षष्ठम अध्याय में निष्कर्ष स्वरूप यह प्रस्तुत किया गया है कि कबीर काव्य में जैन दर्शन से कितना साम्य-वैषम्य प्राप्त होता है।

स्वाध्यायी प्रेमियों के लिये संग्रहणीय ग्रंथ है।

जीवनमंत्र (गुजराती) - लेखक - आचार्य श्री जयन्तसेनसूरीश्वरजी म. सा.; प्रकाशक - श्री राजेन्द्रसूरि साहित्य प्रकाशन मन्दिर, रतनपोल, हाथीखाना, अहमदाबाद।

पूज्य श्री द्वारा विविध विषयों पर चिंतनों का प्रकाशन किया गया है, जो जीवन विकास एवं शुद्धि के लिए मार्ग प्रशस्त करते हैं।

प्रवचन मौक्तिक (गुजराती) - लेखक - आचार्य श्री जयंतसेनसूरीश्वरजी म. सा.; प्रकाशक - श्री राजेन्द्रसूरि साहित्य प्रकाशन मंदिर, रतनपोल, हाथीखाना, अहमदाबाद।

पूज्य श्री के प्रवचनों में से ५०० प्रेरक वाक्यों को संकलित कर प्रकाशित किया गया है, जो प्रेरणास्पद है।

तपाराधना (गुजराती) - लेखक - मुनि श्री जयानंदविजयजी म. सा.; प्रकाशक - श्री गुरू रामचंद्र प्रकाशन समिती-भीनमाल, राजस्थान; प्राप्ति स्थान - जे. के. संघवी (सम्पादक) शाश्वत धर्म कार्यालय, जामली नाका, थाने-४००६०१ (महाराष्ट्र)।

जैनशासन में तप की महिमा अपार है। प्रस्तुत प्रकाशन में विविध प्रकार के १६० तपों की संक्षिप्त जानकारी एवं विधि प्रकाशित की गयी है। तपाराधकों के लिये अच्छी मार्गदर्शक है।

भक्तामर स्तोत्र (गुजराती) - लेखक - पुनमचंद नागरलाल दोशी "शशिपुनम"; प्रकाशक - वोरा ववलदास दलछाचंद भाई थरादवाला परिवार; प्राप्तिस्थान - जे. के. संघवी, शाश्वत धर्म कार्यालय, जामली नाका, थाने-४००६०१ (महाराष्ट्र); मूल्य - दस रूपये।

आचार्य श्री मानातुंगाचार्य रचित भक्तामर स्तोत्र की मूल गाथायें एवं प्रत्येक गाथा पर कथायें प्रकाशित की गयी है।

शोक श्रद्धांजली

सुप्रसिद्ध दानवीर श्री पुखराजमल एस. लुक्कड़ का स्वर्गवास

❖ **वम्बई** - बम्बई के उद्योगपति, समाज सेवी, अ. भा. श्वे. स्था. जैन कॉन्फ्रेस, दिल्ली के अध्यक्ष एवं भारत जैन महामंडल के मार्गदर्शक श्री पुखराजमल एस. लुक्कड़ का दि. २३-१२-९२ बुधवार को प्रातः ८.४० पर हृदय विकार से ७१ वर्ष की आयु में अचानक स्वर्गवास हो गया। स्व. लुक्कड़जी ने इसी वर्ष ७१ लाख रूपयों का निजी ट्रस्ट सेवा कार्यों के लिए बनाया था और कान्फ्रेस की "जीवन प्रकाश" योजना के अंतर्गत चिकित्सा और उच्च शिक्षा के लिए लाखों रूपयों का वितरण किया था।

❖ **आहोर** - शा. छगनराजजी जवानमलजी हुंडीया का ५७ वर्ष की उम्र में हृदयगति रूकने से निधन हो गया।

शेयर बाजार में पैसा रोकनेवाले दयालू श्रावक बंधु कृपया एक मिनीट रूकिये व पढिये

गुजरात समाचार में दिनांक ३-११-९२ को प्रकाशित समाचारों के अनुसार शेयर ग्राहकों की प्रिय टाटा आयर्न एण्ड स्टील कंपनी (टीस्को) ने विदेशी मुद्रा कमाने के लिये मत्स्य-उद्योग में प्रवेश किया है एवं २० लाख से ज्यादा हाइब्रीड मछली का पालन प्रारंभ किया है। यह धंधा पूर्ण विकसित होने पर १,००,००,००,००० (सौ करोड) की मछली निर्यात की जायेगी।

पुण्यशाली भाइयों! जरा शांत चित्त से विचार करना कि कहीं आपकी लक्ष्मी तो इस पापी धंधे में रोकी हुयी नहीं है?

यह समाचार पढकर निर्णय लेवें कि मैं मेरी लक्ष्मी (संपत्ति) का एक पैसा भी शेयर के पापी धंधे में न तो रोकूंगा और न ही अन्य को प्रेरणा करूंगा।

प्रेषक - हॅसमुखभाई मफतलाल शाह (डीसा)

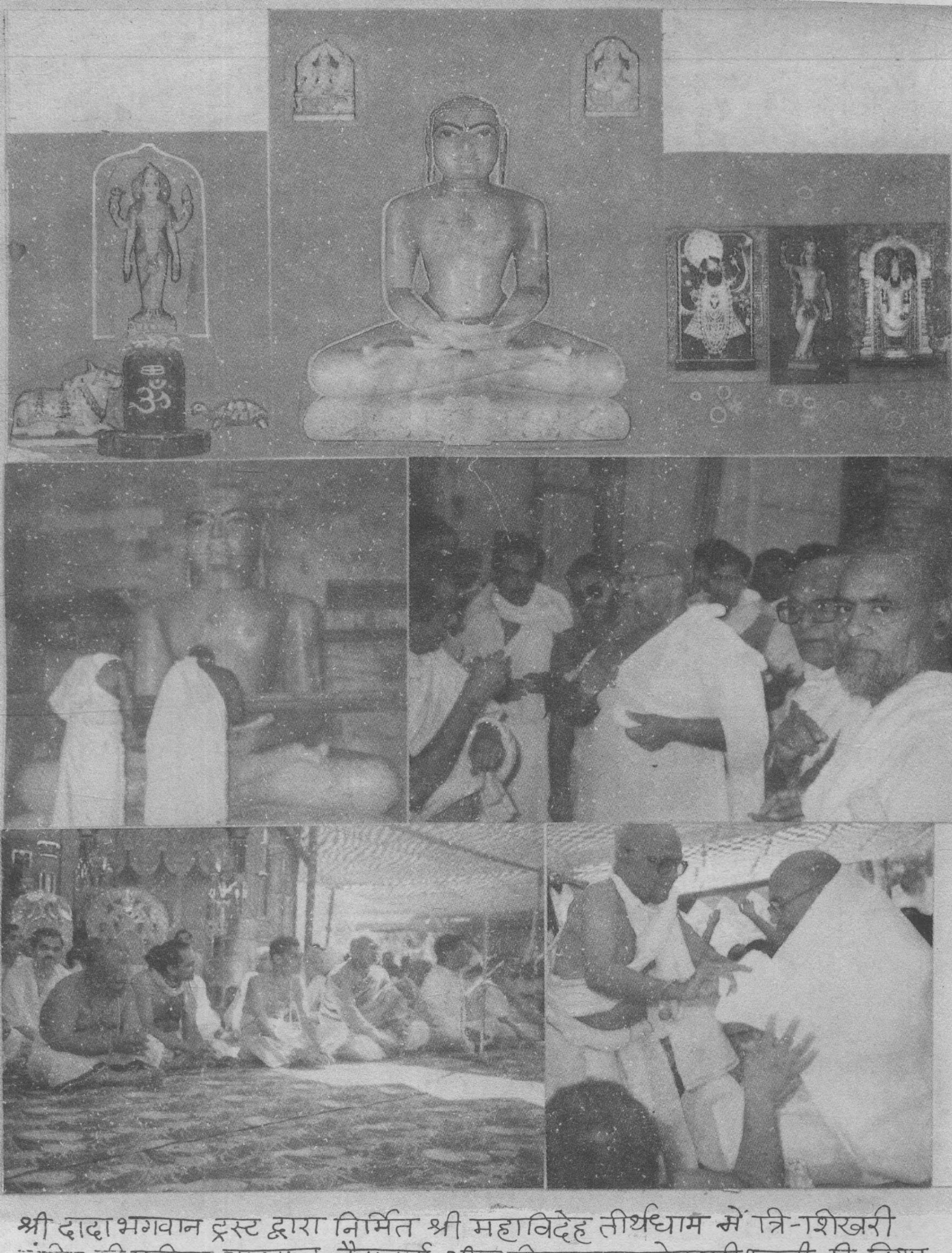

श्री दादा भगवान ट्रस्ट द्वारा निर्मित श्री महाविदेह तीर्थधाम में त्रि-शिखरी मंदिर की प्रतिष्ठा राष्ट्रसन्त जैनाचार्य श्रीमद् विजयजयन्तसेनसूरीश्वरजी की निश्रा में सम्पन्न हुयी। मगसंर सुदि ६ सोमवार दि. ३०-११-९२

त्रिस्तुतिक जैन संघ के इतिहास में पहलीबार सुरत के प्रांगण में मगसरसुदि १० दि. ५।१२।९२ को ९ मुमुक्षु भाई-बहनों ने प.पू. आचार्यभगवंत श्रीमद्‌विजय जयंतसेन-सूरीश्वरजी की निश्रा में भगवती दीक्षा अंगीकार की

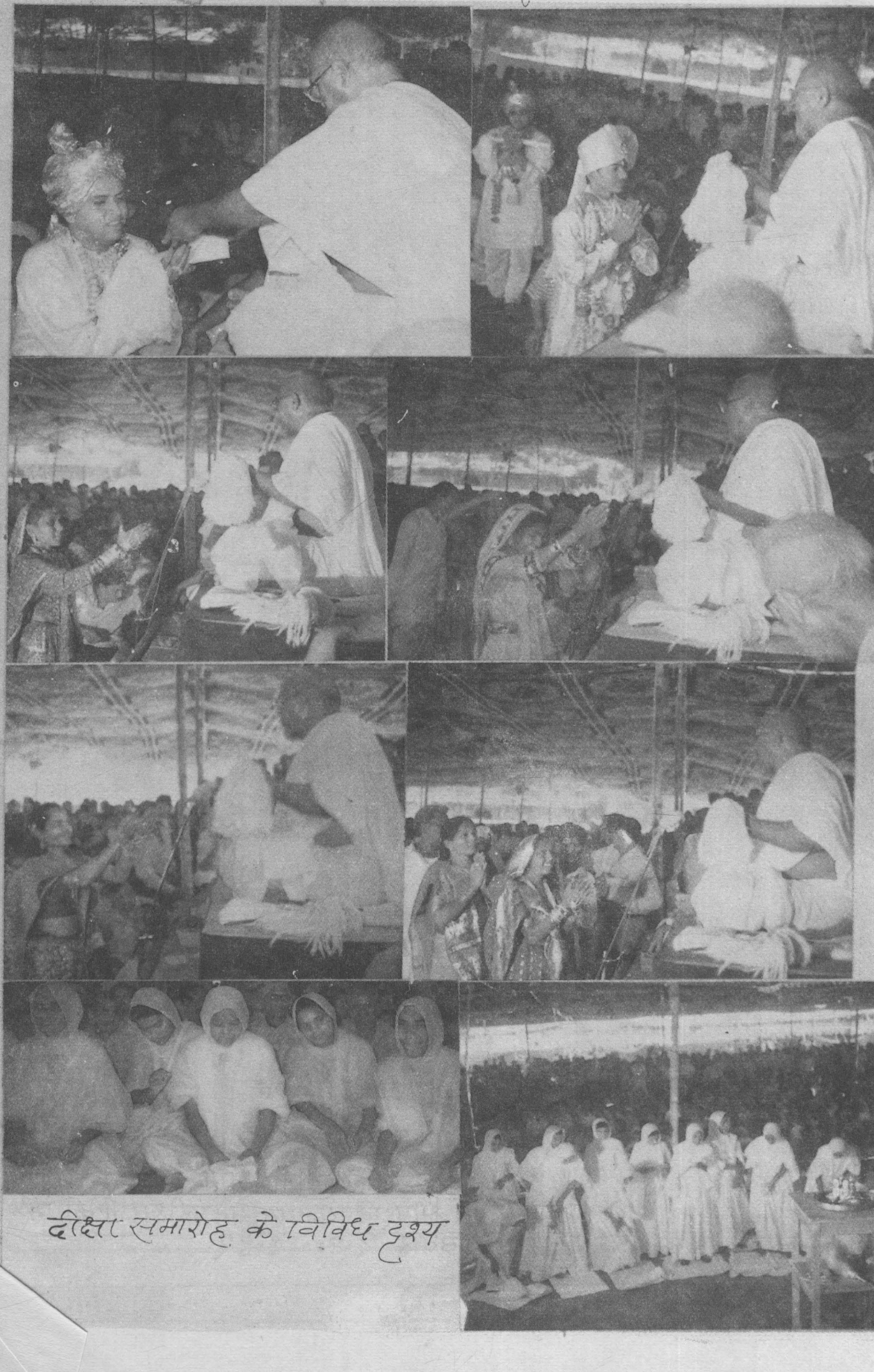

दीक्षा समारोह के विविध दृश्य

'વર્ષના અગિયાર કર્તવ્યો'

– પન્યાસ શ્રી પ્રભાકર વિજયજી ગણિવર

આખાં વર્ષમાં શ્રાવકે પોતાની અનુકૂળતા પ્રમાણે આ અગિયાર સત્કાર્યો આરાધીને મળેલા મૂલ્યવંતા માનવ - જીવનને શુભ કાર્યોથી સભર બનાવી દેવાનું છે.

આ અગિયાર કર્તવ્યોનું સંકલન એટલું સુંદર અને સતકર્મ છે કે જો તેની યથાર્થ રીતે આરાધના કરવામાં આવે તો જગતના આંગણે જિનશાસન જયનાદોથી ગુંજતું બની જાય, કોઇ સંઘોમાં સાધારણના તોટા રહે નહિ.... સર્વત્ર સમ્યગ્જ્ઞાન અને સંસ્કારની સુગંધ પ્રસરતી રહે.

(૧) સંઘપૂજા :

શ્રી જિનેશ્વર પરમાત્માની આજ્ઞાને સદા શિરસાવંદ્ય કરીને ચાલે તે સંઘ ! અને જ્યાં જ્યાં, અને જ્યારે જ્યારે તે તે જિનાજ્ઞાઓની આરાધના કરવાનું પોતાનું સામર્થ્ય ના હોય ત્યાં ત્યાં, અને ત્યારે ત્યારે પોતાના તે અસામર્થ્યનો સ્વીકાર કરવા-પૂર્વક જિનાજ્ઞાનો પક્ષકાર રહે ... તે સંઘ !

આવો સંઘ ચાર પ્રકારનો છે. સાધુ - સાધ્વી - શ્રાવક અને શ્રાવિકા ! આજ સુધીમાં અનંતા તીર્થંકરો થઇ ગયા. તે સહુ જ્યારે જ્યારે શ્રી જિનશાસનની સ્થાપના કરે ત્યારે ત્યારે ચતુર્વિધ સંઘ સ્થપાય જ. કાળક્રમે શાસન વિચ્છિન્ન થાય તો શ્રી સંઘ પણ વિચ્છિન્ન બની જાય. છેલ્લી ચોવિશીના પ્રથમ તિર્થંકર ઋષભદેવ .. અને અંતિમ ચોવીશમાં તિર્થંકર ભગવાન શ્રી મહાવીરદેવ .. તેઓશ્રીના વર્તમાન શાસનના આપણે બધા ઉપાસકો છીએ.

જિનાજ્ઞા - મુજબ જીવનારા ચતુર્વિધ સંઘની વર્ષમાં એક વાર તો અવશ્ય ભક્તિ કરવી જોઇએ. તેમાં ય સંઘ શ્રમણ પ્રધાન કહેવાય છે. તેથી શ્રી સંઘમાં અગ્રસ્થાને વિરાજતા સાધુ-સાધ્વીજી ભગવંતોની ભક્તિ તો ખૂબ ભાવપૂર્વક અવશ્ય કરવી ઘટે.

(૨) સાધર્મિક ભક્તિ :

પર્યુષણ પર્વના પાંચ કર્તવ્યોમાં 'સાધર્મિક ભક્તિ' ને સ્થાન આપ્યા બાદ, પુનઃ તેને વાર્ષિક અગિયાર કર્તવ્યોમાં સ્થાન આપવામાં આવ્યું છે. આ જ વાત 'સાધર્મિક ભક્તિ' નામના કર્તવ્યની મહત્તાને દ્યોતિત કરે છે.

જેને ભગવાન જિનેશ્વર ગમે... તેને તે જિનના ઉપાસકો ગમે જ ! એક ગુજરાતી જો બીજા ગુજરાતીને અમેરિકામાં જુએ તો તેને તેના પ્રત્યે વિશેષ લાગણી જન્મે છે.... જેમ એક માતૃભૂમિના કારણે બે ગુજરાતીઓને પરસ્પર ખેંચાણ રહે છે...તેમ એક ભગવંતના ઉપાસક હોવાના કારણે જૈનને પોતાનો સાધર્મિક વહાલો લાગે તેમાં નવાઇ નથી.

સાધર્મિકની ભક્તિ અનેક પ્રકારે થઇ શકે. ભૂખ્યા સાધર્મિકને ભોજન આપવા દ્વારા ... વસ્ત્રવિહીનને વસ્ત્ર અને નિર્ધનને ધન આપવા દ્વારા... તેમ ધર્મહીન અને પાપોદયથી ઉન્માર્ગગામી બની ગયેલા સાધર્મિકને પુનઃ ધર્મમાર્ગમાં - જિનશાસનના રાહે જોડવા દ્વારા ... ! આ રીતે 'સાધર્મિક ભક્તિ' કરવી તે બીજું કર્તવ્ય છે.

(૩) યાત્રા - ત્રિક :

'યાત્રા' શબ્દ વ્યાપક અર્થમાં અહીં લેવાનો છે. યાત્રા એટલે માત્ર તીર્થભ્રમણ નહિ. પરંતુ તેના ત્રણ વિશિષ્ટ અર્થ છે.

(i) **અષ્ટાન્હકા યાત્રા :** આઠ દિવસ પરમાત્મભક્તિનો ભવ્ય મહોત્સવ કરવો. તેટલી શક્તિ ના હોય તો છેવટે, કોઈના આઠ દિવસ ચાલનારા અષ્ટાન્હિક મહોત્સવમાં એક દિવસ પૂજા ભણાવવાનો લાભ અવશ્ય લેવો જોઈએ.

(ii) **રથયાત્રા :** જેના દ્વારા જૈન ધર્મની જાહોજલાલી થાય, પ્રભુશાસનની પ્રશંસા સર્વત્ર થવા પામે તેવો ભવ્ય વરઘોડો-જળયાત્રાનો વરઘોડો-કાઢવો જોઈએ.

(iii) **તીર્થયાત્રા :** પાલિતાણા, શંખેશ્વર, સમેતશિખરજી અગાસી આદિ પાવન તીર્થોની યાત્રા સ્વદ્રવ્ય ખર્ચીને કરવી. વિધિપૂર્વક અને આરાધનાપૂર્વક આ યાત્રા કરવી ઘટે.

તીર્થયાત્રાના નામે આજે ચાલતી ટૂરો, જો માત્ર હરવા ફરવાનું અને મજા માણવાનું જ સાધન બની જતી હોય તો તેને 'પર્યટન' કહેવાય. 'યાત્રા' ન કહેવાય... યાત્રામાં તો આપણી વાસનાઓની ઉપશાંતિનું અને આત્મહિતકારી આરાધનાનું જ ધ્યેય હોવું ઘટે.

(૪) સ્નાત્ર - મહોત્સવ :

પૂર્વના મહાપુરુષોએ રચેલી સ્નાત્ર પૂજા ભણાવવા દ્વારા ભગવંતની અનુપમ ભક્તિ જેમાં ચોક્કસ વિધિપૂર્વક આરાધવાની હોય છે, તે છે સ્નાત્ર મહોત્સવ.

ભક્તિભર્યા હૃદયે અને ઉછળતાં ઉલ્લાસિત ચિત્તે વર્ષમાં ઓછામાં ઓછો એકવાર 'સ્નાત્ર મહોત્સવ' કરવો જ જોઈએ. ભગવંત જિનની ભક્તિમાં જ્યારે તમારા તમામ મન, વચન અને કાયા તદાકાર બની જાય છે... સંપૂર્ણ એકાકાર બની જાય છે.. ત્યારે તે ક્ષણો પૂરતા તમે નિશ્ચયનયની અપેક્ષાએ પ્રત્યક્ષ ભગવંતસ્વરૂપ બની જાઓ છો.

(૫) દેવદ્રવ્યવૃદ્ધિ :

ભગવાન અરિહંત પ્રભુની સમક્ષ ભક્તિપૂર્વક જે નાણું ધન મૂકવામાં આવે છે તેને 'દેવદ્રવ્ય' કહેવાય છે. દેવદ્રવ્યની સંપત્તિનો સદુપયોગ જિનમંદિરોના જિર્ણોદ્ધાર માટે તથા નવા જિનમંદિરોના નિર્માણ માટે તથા દેવાધિદેવની ભક્તિના કાર્યમાં જ વપરાય. અન્ય સાંસરિક કાર્યો માટે કે સ્કૂલ-કૉલેજોના શિક્ષણ જેવી સામજિક કાર્યો માટે ન જ વપરાય.

આવા દેવદ્રવ્યની વૃદ્ધિ કરવી તે કર્તવ્ય છે. લાખો - કરોડો-રૂપિયાના દેવદ્રવ્યના સદ્વ્યયના પ્રભા ે જ આબૂ-દેલવાડા અને રાણકપૂર જેવા ભવ્ય તીર્થોની રક્ષા - સુરક્ષા કરવા માટે આપણે સમર્થ બની શક્યા છીએ. જો જૈન સંઘોમાં આવી સુંદર અને સચોટ સુવ્યવસ્થા ના હોત તો આપણા તીર્થોની ભવ્યતા કદાચ આટલી મહાન ન જ હોત .... !

(૬) મહાપૂજા :

ભગવાનની ભક્તિ એ તો મુક્તિની દૂતી છે. જિનભક્તિ દ્વારા સમ્યક્ત્વની નિર્મળતા લાધે છે અને અંતે સંયમપ્રાપ્તિ દ્વારા મુક્તિની પ્રાપ્તિ થાય છે.

નવ્વાણું પ્રકારી ... અષ્ટાપદી .. પંચકલ્યાણકની વગેરે અનેક પ્રકારની પૂજા કરવા દ્વારા સાધકે વર્ષમાં એક વાર તો 'મહાપૂજા' નામના આ કર્તવ્યને આરાધવું જ રહ્યું.

(૭) રાત્રિ- જાગરણ :

રાત્રે જાગવા દ્વારા જિનભક્તિના ગુણગીત-ગાન કરવા ... તેનું નામ 'રાત્રિજગો.'

ભાવના જિનમંદિરમાં થાય અને રાત્રિજગો ઘરમાં તપશ્ચર્યાદિ નિમિત્તોએ થઇ શકે. ધર્મની આરાધના

કરીને પ્રગટેલા ઉલ્લાસને વ્યક્ત કરવા માટે આ 'રાત્રિજગો' ઉજવાય છે. આમાં પણ શાસ્ત્રીય મર્યાદાઓ જાળવવી જરૂરી છે. રાત્રે મોડે સુધી એક એક વાગ્યા સુધી 'રાત્રિજગા' ચાલ્યા કરે... યુવાનો અને યુવતીઓ ભક્તિગીતો ગાવાના નામે ડિસ્કો ડાંડીયા હસાહસી-મશ્કરીઓ કર્યા કરે... અને મોડી રાતે ઘરે જવાના બહાને યુવાનોમાં અને યુવતીઓમાં દુર્ઘટનાઓ સંભવિત બને.. તો તો ભક્તિના નામે તે 'ભવાડા' જ કહેવાય. ટૂંકમાં મર્યાદાઓની જાળવણી થાય તો જ એ ભક્તિ કહેવાય. આ અંગે વડીલોએ અતિશય જાગૃતિ રાખવી જોઈએ.

(૮) શ્રુતભક્તિ :

શ્રુત એટલે જિનાગમો અને જૈન શાસ્ત્રગ્રન્થો. આ શ્રુતની - સમ્યગ્જ્ઞાનની ભક્તિ કરવી તે પરમ કર્તવ્ય છે.

લહિયાઓ દ્વારા શાસ્ત્રગ્રંથો લખાવવા... અથવા આધુનિક ઝેરોક્ષ મશીનો દ્વારા પ્રાચીન શાસ્ત્રગ્રંથોનું રક્ષણ કરવું તે ખૂબ આવશ્યક છે. જો સમ્યગ્શ્રુત એકવાર નષ્ટ થઈ જશે તો... શાસન નહિં ટકે... અને જો શાસન નહિં ટકે તો... મોક્ષમાર્ગ ટકવવામાં સફળ નહિં બનાય.

(૯) ઉદ્યાપન :

વિશિષ્ટ તપની પૂર્ણાહુતિ બાદ અંતરના ઉલ્લાસને પ્રકટ કરવા માટે 'ઉદ્યાપન' (ઉજમણું) ઉજવાય છે. ઉજમણામાં ચંદરવો, પૂઠિયો, દીપક, વગેરે જિનમંદિરને ઉપયોગી ચીજો તથા ચરવળો, કટાસણું, ઓઘો, દાંડો, પાતરા વગેરે શ્રાવકોપયોગી અને સાધુજીવનને ઉપયોગી વસ્તુઓ મુકવામાં આવે છે.

ઉજમણાની આ પ્રણાલિકા ખૂબ વૈજ્ઞાનિક છે. આના કારણે દેરાસરમાં ઉપયોગી દ્રવ્યો દેરાસરને મળી જાય. સાધુ-સાધ્વીજીઓને નિર્દોષ વસ્ત્ર-પાત્રાદિ મળી જાય. અને સાધારણ સંઘોને ચંદરવા - પૂઠિયા પ્રાપ્ત થઈ જાય. આવો સુંદર લાભ ઉજમણાથી પ્રાપ્ત થાય.

(૧૦) તીર્થ પ્રભાવના :

જેના દ્વારા આત્મા સંસારરૂપી સાગરથી પાર ઉતરે તેનું નામ તીર્થ. તીર્થના બે મુખ્ય ભેદ છે. સ્થાવર અને જંગમ.

સ્થાવર તીર્થ એટલે જે સદા સ્થિર રહે છે તેવા શત્રુંજય-ગિરનાર તથા દેરાસર-ઉપાશ્રયો વગેરે અને જંગમ તીર્થ એટલે જે હાલતાં-ચાલતાં છે તેવા સાધુ-સાધ્વીજી. આ બન્ને પ્રકારના તીર્થોના દર્શન વંદન કરવા અને તેમની પ્રભાવના ... તેમનો જયજયકાર થાય તેવું આયોજન કરવું તેનું નામ તીર્થ-પ્રભાવના.

(૧૧) આલોચના :

જીવનમાં જાણે-અજાણે આચરાઈ ગયેલાં પાપોનું ગુરુદેવની સમક્ષ અંતરના પશ્ચાતાપ પૂર્વક પ્રાયશ્ચિત કરવું તેનું નામ આલોચના.

પાપોના કાદવથી મલિન બનેલા આત્માને ધોવા માટે ગંગાનદીનું નીર કામ નહિ લાગે એ માટે તો અંતરના પશ્ચાતાપની પાવન ગંગામાં સ્નાન કરવું પડશે. સદ્ગુરુની પાસે કશું જ છુપાવ્યા વગર, એક નાનકડો બાળક સ્નાન કરતાં જેમ પોતાની માતા આગળ 'ખુલ્લો' બની જાય છે તેમ ગુરુ સમક્ષ આત્માને જેવો હોય તેવો - ખુલ્લો - મૂકી દેવો અને પાપોનો સ્પષ્ટ એકરાર કરવો... તેમાં ન કોઈ તકરાર .. . ન કોઈ ઇન્કાર... તેનું નામ 'આલોચના' .... ચાલો................ જીવનને નિર્મળ કરનારા આ અગિયાર કર્તવ્યોની આરાધનામાં નિમગ્ન બનીએ.

સ્વાસ્થ્ય અને આધ્યાત્મિક દ્રષ્ટિએ રાત્રીભોજન

-રોહિત શાહ

જૈન ધર્મમાં રાત્રિભોજનનો સર્વથા નિષેધ થયેલો જ છે. જૈન સાધુ સાધ્વીજીઓ તો ચોવિહાર વ્રતથી પ્રતિબદ્ધ હોવાથી જીવનભર રાત્રિભોજન કરતા નથી, પરંતુ મોટા ભાગના જૈનો પણ ચોવિહાર વ્રતનું ચુસ્ત પાલન કરીને રાત્રિભોજન કરતાં નથી.

રાત્રિભોજન શા માટે વર્જ્ય ગણાયું છે ? એની પાછળ માત્ર રૂઢિગત ધાર્મિક ખ્યાલ છે કે એમાં કોઈ વૈજ્ઞાનિક ભૂમિકા છે, એવો પ્રશ્ન ઘણા લોકો પૂછે છે. જૈન ધર્મ સંપૂર્ણપણે વિજ્ઞાન અને આરોગ્યના પાયા ઉપર રચાયેલો છે એમ કહેવામાં કશી જ અતિશયોક્તિ નથી.

સૂર્યનો ઉદય તવાથી કમળનું પુષ્પ ખીલે છે. સુર્યનો અસ્ત થતાં તે બીડાઈ જાય છે. હૃદય તેમજ નાભિને પણ કમળ સાથે સરખાવ્યાં છે. સૂર્યની ગેરહાજરીમાં નાભિકમળ સંકોચાઈ જાય છે. આયુર્વેદ આ કારણે જ રાત્રે ભોજન નહિ કરવાની સલાહ આપે છે. કારણ કે નાભિકમળ સંકોચાઈ જવાથી પાચનશક્તિ મંદ પડી જાય છે. કરોડો ટ્યુબલાઈટો અને કરાડો બલ્બોથી પણ સૂર્ય પ્રકાશ પેદા કરી શકાતો નથી. તેમ પાચનની ગમે તેટલી દવાઓ ખાઈએ. પણ રાત્રિભોજનનો ત્યાગ ન કરીએ તો અપચો, કબજિયાત, ગેસ વગેરે રોગો થાય છે. સૂર્યોદય પહેલાં અને સૂર્યાસ્ત પછી કદીય ભોજન લેવું હિતાવહ નથી.

રાત્રે ભોજન લેવાથી આહારમાં અનેક પ્રકારનાં સૂક્ષ્મ જંતુઓ પેટમાં જવાનું જોખમ છે. નરી આંખે જોઈ ન શકાય તેવા અસંખ્ય જીવનજંતુઓ રાત્રે ઉત્પન્ન થાય છે. (જેવી રીતે મોસમનો પહેલો જ વરસાદ પડતાં અસંખ્ય જીવો ચોતરફ ઉભરાય છે. તેવી રીતે રાત્રે પણ એવા અસંખ્ય જીવો ઉત્પન્ન થાય છે.) આવા જીવો પેટમાં જવાથી જાતજાતના રોગો થાય છે. ભોજનમાં જૂ આવે તો જલોધરનો વ્યાધિ થાય છે. કીડી આવતાં બુદ્ધિ ભ્રષ્ટ થાય છે. માખી આવતાં ઊલટી થાય છે. ગરોળીની લાળ કે તેના અંગેનો કોઈ ટુકડો આવી જાય તો મૃત્યુ થાય છે. આ ઉપરાંત કેન્સર કે લકવા જેવા મહારોગ ઉત્પન્ન કરતાં અનેક જંતુઓ આહારમાં આવી શકે છે. જો વાળ ભોજનમાં આવી જાય તો ખાંસી અને સ્વરભંગ થાય છે. રાત્રે ગમે તેટલી કાળજી રાખીએ તોય આવા જોખમનો ભોગ બની જવાની સંભાવના રહે છે. આપણા ઘણા ખરા રોગ માત્ર રાત્રિભોજનના કારણે જ થયેલા હોય છે.

દિવસ પુરૂષાર્થ માટે છે અને રાત આરામ માટે છે. અને ભોજન લેવાથી પેટ ભારે લાગે છે અને આરામ મળતો નથી. આથી બીજા દિવસે સ્ફૂર્તિ રહેતી નથી.

અબૂધ અને અજ્ઞાની પશુઓ પણ મોડી રાત્રે આહાર બંધ કરે છે. કુદરત ઈચ્છે છે કે રાત્રે કોઈ જીવ આહાર ન લે.

આધ્યાત્મદ્રષ્ટિએ જોઈએ તો જ્ઞાનીઓ એમ કહે છે કે રાત્રિભોજન, પરસ્રીગમન

વગેરે બાબતો માનવીને નરકની ગતિ કરાવે છે. ઘુવડ, ગીધ, બિલાડી, ભુંડ, ધોકે સાપનો અવતાર મળે છે. જો કે આ વાત શ્રદ્ધાથી જ સ્વીકારવાની રહે છે.

રાત્રે ભોજન કરનારને બ્રહ્મચર્યનું પાલન કરવામાં પણ અડચણ ઊભી થશે. સૂર્યાસ્ત પહેલાં ભોજન લેવાથી મન શાંત અને સ્વસ્થ બને છે. આથી વિકારો ઉત્પન્ન થતા નથી. આ દ્રષ્ટિએ બ્રહ્મચર્યના વ્રતધારીઓ માટે પણ રાત્રિભોજનનો ત્યાગ હિતકારક છે.

જૈન ધર્મ પ્રમાણે ચોવિહાર, તિવિહાર, દુવિહાર વગેરે પચકખાણો લઈ શકાય છે. ચોવિહારનું પચકખાણ લેનાર સૂર્યાસ્ત પછી કોઈપણ પ્રકારનો આહાર કે પાણી પણ લઈ ન શકે. તિવિહારનું પચકખાણ લેનાર વ્યક્તિ પાણી પી શકે છે, પણ કોઈ ખાદ્ય પદાર્થ લઈ શકતી નથી. દુવિહારનું પચકખાણ લેનાર દવા, મુખવાસ અને પાણી લઈ શકે છે. (બીમાર વ્યક્તિ દુવિહારનું પચકખાણ લે છે.)

પચકખાણ એટલે પ્રતિજ્ઞા ટેક. તેનાથી વ્રતની સાંગતા દ્રઢ બને છે.

રાત્રિભોજન પ્રાણીમાત્ર માટે હાનિકારક છે. એક ઈટાલી કવિતામાં ખૂબ માર્મિક રીતે તંદુરસ્તીનું સૂત્ર ગ્રંથી લેવામાં આવ્યું છે.

પાંચ વાગે ઉઠવું, નવ વાગ્યે જમવું,
પાંચ વાગે વાળુ, નવ વાગ્યે ઉંઘવું.

આપણે ત્યાં પણ સુભાષિત છે કે:

બળ, બુદ્ધિ અને ધન વધે. સુખમાં રહે શરીર !

રાત્રે પહેલાં સુવા માટે સૂર્યાસ્ત પહેલાં ભોજન કરી લેવું અને તે પછી આહાર-પાણીનો ત્યાગ કરવો જરૂરી છે.

મોટા ભાગના ડૉક્ટર પણ દર્દીને રાત્રે નહિ જમવાની સલાહ આપે છે. આપણે દર્દી બનીને ડૉક્ટરની

સૂચના પાળવી પડે તે પહેલાં જ ચેતી જઈએ. અને તંદુરસ્ત જીવનનું વરદાન પામવા રાત્રિભોજનનો ત્યાગ કરીએ. એમાં કોઈ રૂઢ કે જડ ખ્યાલ નથી, પરંતુ પૂર્ણત: વૈજ્ઞાનિક, આયુર્વેદીક, અને ધાર્મિક કલ્યાણનો સંદર્ભ છે.

આપણે રાત્રિભોજનનો ત્યાગ કરીશું તો આપણા જીવનમાં શરીરમાં સંયમ પાંગરશે અને સંયમમાં અજવાળાથી શ્રેય અને પ્રેમ પામીશું.

छपते - छपते

प. पू. आचार्य श्री मधुकरजी का सुरत से विहार

अभी-अभी प्राप्त समाचारों के अनुसार राष्ट्रसंत, प. पू. आचार्य श्री जयन्तसेनसूरीश्वरजी 'मधुकर' आदि ठाणा ने मुनिमंडलसह सुरत से शनिवार दि. १६-१-९३ को दोपहर में थाना (वम्वई) के लिए विहार कर दिया है। पूज्य श्री के २९ जनवरी तक थाना के मानपाड़ा में पधारना संभवित है। वहाँ प्रतिष्ठोत्सव निमित्त ३० जनवरी से अष्टान्हिका महोत्सव प्रारंभ होगा।

જાતે જ વનસ્પતિયુક્ત સૌંદર્ય-પ્રસાધનો બનાવો

પોતાની જાતે જ વનસ્પતિયુક્ત સૌંદર્ય-પ્રસાધનો બનાવવાનું કામ રસોઈ કરવા જેવું સરળ કામ છે. બજારમાં મળતી બનાવટો અત્યંત મોંઘી હોય છે. તે હંમેશા એટલી બધી અસરકારક પણ હોતી નથી અને ઘણીવાર તો ખર્ચેલા પૈસાનું વળતર પણ તેના ઉપયોગથી મળતું નથી.

જો કે પોતાની મેળે બનાવેલી શૃંગાર સજાવટની વસ્તુઓ કાયમ માટે સંઘરી રાખવાની નથી. પરંતુ નાના જથ્થાઓમાં બનાવીને તે તાજી હોય ત્યાં સુધી છુટથી વાપરી શકાય. રેફ્રીજરેટરમાં મુકવાથી પ્રમાણમાં લાંબા ગાળા સુધી તે સંઘરી શકાય. તમે ધારો તો તેમાં પ્રિઝર્વેટિવ્ઝ પણ ઉમેરી શકો. પણ મને લાગે છે કે કોઈ પણ જાતના પ્રિઝર્વેટિવ કે રસાયણો નહિ વાપરવા તે જ વધુ હિતાવહ છે. કારણ કે તેનાથી ચામડીને નુકશાન થવાનો સંભવ છે.

ઘરમાં બનાવેલાં વનસ્પતિયુક્ત પ્રસાધનોના લાભો : તે ઠંડા, દરદ મટાડનાર તથા પીટાશામક હોય છે. તે ત્વચાના સાધારણ પી.એચ. સ્તરને બગાડતાં નથી. ઉલટું, કથળેલા પી.એચ સ્તરને સંતુલિત રાખે છે. તેનાથી રાહત થાય છે અને ચામડીના રક્તાભિસરણમાં સુધારો થાય છે.

આ બધાને પરિણામે ત્વચાનું પડ ચળકતું સુંદર સુંવાળું અને દોષરહિત બને છે. તે તમને પહેલાં કરતાં વધારે ગોરા બનાવે છે અને તે પણ સસ્તી કિંમતમાં અને કશીય આડઅસરો પેદા કર્યા વિના...

લોશનો-સૂકી ત્વચા માટે : એક પાકા કેળાને પાણીથી ધોઈ નાખો. ના, છાલ કાઢીને ફેંકી દેશો, નહિં. કેળું ખાઈ જાઓ અને છાલના નાના ટુકડા કરી નાખો. તેમાં અડધો કપ દુધ ઉમેરી એકરસ થાય ત્યાં સુધી મિક્સરમાં વલોવો પછી એ મિશ્રણને લાંબી પાતળી બાટલીમાં ભરી છુટથી વાપરો. ત્વચા પરથી મેલ દુર થવા માંડશેં બચેલું મિશ્રણ ફ્રીજમાં રાખી મુકો.

તૈલી ત્વચા માટે : બપોરે કે રાત્રે જમ્યા પછી વધેલી છાશ ફેંકી દેશો નહિં. તેને આઠેક કલાક સુધી અથવા તો છાશમાંથી પાણી છુંટુ પડી જાય ત્યાં સુધી રાખી મુકો. પાણી ધીરેથી નિતારીને એક બાટલીમાં ભરી દો. ઉપર પ્રમાણે તે વાપરો. આ એક ખુબ જ અસરકારક તેલરહિત મિશ્રણ (ક્લીન્સર) છે જેનાથી બધો મેલ કાઢી શકાય છે.

સાધારણ ત્વચા માટે : ૧૦-૧૨ બીજ વગરની દ્રાક્ષના દાણા લઈ તેમાં એક કપ દુધ ભેળવો. મિક્સમાં તેને વલોવીને પછી વાપરો. બચેલું મિશ્રણ બાટલીમાં ભરી રાખો.

એસ્ટ્રીજન્ટસ તૈલી ત્વચા માટે : લીમડો, તુલસી તથા સુવાનાં થોડા-થોડા પાન લઈ એક ગ્લાસ પાણીમાં એક રાત ભીંજવી રાખો. બીજે દિવસે મિક્સરમાં તેનું મિશ્રણ વાટી નાખો. પછી તે પાણીને ગાળી લો અને રૂના પુમડા વડે ચહેરા ઉપર છુટથી લગાડો. આ એક ઉત્તમ પ્રકારનું

નૈસર્ગિક એસ્ટ્રીજન્ટ છે. તેનાથી ચામડી ઉપરના છિદ્રો સાફ થાય છે. અને ચહેરા પરથી વધારાનું તેલ પણ નીકળી જાય છે. બચેલું મિશ્રણ ફ્રીજમાં સંઘરી રાખો.

ખીલયુક્ત ત્વચા : એક કપ પાણીમાં અડધી ચમચી અજમો નાખી બે કલાક સુધી ભીંજવી રાખો પછી એમાં થોડા કપુરના ટુકડા ઉમેરો. મિશ્રણને વલોવો અને તેને ગાળી નાખો. પછી એકાદ ચમચી યું ડી કોલોન ઉમેરો. તમને ગમે તો એક ચમચી વોડકા પણ ઉમેરી શકો. કેમકે વોડકા ઉત્તમ પ્રકારનું એસ્ટ્રીજન્ટ છે.

સાધારણ ત્વચા : કાકડી, ટામેટાં, લીંબુ, અને કંલિગર-આ ચારેયનો રસ એક-એક ચમચી લઈ ભેળવી દો. રૂ વડે ચહેરા ઉપર ચોપડો. આ પણ એક સરસ મજાનું એસ્ટ્રેજન્ટ છે. તેનાથી પહોળાં અને ઉઘાડાં છિદ્રો સંકોચાઈ જાય છે.

વરસાદનું પાણી પણ એક કુદરતી સંકોચન દ્રવ્ય છે. ચોમાસામાં પાણીને બદલે તેનો ઉપયોગ તમે કરી શકો છો.

સુકી તથા સાધારણ ત્વચા માટે પોષક (નરશિંગ) ક્રીમ : તાજુ માખણ, બદામનું તેલ, સોયાબીન તેલ, જરદાળુનું તેલ તથા કોબીનો રસ આ બધું એક-એક ચમચી લઈ મિશ્રણ તૈયાર કરો તેમાં સફેદ લીલીનાં ફુલને છુંદીને ભેળવો. બરાબર હલાવો અને પછી વાપરો.

ત્વચાને ભીની રાખનાર દ્રવ્ય (મોઈશ્ચરાઈઝર): ગમે તે પ્રકારની ચામડી ભીની રાખવા માટે મધ કુદરતી ઉપચાર છે. ધીમે તાપે એક ચમચી મધને અડધી મિનિટ સુધી ગરમ કરો. પછી તાપ પરથી હઠાવીને મધ ચહેરા ઉપર લગાડો. ૨૦ મિનિટ સુધી તેને સુકાવા દો. ખુબ પાણીથી ધોઈ નાખો આનાથી તમારી ત્વચા મુલાયમ તથા સ્થિતિ સ્થાપક બનશે.

એક પીચ, ચાર દ્રાક્ષના દાણા તથા કોબીનાં થોડાં પાન લઈ એક પેસ્ટ તૈયાર કરો. ચહેરા ઉપર લગાડી ૧૫ મિનિટ સુધી રાખી મુકો. પુષ્કળ પાણીથી ધોઈ નાખો.વનસ્પતિયુક્ત શેમ્પુ, એક ચમચો અરીઠાનો પાઉડર તથા થોડાંક શિકાકાઈના પાન લો. ૧ ગ્લાસ પાણીમાં તેમને એક રાત ભીંજવી રાખો. સવારે તેને ઉકાળીને ગાળી નાખો. આ ઉકાળેલા દ્રાવણને તમારા મનગમતા સાબુની ઝીણી ટુકડીઓ સાથે ભેળવો. ભેળવતી વખતે વધુ પડતું ફીણ ન થાય તેની કાળજી રાખો. આ એક સુંદર મજાનું ઔષધયુક્ત શેમ્પુ છે જે તમારા વાળને ચકચકિત બનાવે છે. આ શેમ્પુમાં તમે લીંબુ પણ ભેળવી શકો છો.

વાળ સ્વચ્છ કરવા માટેનું પ્રવાહી : હવેથી ચા પીધા પછી તેની પતીઓ ફેંકી ન દેશો. નળનાં વહેતા પાણીથી તેને સાફ ધોઈ નાખો. પછી એક ગ્લાસ પાણીમાં તેને ભેળવીને એક રાત રહેવા દો. બીજે દિવસે સવારે તે પાણી ગાળી લો અને તેમાં એક ચમચી લીંબુનો રસ ભેળવો. શેમ્પુથી વાળ ધોયા બાદ આ પાણી વડે વાળને સ્વચ્છ કરો. તેનાથી વાળ સુંવાળા ચમકતા અને ઘેરા રંગના થાય છે. અને સહેલાઈથી ઓળી શકાય છે. તેનાથી વાળને નવો ઉઠાવ પણ મળે છે.

કૈલાસસાગર સૂરિ જ્ઞાન મંદિર ગાંધીનગર

●'બાડી એન્ડ બ્યુટી કેર'ના સૌજન્યથી

ज्ञान-सूक्तियाँ

संकलनकर्त्री - पू. साध्वीजीश्री प्रियदर्शनाश्रीजी
पू. साध्वीजीश्री सुदर्शनाश्रीजी

आगमहीणो समणो, णेवप्पाणं परं वियाणादि ।

– प्रवचनसार ३/३२

शास्त्रज्ञान से शून्य श्रमण न अपने को जान पाता है, न पर को ।

आगमचक्खू साहू, इंदियचक्खूणि सव्वभूदाणि ।

– प्रवचनसार ३/३४

अन्य सब प्राणी इन्द्रियों की आँखवाले हैं, किंतु साधक आगम की आँख वाला है ।

अप्पाणं विणु णाणं, णाणं विणु अप्पगो न संदेहो ।

– नियमसार १७१

यह निश्चित सिद्धान्त है कि आत्मा के बिना ज्ञान नहीं, और ज्ञान के बिना आत्मा नहीं !

णाणं णरस्स सारो ।

– दर्शन पाहुड ३१

ज्ञान मनुष्य जीवन का सार है ।

न ज्ञान तुल्य किल कल्पवृक्षः । न ज्ञान तुल्या किल कामधेनुः ॥
न ज्ञान तुल्यः किल काम कुम्भो । ज्ञानेन चिन्तामणि रप्य तुल्यः ॥

विद्या विनयं ददाति ।

विद्या विनय गुण को प्रदान करती है ।

सा विद्या या विमुक्तये ।

विद्या वही है, जो मुक्ति की ओर ले जाए ।

ज्ञानस्य फलं विरति ।

– अ. राजेन्द्र कोष भाग ६, पृ. ३३७

ज्ञान का फल विरक्ति है ।

नाण रहिओ न जीवो ।

– अ. राजेन्द्र कोष भाग ४ पृ. २१२४

जीव ज्ञान रहित नहीं होता ।

आगमज्ञो हि सर्वज्ञः ।

आगमज्ञाता ही सर्वज्ञ है ।

चक्षुः सर्वत्रगं शास्त्रम् ।

– अ. राजेन्द्र कोष भाग ४ पृ. २७२०

ज्ञानरूपी चक्षु की गति सर्वत्र है ।

पढमं नाणं तओ दया ।

– दशवैकालिक – ४/१०

पहले ज्ञान होना चाहिए और फिर तदनुसार दया-अर्थात् आचरण ।

डाक पंजीयन क्रमांक MH/THN १६१ पहले से डाक चुकाये बिना भेजने की
अनुमति प्राप्त लायसेन्स नं. ३५

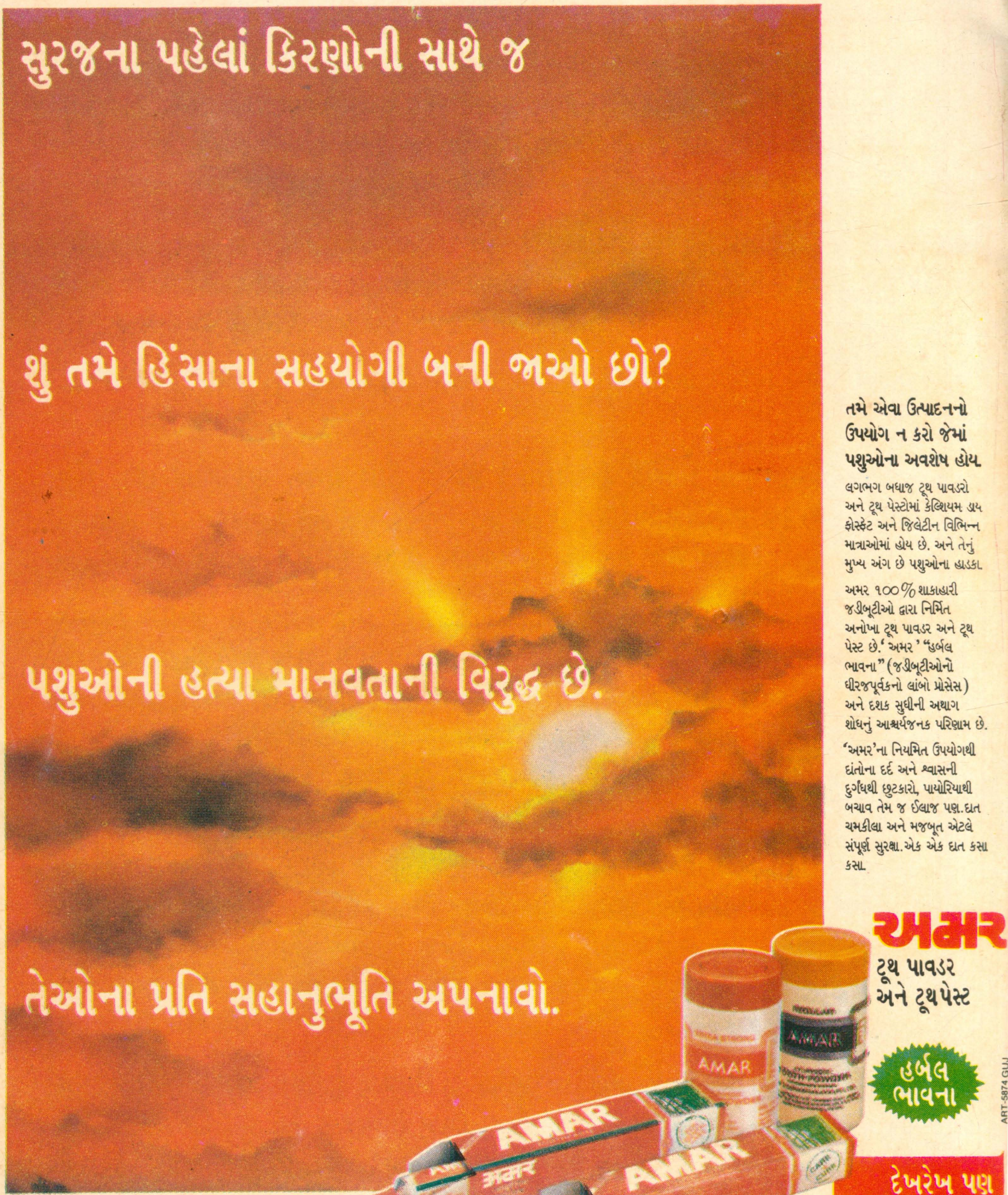

જનતાના હિતમાં પ્રચારિત

संपादक - **जे.के.संघवी** अ.भा. श्री. राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के लिये
डपूजी आर्ट प्रिन्टर्स- थाने में मुद्रित।